व्रत एवं पर्व संहिता

फ्यूचर पॉइंट द्वारा प्रकाशित

संपादक : डॉ. अरुण बंसल, लेखिका : रेखा कल्पदेव

व्रत एवं पर्व संहिता

फ्यूचर पॉइंट द्वारा प्रकाशित

संपादक : डॉ. अरुण बंसल, लेखिका : रेखा कल्पदेव

प्रथम संस्करण : नवंबर 2019

मूल्य : 50/- रूपये मात्र

प्रकाशक :

अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ (पंजी.)
मुख्य कार्यालय : X-35, ओखला फेस - 2, नयी दिल्ली - 110020
Phone (फोन) : 011-40541020
इमेल : mail@aifas.com, वेब : www.aifas.com

मुद्रक :

फ्यूचर पॉइंट प्रा. लि.
मुख्य कार्यालय : X-35, ओखला फेस - 2, नयी दिल्ली - 110020
शाखा कार्यालय : A-3, रिंग रोड साउथ एक्स. पार्ट-1, नयी दिल्ली - 110049
शाखा कार्यालय : B-237, सेक्टर 26, नोयडा - 201301
Phone (फोन) : 011-40541000, 1020
इमेल : mail@futurepointindia.com, वेब : www.futurepointindia.com

विषय सूची

❑❑❑

व्रत एवं पर्व – 2020

जनवरी		
01	बुध	नववर्ष प्रारंभ
10	शुक्र	माघ स्नान प्रारंभ
13	सोम	लोहिड़ी
13	सोम	संकष्ट चतुर्थी
22	बुध	मेरु त्रयोदशी
24	शुक्र	मौनी अमावस्या
26	रवि	गणतंत्र दिवस
28	मंगल	गौरी तीज (माघ)
28	मंगल	वरद/तिल चतुर्थी
29	बुध	बसंत पंचमी
फरवरी		
02	रवि	भीष्माष्टमी
06	गुरु	भीष्म द्वादशी
09	रवि	माघ स्नान समाप्त
21	शुक्र	महाशिवरात्रि
25	मंगल	फुलेरा दूज
29	शनि	याज्ञवल्क्य जयंती
मार्च		
03	मंगल	होलाष्टक प्रारंभ
09	सोम	होलिका दहन
09	सोम	होलाष्टक समाप्त
10	मंगल	होली(धुलैंडी)
16	सोम	शीतला अष्टमी पूजन
25	बुध	नव संवत प्रारंभ
25	बुध	नवरात्र प्रारंभ
25	बुध	गुडी पड़वा (सिंधी)
27	शुक्र	गणगौर तीज (चैत्र)
30	सोम	स्कंद षष्ठी व्रत
अप्रैल		
01	बुध	बसन्त दुर्गाष्टमी
02	गुरु	रामनवमी
02	गुरु	नवरात्र समाप्त
06	सोम	अनंत त्रयोदशी
13	सोम	वैशाखी
23	गुरु	संवत समाप्त
26	रवि	अक्षय तृतीया
मई		
25	सोम	रंभा तृतीया व्रत
जून		
01	सोम	गंगा दशहरा
23	मंगल	रथ यात्रा (पुरी)
26	शुक्र	कुमार षष्ठी व्रत
29	सोम	भड्डली नवमी
जुलाई		
04	शनि	चतुर्मास्य प्रारम्भ
05	रवि	गुरु पूर्णिमा
23	गुरु	हरियाली तीज
25	शनि	नाग पंचमी
अगस्त		
03	सोम	रक्षा बंधन
07	शुक्र	संकष्ट चतुर्थी (भाद्र)
12	बुध	जन्माष्टमी (स्मार्त)
21	शुक्र	हरितालिका तीज (भाद्र)
22	शनि	गणपति स्थापना
23	रवि	ऋषि (बड़ी) पंचमी
25	मंगल	राधा अष्टमी
सितंबर		
01	मंगल	अनंत चतुर्दशी व्रत
01	मंगल	महालय श्राद्ध
01	मंगल	श्राद्ध प्रारंभ
17	गुरु	विश्वकर्मा दिवस
17	गुरु	सर्वपितृ श्राद्ध
17	गुरु	महालय (श्राद्ध) समाप्त
अक्तूबर		
17	शनि	शरद नवरात्र प्रारंभ
22	गुरु	सरस्वती पूजन
24	शनि	शरद दुर्गाष्टमी
25	रवि	दशहरा
25	रवि	शरद नवरात्र समाप्त
30	शुक्र	शरद पूर्णिमा
नम्बवर		
04	बुध	करवा चौथ
08	रवि	अहोई अष्टमी
13	शुक्र	धनतेरस
13	शुक्र	चतुर्मास्य समाप्त
13	शुक्र	यम दीपक
14	शनि	नरक चतुर्दशी
14	शनि	दीपावली
15	रवि	गोवर्धनपूजा
16	सोम	भैयादूज
16	सोम	कार्तिकादि सं. प्रा.
20	शुक्र	छठ पूजा
22	रवि	गोपाष्टमी
26	गुरु	तुलसी विवाह
28	शनि	बैकुंठ चतुर्दशी
30	सोम	कार्तिक पूर्णिमा
दिसम्बर		
07	सोम	भैरवाष्टमी
19	शनि	स्कंद षष्ठी
25	शुक्र	मौनी, एकादशी
25	शुक्र	गीता जयंती
29	मंगल	अन्नपूर्णा जयंती

मासिक शिवरात्रि		
माघ	गुरु	23 जनवरी
फाल्गुन	शुक्र	21 फरवरी
चैत्र	रवि	22 मार्च
वैशाख	मंगल	21 अप्रैल
ज्येष्ठ	बुध	20 मई
आषाढ़	शुक्र	19 जून
श्रावण	रवि	19 जुलाई
भाद्रपद	सोम	17 अगस्त
आश्विन	मंगल	15 सितम्बर
कार्तिक	गुरु	15 अक्तूबर
कार्तिक	शुक्र	13 नवम्बर
मार्गशीर्ष	रवि	13 दिसम्बर

अमावस्या		
माघ	शुक्र	24 जनवरी
फाल्गुन	रवि	23 फरवरी
चैत्र	मंगल	24 मार्च
वैशाख	बुध	22 अप्रैल
ज्येष्ठ	शुक्र	22 मई
आषाढ़	रवि	21 जून
श्रावण	सोम	20 जुलाई
भाद्रपद	बुध	19 अगस्त
आश्विन	गुरु	17 सितम्बर
कार्तिक	शुक्र	16 अक्तूबर
कार्तिक	रवि	15 नवम्बर
मार्गशीर्ष	सोम	14 दिसम्बर

प्रदोष व्रत (शुक्ल पक्ष)		
पौष	बुध	08 जनवरी
माघ	शुक्र	07 फरवरी
फाल्गुन	शनि	07 मार्च
चैत्र	रवि	05 अप्रैल
वैशाख	मंगल	05 मई
ज्येष्ठ	बुध	03 जून
आषाढ़	गुरु	02 जुलाई
श्रावण	शनि	01 अगस्त
भाद्रपद	रवि	30 अगस्त
आश्विन	मंगल	29 सितम्बर
आश्विन	बुध	28 अक्तूबर
कार्तिक	शुक्र	27 नवम्बर
मार्गशीर्ष	रवि	27 दिसम्बर

प्रदोष व्रत (कृष्ण पक्ष)		
माघ	बुध	22 जनवरी
फाल्गुन	गुरु	20 फरवरी
चैत्र	शनि	21 मार्च
वैशाख	सोम	20 अप्रैल
ज्येष्ठ	मंगल	19 मई
आषाढ़	गुरु	18 जून
श्रावण	शनि	18 जुलाई
भाद्रपद	रवि	16 अगस्त
आश्विन	मंगल	15 सितम्बर
कार्तिक	बुध	14 अक्तूबर
कार्तिक	शुक्र	13 नवम्बर
मार्गशीर्ष	शनि	12 दिसम्बर

एकादशी व्रत		
पुत्रदा	सोम	06 जनवरी
षट्तिला	सोम	20 जनवरी
जया	बुध	05 फरवरी
विजया	बुध	19 फरवरी
अमलकी	शुक्र	06 मार्च
पापमोचिनी	गुरु	19 मार्च
कामदा	शनि	04 अप्रैल
वरूथिनि	शनि	18 अप्रैल
मोहिनी	रवि	03 मई
अपरा	सोम	18 मई
निर्जला	मंगल	02 जून
योगिनी	बुध	17 जून
देवशयनी	बुध	01 जुलाई
कामदा	गुरु	16 जुलाई
पवित्रा	गुरु	30 जुलाई
अजा	शनि	15 अगस्त
पद्मा	शनि	29 अगस्त
इंदिरा	रवि	13 सितम्बर
पापांकुश	रवि	27 सितम्बर
इंदिरा	मंगल	13 अक्तूबर
पापांकुशा	मंगल	27 अक्तूबर
रमा	बुध	11 नवम्बर
देवप्रबोधिनी	बुध	25 नवम्बर
उत्पन्ना	गुरु	10 दिसम्बर
मोक्षदा	शुक्र	25 दिसम्बर

पूर्णिमा		
पौष	शुक्र	10 जनवरी
माघ	रवि	09 फरवरी
फाल्गुन	सोम	09 मार्च
चैत्र	बुध	08 अप्रैल
वैशाख	गुरु	07 मई
ज्येष्ठ	शुक्र	05 जून
आषाढ़	रवि	05 जुलाई
श्रावण	सोम	03 अगस्त
भाद्रपद	बुध	02 सितम्बर
आश्विन	गुरु	01 अक्तूबर
आश्विन	शनि	31 अक्तूबर
कार्तिक	सोम	30 नवम्बर
मार्गशीर्ष	बुध	30 दिसम्बर

मासिक सत्यनारायण व्रत		
पौष	शुक्र	10 जनवरी
माघ	शनि	08 फरवरी
फाल्गुन	सोम	09 मार्च
चैत्र	मंगल	07 अप्रैल
वैशाख	बुध	06 मई
ज्येष्ठ	शुक्र	05 जून
आषाढ़	शनि	04 जुलाई
श्रावण	सोम	03 अगस्त
भाद्रपद	मंगल	01 सितम्बर
आश्विन	गुरु	01 अक्तूबर
आश्विन	शनि	31 अक्तूबर
कार्तिक	रवि	29 नवम्बर
मार्गशीर्ष	मंगल	29 दिसम्बर

व्रत एवं पर्व – 2021

तिथि	वार	व्रत / पर्व
जनवरी		
01	शुक्र	नववर्ष प्रारंभ
13	बुध	लोहिड़ी
14	गुरु	मकर संक्राति
26	मंगल	गणतंत्र दिवस
28	गुरु	माघ स्नान प्रारंभ
31	रवि	संकष्ट चतुर्थी
फरवरी		
11	गुरु	मौनी अमावस्या
14	रवि	गौरी तीज (माघ)
15	सोम	वरद/तिल चतुर्थी
16	मंगल	बसंत पंचमी
19	शुक्र	भीष्माष्टमी
24	बुध	भीष्म द्वादशी
27	शनि	माघ स्नान समाप्त
मार्च		
11	गुरु	महाशिवरात्रि
15	सोम	फुलेरा दूज
22	सोम	होलाष्टक प्रारंभ
28	रवि	होलिका दहन
28	रवि	होलाष्टक समाप्त
29	सोम	होली(धुलैंडी)
अप्रैल		
04	रवि	शीतला अष्टमी पूजन
13	मंगल	वैशाखी
13	मंगल	नव संवत प्रारंभ
13	मंगल	नवरात्र प्रारंभ
15	गुरु	गणगैर तीज (चैत्र)
17	शनि	श्री पंचमी
18	रवि	स्कंद षष्ठी व्रत
20	मंगल	बसन्त दुर्गाष्टमी
21	बुध	रामनवमी
21	बुध	नवरात्र समाप्त
25	रवि	अनंत त्रयोदशी
जून		
20	रवि	गंग दशहरा
जुलाई		
12	सोम	रथ यात्रा (पुरी)
15	गुरु	कुमार षष्ठी व्रत
18	रवि	भड्डली नवमी
23	शुक्र	गुरु पूर्णिमा
23	शुक्र	चतुर्मास्य प्रारम्भ
अगस्त		
11	बुध	हरियाली तीज
13	शुक्र	नाग पंचमी
22	रवि	रक्षाबंधन
25	बुध	संकष्ट चतुर्थी (भाद्र)
30	सोम	जन्माष्टमी(स्मार्त)
31	मंगल	मां काली जयंती
सितंबर		
09	गुरु	हरितालिका तीज
09	गुरु	वराह जयंती
10	शुक्र	गणपति स्थापना
11	शनि	ऋषि (बड़ी) पंचमी
14	मंगल	राधा अष्टमी
17	शुक्र	वामन जयंती
19	रवि	अनन्त चतुर्दशी व्रत
20	सोम	महालय श्राद्ध
20	सोम	श्राद्ध प्रारंभ
अक्तूबर		
06	बुध	सर्वपितृ श्राद्ध
06	बुध	महालय (श्राद्ध) समाप्त
07	गुरु	शरद नवरात्र प्रा.
12	मंगल	सरस्वती पूजन
13	बुध	शरद दुर्गाष्टमी
14	गुरु	शरद नवरात्र समा.
15	शुक्र	दशहरा
19	मंगल	शरद पूर्णिमा
24	रवि	करवा चौथ
28	गुरु	अहोई अष्टमी
नवंबर		
02	मंगल	धनतेरस
02	मंगल	यम दीपक
03	बुध	नरक चतुर्दशी
03	बुध	चतुर्मास्य समाप्त
03	बुध	हनुमान जयंती
04	गुरु	कमला जयंती
04	गुरु	दीपावली
05	शुक्र	गोवर्धनपूजा
05	शुक्र	कार्तिकादि सं. प्रा.
06	शनि	भैयादूज
09	मंगल	ज्ञान पंचमी
09	मंगल	छठ पूजा
11	गुरु	गेपाष्टमी
15	सोम	तुलसी विवाह
17	बुध	बैकुंठ चतुर्दशी
19	शुक्र	कार्तिक पूर्णिमा
27	शनि	भैरवाष्टमी
दिसंबर		
03	शुक्र	बालाजी जयंती
04	शनि	विश्वकर्मा जयंती
09	गुरु	स्कंद षष्ठी (गुह्य)
14	मंगल	मौनी एकादशी
14	मंगल	गीता जयंती
18	शनि	अन्नपूर्णा जयंती

मासिक शिवरात्रि		
पौष	सोम	11 जनवरी
माघ	बुध	10 फरवरी
फाल्गुन	गुरु	11 मार्च
चैत्र	शनि	10 अप्रैल
वैशाख	रवि	09 मई
ज्येष्ठ	मंगल	08 जून
आषाढ़	गुरु	08 जुलाई
श्रावण	शुक्र	06 अगस्त
भाद्रपद	रवि	05 सितम्बर
आश्विन	सोम	04 अक्तूबर
कार्तिक	बुध	03 नवम्बर
मार्गशीर्ष	गुरु	02 दिसम्बर

अमावस्या		
पौष	बुध	13 जनवरी
माघ	गुरु	11 फरवरी
फाल्गुन	शनि	13 मार्च
चैत्र	सोम	12 अप्रैल
वैशाख	मंगल	11 मई
ज्येष्ठ	गुरु	10 जून
आषाढ़	शुक्र	09 जुलाई
श्रावण	रवि	08 अगस्त
भाद्रपद	मंगल	07 सितम्बर
आश्विन	बुध	06 अक्तूबर
कार्तिक	गुरु	04 नवम्बर
मार्गशीर्ष	शनि	04 दिसम्बर

प्रदोष व्रत (शुक्ल पक्ष)		
पौष	मंगल	26 जनवरी
माघ	बुध	24 फरवरी
फाल्गुन	शुक्र	26 मार्च
चैत्र	शनि	24 अप्रैल
वैशाख	सोम	24 मई
ज्येष्ठ	मंगल	22 जून
आषाढ़	बुध	21 जुलाई
श्रावण	शुक्र	20 अगस्त
भाद्रपद	शनि	18 सितम्बर
आश्विन	रवि	17 अक्तूबर
कार्तिक	मंगल	16 नवम्बर
मार्गशीर्ष	गुरु	16 दिसम्बर

प्रदोष व्रत (कृष्ण पक्ष)		
पौष	रवि	10 जनवरी
माघ	मंगल	09 फरवरी
फाल्गुन	बुध	10 मार्च
चैत्र	शुक्र	09 अप्रैल
वैशाख	शनि	08 मई
ज्येष्ठ	सोम	07 जून
आषाढ़	बुध	07 जुलाई
श्रावण	गुरु	05 अगस्त
भाद्रपद	शनि	04 सितम्बर
आश्विन	सोम	04 अक्तूबर
कार्तिक	मंगल	02 नवम्बर
मार्गशीर्ष	गुरु	02 दिसम्बर
पौष	शुक्र	31 दिसम्बर

पूर्णिमा		
पौष	गुरु	28 जनवरी
माघ	शनि	27 फरवरी
फाल्गुन	रवि	28 मार्च
चैत्र	मंगल	27 अप्रैल
वैशाख	बुध	26 मई
ज्येष्ठ	गुरु	24 जून
आषाढ़	शनि	24 जुलाई
श्रावण	रवि	22 अगस्त
भाद्रपद	सोम	20 सितम्बर
आश्विन	बुध	20 अक्तूबर
कार्तिक	शुक्र	19 नवम्बर
मार्गशीर्ष	रवि	19 दिसम्बर

एकादशी व्रत		
सफला	शनि	09 जनवरी
पुत्रदा	रवि	24 जनवरी
षट्तिला	रवि	07 फरवरी
जया	मंगल	23 फरवरी
विजया	मंगल	09 मार्च
अमलकी	गुरु	25 मार्च
पापमोचिनी	बुध	07 अप्रैल
कामदा	शुक्र	23 अप्रैल
वरूथिनि	शुक्र	07 मई
मोहिनी	शनि	22 मई
अपरा	रवि	06 जून
निर्जला	सोम	21 जून
योगिनी	सोम	05 जुलाई
देवशयन	मंगल	20 जुलाई
कामदा	बुध	04 अगस्त
पवित्रा	बुध	18 अगस्त
पद्मा	शुक्र	17 सितम्बर
इंदिरा	शनि	02 अक्तूबर
पापांकुशा	शनि	16 अक्तूबर
रमा	सोम	01 नवम्बर
देवप्रबोधिनी	रवि	14 नवम्बर
उत्पन्ना	मंगल	30 नवम्बर
मोक्षदा	मंगल	14 दिसम्बर
सफला	गुरु	30 दिसम्बर

मासिक सत्यनारायण व्रत		
पौष	गुरु	28 जनवरी
माघ	शुक्र	26 फरवरी
फाल्गुन	रवि	28 मार्च
चैत्र	सोम	26 अप्रैल
वैशाख	मंगल	25 मई
ज्येष्ठ	गुरु	24 जून
आषाढ़	शुक्र	23 जुलाई
श्रावण	शनि	21 अगस्त
भाद्रपद	सोम	20 सितम्बर
आश्विन	बुध	20 अक्तूबर
कार्तिक	गुरु	18 नवम्बर
मार्गशीर्ष	शनि	18 दिसम्बर

व्रत के नियम, विधान एवं महत्व

व्रत एक ऐसा तप है जिसमें तपकर मानव कुंदन सा हो जाता है। व्रत से दृढ़ संकल्प शक्ति जागृत होती है। संकल्प मनुष्य को सत्मार्ग पर लेकर जाता है। इससे श्रेष्ठ कर्म करने की प्रवृत्ति का विकास होता है। जीवन में उत्थान, विकास, आत्मविश्वास और अनुशासन की भावना भी व्रत पालन करने से मनुष्य में आती हैं।

महात्मा गांधी ने व्रत का महत्व बताते हुए कहा था कि - व्रत में अपार शक्ति होती है, क्योंकि उसके पीछे मनोवैज्ञानिक दृढ़ता होती है। कोई भी व्रत लेना बलवान का काम है, निर्बल का नहीं।

व्रत का महात्म्य

उपवास या व्रत धारण करने वाला मनुष्य सभी विषयों से निवृत्त हो जाता है। वेदों के मतानुसार व्रत और उपवास के नियम पालन से शरीर को तपाना ही तप है। इस प्रकार देखें तो ज्ञात होता है कि मानव जीवन को सफल बनाने में व्रतों का महत्वपूर्ण योगदान है। व्रतों को नियमपूर्वक करने से व्यक्ति को जीवन में लौकिक और पारलौकिक लाभ व अनुभव प्राप्त होते हैं।

वस्तुतः व्रत के प्रभाव से मनुष्य की आत्मा, बुद्धि व विचार शुद्ध होते हैं। संकल्प शक्ति बढ़ती है। शरीर के अंतःस्थल में परमात्मा के प्रति भक्ति, श्रद्धा और तल्लीनता का संचार होता है। पारिवारिक कार्यों के साथ-साथ नौकरी, व्यापार एवं कला-कौशल आदि का सफलतापूर्वक संपादन किया जा सकता है, इसलिए व्रत नियमपूर्वक करना चाहिए। व्रतों में कम प्रयास से अधिक फलों की प्राप्ति होती है एवं इसी लोक में रहते हुए सभी पुण्य फल प्राप्त हो जाते हैं।

व्रत के प्रकार

1. नित्य 2. नैमित्तिक 3. काम्य

नित्यव्रत भगवान की प्रसन्नता के लिए निरंतर कर्तव्य भाव से किए जाते हैं। किसी निमित्त से किए जाने वाले व्रत नैमित्तिक व्रत कहलाते हैं और किसी विशेष कामना हेतु किए जाने वाले व्रत काम्य कहे जाते हैं। नित्य, काम्य और नैमित्तिक व्रतों के अलावा और भी अनेक प्रकार के व्रत रखे जाते हैं। जिनके विधि-विधान अलग हैं।

व्रत कथा के नियम

- व्रत के दिन सात्विक आहार ही लें, ताकि शरीर हल्का रहे। बासी, गरिष्ठ, कब्ज बढ़ाने वाले, तले हुए, प्याज युक्त भोजन, मांस-मदिरा, अंडे, लहसुन आदि का सेवन बिल्कुल न करें।
- संकल्प के बिना व्रत अधूरा है। कितनी संख्या में और कब तक व्रत करना है, इसका संकल्प व्रत प्रारंभ करने के पूर्व कर लेना चाहिए।
- व्रत शुभ मुहूर्त में आरंभ करें ताकि यह निर्विघ्नतापूर्वक पूर्ण हो सके। व्रत के दिन क्रोध एवं निंदा आदि न करें। ब्रह्मचर्य का पालन अनिवार्य रूप से करें। बड़े बुजुर्ग, माता-पिता व गुरुजनों के चरण छूकर उनका आशीर्वाद लें।
- व्रत के बीच में मृत्यु या जन्म का सूतक आने पर व्रत पुनः शुरू से प्रारंभ करना चाहिए। यदि स्त्री व्रत के बीच में रजस्वला हो जाए तो उस दिन के व्रत की संख्या न ले। ऐसे में व्रत करें, पूजन न करें।
- व्रत पूर्ण होने पर उसका शास्त्रानुसार हवनादि के द्वारा उद्यापन किए बिना व्रत का फल नहीं मिलता।
- क्षमा, सत्य, दया, दान, शौच, इंद्रिय-निग्रह, देव पूजा, अग्नि हवन संतोष आदि का पालन करना किसी भी व्रत के लिए अनिवार्य है, ऐसा शास्त्रकारों ने कहा है।
- यदि किसी व्रत में किसी भी देवता की पूजा न हो तो अपने इष्ट देव का स्मरण करें। व्रत के दिन देवताओं के साथ अपने पूर्वजों व पितृगणों का स्मरण अवश्य करना चाहिए। इससे व्रत सिद्धि होती है।
- यदि किसी कारण व्रत बिगड़ जाए, छूट जाए या व्रत के दिन कोई शास्त्र विरुद्ध कर्म हो जाए तो पहले व्रत के लिए प्रायश्चित करें, फिर व्रतारंभ करें।

व्रत महात्म्य

व्रत		फल
शारदीय नवरात्र/ दुर्गा पूजन	:	दुर्गा आराधना/दुःख, दुर्गति, दारिद्रय व दूर्भाग्य नाश
महानवमी	:	मनोकामना सिद्धि
विजयादशमी	:	राम भक्ति, सर्वकार्य सिद्धि
शरद पूर्णिमा	:	मनोकामना सिद्धि
करवा चौथ	:	अखण्ड सौभाग्य प्राप्ति
अहोई अष्टमी	:	संतान की दीर्घायु
धनतेरस	:	स्वस्थ जीवन, धन-धान्य
नरक चतुर्दशी	:	यम को प्रसन्न करने हेतु
रुप चौदस	:	सौन्दर्य प्राप्ति
दीपावली/लक्ष्मी पूजन	:	ऋद्धि-सिद्धि/धन वृद्धि, लक्ष्मी सुख
गोवर्धन/अन्नकूट	:	कृष्ण भक्ति/गो रक्षा
भैया दूज	:	भाई के सुखी जीवन, दीर्घायु
सूर्य पर्व छठ	:	संतान प्राप्ति
कार्तिक पूर्णिमा	:	मनोवांछित फल
भैरव अष्टमी	:	सौभाग्य एवं पितृ शांति
गणेश चतुर्थी	:	बाधा मुक्ति
मौनी अमावस्या	:	पाप नाश
बसंत पंचमी	:	उत्तम विद्या, बुद्धि
अचला सप्तमी	:	पाप नाश
महाशिवरात्रि	:	शिव भक्ति व पाप नाश
फाल्गुन पूर्णिमा	:	पुण्य प्राप्ति
मनोरथ चतुर्थी	:	मनोकामना सिद्धि
शीतलाष्टमी	:	शीतला रोग से मुक्ति
नव संवत्सर	:	नववर्ष शुभ हो
अरुन्धती व्रत	:	वैधव्य दूर करने के लिए
गौरी तृतीया	:	स्त्रियों : सौभाग्य प्राप्ति
रामनवमी	:	मर्यादा
अक्षय तृतीया	:	पितरों की शांति, यश, कीर्ति
गंगा सप्तमी	:	पितरों की शांति
श्री सीता नवमी	:	तप शक्ति की प्राप्ति
गंगा दशहरा	:	पाप नाश
वट सावित्री व्रत	:	मंगल कामना/अखण्ड सौभाग्य प्राप्ति

व्रत		फल
गुरु पूर्णिमा	:	गुरु कृपा
नाग पंचमी	:	नाग दंश से बचाव
कजली तीज	:	धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष
हरियाली अमावस्या	:	पितरों की शांति, पितृ दोष मुक्ति अनुष्ठान
कृष्णजन्माष्टमी	:	कृष्ण भक्ति
हरितालिका व्रत	:	सुयोग्य वर प्राप्ति, अखण्ड सौभाग्य
ऋषि पंचमी	:	सभी पापों से मुक्ति
श्रीराधाष्टमी	:	सुख, समृद्धि
अनंत चतुर्दशी	:	कष्टों का निवारण
जीवत्पुत्रिका	:	संतान रक्षा एवं दीर्घायु
बैकुंठ चतुर्दशी	:	स्वर्ग प्राप्ति
प्रदोष व्रत	:	धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष हेतु
श्री सत्यनारायण	:	मानसिक शांति, धन-वैभव, धार्मिक आस्था
स्कंद षष्ठी	:	शत्रु नाश
गरुड़ व्रत	:	विष्णु कृपा
मार्गशीर्ष पूर्णिमा	:	घर में सुख शांति
वैशाख पूर्णिमा	:	पुण्यफल, सुख समृद्धि
माघ पूर्णिमा	:	पुण्यफल
कोकिला व्रत	:	समृद्धि व श्रेष्ठ संतान
शनिवासरी पौष अमावस्या	:	तंत्र, मंत्र, पूजा पाठ आदि के लिए उत्तम
मकर संक्रांति	:	कष्टों से मुक्ति/मोक्ष प्राप्ति
वैशाख संक्रांति	:	महापुण्य फल
आरोग्य व्रत	:	आरोग्य प्राप्ति
भीष्म पंचक	:	पुत्र पौत्रादि की वृद्धि, मोक्ष प्राप्ति हेतु
सोलह सोमवार	:	सौभाग्य, मनोकामना पूर्ति
रविवार	:	स्वास्थ्य, सम्मान और यश
सोमवार	:	सौभाग्य, मनोकामना पूर्ति
मंगलवार	:	शक्ति, ऊर्जा व शत्रु नाश
बुधवार	:	शिक्षा, बुद्धि व ऐश्वर्य
गुरुवार	:	संतान, समृद्धि, ज्ञान प्राप्ति

शुक्रवार	:	धनप्राप्ति, वैवाहिक सुख
शनिवार	:	शनि शमन
पुत्रदा एकादशी	:	पुत्र प्राप्ति
षट्तिला एकादशी	:	दारिद्रय, दुर्भाग्य नाश
जया एकादशी	:	दुख, दरिद्रता दूर
विजया एकादशी	:	मानसिक ताप शमन
आंवल/आंवलकी एकादशी	:	शत्रुओं पर विजय
पापमोचनी एकादशी	:	पाप शमन हेतु
कामदा एकादशी	:	पाप क्षय
वरुथिनी एकादशी	:	परलोक सुधारने हेतु
मोहिनी एकादशी	:	शुभ, सौभाग्य प्राप्ति
अपरा एकादशी	:	पाप कर्म से मुक्ति
पापांकुशा एकादशी	:	पापों पर अंकुश
भीमसेनी निर्जला एकादशी	:	आयुष्य, आरोग्य
योगिनी एकादशी	:	गोहत्तया/कुष्ठ रोग से मुक्ति
देवशयनी एकादशी	:	मनोकामना, सुख समृद्धि
कामिका एकादशी	:	ब्रह्म हत्या, भ्रूण हत्या
पवित्रा एकादशी		महापापों से मुक्ति
अजा एकादशी	:	दैहिक कष्टों से मुक्ति
परिवर्तिनी/पद्मा एकादशी	:	भगवत भक्ति, मनोरथ सिद्धि
इंदिरा एकादशी	:	पितरों की शांति
रमा एकादशी	:	पाप निवारण, सौभाग्य प्राप्ति
दवोत्यानी/ प्रबोधिनी एकादशी	:	मांगलिक कार्यों की पूर्णता व वीर पुत्रों की प्राप्ति
उत्पन्ना एकादशी	:	सात्विक भाव व कल्याण
मोक्षदा एकादशी	:	पाप शमन, भगवत भक्ति
सफला एकादशी	:	मनोरथ सिद्धि
परमा एकादशी	:	पितरों की शांति
पद्मिनी एकादशी	:	समस्त पापों का नाश

दशहरा / विजयादशमी

(भगवान राम में आस्था, विश्वास बढ़ाने व उनके आदर्शों पर चलने के लिए)

माहात्म्य

त्रेतायुग में अयोध्या के राजकुमार भगवान श्रीराम ने लंका के राजा रावण का वध कर विजयश्री प्राप्त की थी, इसलिए इस त्यौहार को विजयादशमी के नाम से जाना जाता है। भगवान राम को ज्ञान, सत्य और देवत्व का प्रतीक माना जाता है, जबकि रावण असत्य और दानवत्व का प्रतीक है। इस प्रकार विजयादशमी का त्यौहार ज्ञान की अज्ञान पर, सत्य की असत्य पर, धर्म की अधर्म पर और देवत्व की दानवत्व पर विजय का प्रतीक है। जो व्यक्ति अपने कार्यों में सफलता चाहते हैं ऐसे व्यक्तियों को इस दिन दसों दिशाओं का पूजन करना चाहिए। इससे उनके मनोवांछित कार्य परिपूर्ण होते हैं।

पूजन विधि-विधान

यह त्यौहार प्रतिवर्ष आश्विन मास की दसवीं के दिन मनाया जाता है। इस दिन भगवान श्रीराम ने भगवती विजया का पूजन कर विजय प्राप्ति की थी। इसलिए इस दिन देवी का विधिवत् पूजन व विजया देवी की पूजा की परंपरा का विधान है। इस पर्व के दिन शमी वृक्ष की पूजा भी की जाती है। शमी वृक्ष को दृढ़ता और तेजस्विता का प्रतीक माना गया है। इस दिन दरवाजों पर गेंदे के फूलों की बंदनवार सजाई जाती है। शाम को सूर्यास्त के बाद बुराई के प्रतीक रावण, कुंभकर्ण और मेघनाथ के पुतले जलाए जाते हैं।

भविष्य पुराण में लिखा है कि जो मनुष्य दशहरे के दिन गंगा के पानी में खड़ा होकर दस बार गंगा का मंत्र - **ॐ नमो भगवति हिलि हिलि मिलि मिलि गंगे मां पावय पावय स्वाहा** और श्री गंगा स्तोत्र को पढ़ता है, वह अपने सभी पाप कर्मों से मुक्त होता है।

पौराणिक संदर्भ

एक अवसर पर शिवजी से पार्वती ने दशहरे के त्यौहार के प्रचलन व इसके फल के बारे में जानना चाहा, तो शिवजी ने कहा- आश्विन शुक्ल दशमी को नक्षत्रों के उदय होने से विजया नामक काल बनता है, जो सब कामनाओं को पूर्ण करने वाला कहा जाता है। शत्रु पर विजय प्राप्त करने की इच्छा रखने वाले राजा को इसी समय प्रस्थान करना चाहिए।

इसी तिथि में शमी वृक्ष से अस्त्र-शस्त्र उतार कर, अर्जुन ने अपने शरीर पर धारण किये थे। जब पार्वती ने अर्जुन के अस्त्र-शस्त्र धारण करने के संबंध में जानना चाहा, तो शिवजी बोले - पांडवों के जुए में हारने पर दुर्योधन पर यह शर्त रखी थी कि उन्हें वनवास के दौरान बारह वर्ष तक प्रकट रूप में और एक वर्ष तक अज्ञात अवस्था में रहना होगा। यदि तेरहवें वर्ष में उनका पता चल जाएगा, तो उन्हें फिर से बारह वर्ष का वनवास भुगतना पड़ेगा।

इस कारण अर्जुन ने अपने अस्त्र-शस्त्र शमी वृक्ष पर रखकर वेश बदलकर राजा विराट के पास सेवाकार्य किया था। एक विशेष परिस्थिति में विराट के पुत्र उत्तरकुमार ने गायों की सुरक्षा हेतु अर्जुन को साथ लिया और अर्जुन शमी वृक्ष से अपने प्रिय अस्त्र-शस्त्रों को उतार कर शत्रुओं पर विजय पाई।

उल्लेखनीय है कि शमी वृक्ष ने अर्जुन के अस्त्र-शस्त्रों की एक वर्ष तक रक्षा की थी। इसके अलावा श्रीराम में विजयादशमी के दिन लंका पर चढ़ाई के लिए प्रस्थान करते समय भी शमी ने उन्हें विजयी होने की बात कही थी। इसलिए शमी का पूजन इस दिन विजयकाल में किया जाता है।

शरद पूर्णिमा व्रत

(मनोकामना सिद्धि के लिए)

माहात्म्य

शरद पूर्णिमा के विषय में विख्यात है, कि इस दिन कोई व्यक्ति यदि कोई अनुष्ठान करता है तो उसका अनुष्ठान अवश्य सफल होता है। तीसरे पहर इस दिन व्रत कर हाथियों की आरती करने पर उत्तम फल मिलते है। इस दिन के संदर्भ में एक मान्यता प्रसिद्ध है, कि इस दिन भगवान श्री कृष्ण ने गोपियों के साथ महारास रचा था। इस दिन चन्द्रमा कि किरणों से अमृत वर्षा होने की किवदंती प्रसिद्ध है। इसी कारण इस दिन खीर बनाकर रात भर चांदनी में रखकर अगले दिन प्रातः काल में खाने का विधि-विधान है।

आश्विन मास कि पूर्णिमा सबसे श्रेष्ठ मानी गई है। इस पूर्णिमा को आरोग्य हेतु फलदायक माना जाता है। मान्यता अनुसार पूर्ण चंद्रमा अमृत का स्रोत है अतः माना जाता है कि इस पूर्णिमा को चंद्रमा से अमृत की वर्षा होती है। शरद पूर्णिमा की रात्रि समय खीर को चंद्रमा कि चांदनी में रखकर उसे प्रसाद-स्वरूप ग्रहण किया जाता है। मान्यता अनुसार चंद्रमा की किरणों से अमृत वर्षा भोजन में समाहित हो जाती हैं जिसका सेवन करने से सभी प्रकार की बीमारियां आदि दूर हो जाती हैं। आयुर्वेद के ग्रंथों में भी इसकी चांदनी के औषधीय महत्व का वर्णन मिलता है। खीर को चांदनी में रखकर अगले दिन इसका सेवन करने से असाध्य रोगों से मुक्ति प्राप्त होती है।

पूजन विधि-विधान

शरद पूर्णिमा का पर्व आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा को मनाया जाता है। इस दिन प्रातःकाल स्नानादि नित्य कर्मों से निवृत्त होकर अपने अराध्य, कुल देवता की षोडशोपचार से पूजा अर्चना एवं शंकर भगवान के पुत्र कार्तिकेय की भी पूजा इस करने का विधान है। एक पाटे पर जल से भरा लोटा और गेंहू से भरा एक गिलास रखकर उस पर रोली से स्वास्तिक बनाकर चावल और दक्षिणा चढ़ाएं। फिर टीका लगाकर हाथ में गेंहू के 13 दाने हाथ में लेकर कहानी सुनी जाती है।

उसके पश्चात गेंहू भरे गिलास और रुपया कथा कहने वाली स्त्रियों को पैर छूकर दिये जाते है। लोटे के जल और गेंहू का रात को चन्द्रमा को अर्घ्य देना चाहिए और इसके बाद ही भोजन करना चाहिए। मंदिर में खीर आदि दान करने का विधि-विधान है। विशेष रुप से इस दिन तरबूज के दो टुकड़े करके रखे जाते हैं। साथ ही कोई भी एक ऋतु का फल रखा और खीर चन्द्रमा की चांदनी में रखा जाता है। ऐसा कहा जाता है, कि इस दिन चांद की चांदनी से अमृत बरसता है। अर्द्धरात्रि को अपने अराध्य को अर्पण कर सभी को प्रसाद बांट देना चाहिए। रात में जागरण करके भजन कीर्तन करना चाहिए।

व्रत कथा

आश्विन मास की पूर्णिमा को मनाया जाने वाला त्यौहार शरद पूर्णिमा की कथा कुछ इस प्रकार से है - एक साहूकार के दो पुत्रियां थी। दोनों पुत्रियां पूर्णिमा का व्रत रखती थी, परन्तु बड़ी पुत्री विधिपूर्वक पूरा व्रत करती थी जबकि छोटी पुत्री अधूरा व्रत ही किया करती थी। परिणामस्वरूप साहूकार के छोटी पुत्री की संतान पैदा होते ही मर जाती थी। उसने पंडितों से अपने संतानों के मरने का कारण पूछा तो उन्होंने बताया कि पहले समय में तुम पूर्णिमा का अधूरा व्रत किया करती थी, जिस कारणवश तुम्हारी सभी संतानें पैदा होते ही मर जाती है।

फिर छोटी पुत्री ने पंडितों से इसका उपाय पूछा तो उन्होंने बताया कि यदि तुम विधिपूर्वक पूर्णिमा का व्रत करोगी, तब तुम्हारे संतान जीवित रह सकते हैं। यह जानकर उसके पूर्ण विधि-विधान से शरद पूर्णिमा का व्रत किया और उसकी कामना पूर्ण हुई।

❒❒❒

करवा चौथ / करक चतुर्थी व्रत

(स्त्रियों का व्रत- पति की मंगलकामना और
अखंड सौभाग्य प्राप्त करने के लिए)

माहात्म्य

यह व्रत कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को रखा जाता है। यह व्रत सौभाग्यवती स्त्रियों द्वारा अपने अखंड सौभाग्य (सुहाग), पति के स्वस्थ एवं दीर्घायु होने की मंगल कामना के लिए किया जाता है। इस व्रत को करने से पुत्र, धन-धान्य, सौभाग्य एवं अतुलयश की प्राप्ति होती है। सौभाग्यवती स्त्रियां एक दिन पहले स्नानादि कर हाथों में मेंहदी रचाती हैं और करवाचौथ के दिन साज श्रृंगार मंगल गान गाती हैं।

पूजन विधि-विधान

व्रत रखने वाली स्त्री प्रातःकाल नित्यकर्मों से निवृत्त होकर, स्नान एव संध्या आदि करके, आचमन के बाद संकल्प लेकर यह कहे कि मैं अपने सौभाग्य एवं पुत्र-पौत्रादि तथा निश्चल संपत्ति की प्राप्ति के लिए करवा चौथ के व्रत को करूंगी। यह व्रत निराहार ही नहीं, अपितु निर्जला के रूप में करना अधिक फलप्रद माना जाता है।

इस व्रत में शिव-पार्वती, कार्तिकेय और गौरी का पूजन करने का विधान है। चंद्रमा, शिव, पार्वती स्वामी कार्तिकेय और गौरी की मूर्तियों की पूजा षोडशोपचार विधि से विधिवत करके, एक तांबे या मिट्टी के पात्र में चावल, उड़द की दाल, सुहाग की सामग्री, जैसे-सिंदूर, चूड़ियां, शीशा। कंघी, रिबन और रुपया रखकर किसी श्रेष्ठ सुहागिन स्त्री या अपनी सास के पांव छूकर उन्हें भेंट कर देनी चाहिए।

सायं बेला पर पुरोहित से अवश्य कथा सुनें व उन्हें दान-दक्षिणा दें। त्तपश्चात् रात्रि में जब पूर्ण चंद्रोदय हो जाए तब चंद्रमा को छलनी से देखकर अर्ध्य दें, आरती उतारें और अपने पति का दर्शन करते हुए पूजा करें। इससे पति की उम्र लंबी होती है।

व्रत कथा

एक साहूकार के सात लड़के और एक लड़की थी। सेठानी के सहित उसकी बहुओं और बेटी ने करवा चौथ का व्रत रखा था। रात्रि को साहूकार के लड़के भोजन करने लगे तो उन्होंने अपनी बहिन से भोजन के लिए कहा, इस पर बहिन ने जवाब दिया- भाई! अभी चाँद नहीं निकला है।

उसके निकलने पर अर्घ्य देकर भोजन करूँगी। बहिन की बात सुनकर भाइयों ने एक काम किया कि नगर से बाहर जा कर अग्नि जला दी और छलनी ले जाकर उसमें से प्रकाश दिखाते हुए उन्होनें बहिन से कहा-बहिन! चाँद निकल आया है।

अर्घ्य देकर भोजन कर लो, यह सुनकर उसने अपने भाभियों से कहा कि आओ तुम भी चन्द्रमा को अर्घ्य दे लो, परन्तु वे इस काण्ड को जानती थी, उन्होंने कहा बाई जी! अभी चाँद नहीं निकला है, तेरे भाई, तेरे से धोखा करते हुए अग्नि का प्रकाश छलनी से दिखा रहे है।

भाभियों की बात सुनकर भी उसने कुछ ध्यान ना दिया एवं भाइयों द्वारा दिखाए गए प्रकाश को ही अर्घ्य देकर भोजन कर लिया। इस प्रकाश व्रत भंग करने से गणेश जी उस पर अप्रसन्न हो गए। इसके बाद उसका पति सख्त बीमार हो गया और जो कुछ घर में था उसकी बीमारी में लग गया।

जब उसे अपने किये हुए दोषों का पता लगा तो उसने पश्चाताप किया। गणेश जी की प्रार्थना करते हुए विधि विधान से पुनः चतुर्थी का व्रत किया। श्रद्धा भक्ति सहित कर्म को देखकर भगवान गणेश उस पर प्रसन्न हो गये और उसके पति को जीवन दान देकर उसे आरोग्य करने के पश्चात धन-सम्पति से युक्त कर दिया।

❑❑❑

अहोई अष्टमी व्रत

(पुत्र की दीर्घायु के लिए)

माहात्म्य

कार्तिक कृष्ण पक्ष की सप्तमी या अष्टमी के दिन यानी जिस वार की दीपावली हो, उसके एक सप्ताह पहले उसी वार को अहोई अष्टमी का व्रत किया जाता है। संतान की दीर्घ आयु एवं सुख-समृद्धि के लिए माताएं अहोई माता की पूजा करके यह व्रत रखती है।

पूजन विधि-विधान

अहोई अष्टमी के दिन सबसे पहले स्नान कर साफ कपड़ें पहनें और व्रत का संकल्प लें। मंदिर की दीवार पर गेरू और चावल से अहोई माता और उनके सात पुत्रों की तस्वीर बनाएं। चाहें तो अहोई माता की फोटो बाजार से भी खरीद सकते हैं। अहोई माता यानी पार्वती मां के सामने एक पात्र में चावल भरकर रख दें।

इसके साथ ही मूली, सिंघाड़ा व पानी फल रखें। मां के सामने एक दीपक जला दें। अब एक लोटे में पानी रखें और उसके ऊपर करवा चौथ में इस्तेमाल किया गया करवा रख दें। दिवाली के दिन इस करवे के पानी का छिड़काव पूरे घर में करते हैं। अब हाथ में गेहूं या चावल लेकर अहोई अष्टमी व्रत कथा पढ़ें।

व्रत कथा पढ़ने के बाद मां अहोई की आरती करें और पूजा खत्म होने के बाद उस चावल को दुपट्टे या साड़ी के पल्लू में बांध लें। शाम को अहोई माता की एक बार फिर पूजा करें और भोग चढ़ाएं तथा लाल रंग के फूल चढ़ाएं। शाम को भी अहोई अष्टमी व्रत कथा पढ़ें और आरती करें। तारों को अर्घ्य दें। ध्यान रहे कि पानी सारा इस्तेमाल नहीं करना है। कुछ बचा लेना है। ताकि दिवाली के दिन इसका इस्तेमाल किया जा सके। पूजा के बाद घर के बड़ों का आशीर्वाद लें। सभी को प्रसाद बांटें और भोजन ग्रहण करें।

व्रत कथा

प्राचीन काल में एक साहुकार के सात बेटे और सात बहुएं थीं। इस साहुकार की एक बेटी भी थी जो दीपावली में ससुराल से मायके आई थी। दीपावली पर घर को लीपने के लिए सातों बहुएं और ननद मिट्टी लाने जंगल गई। साहुकार की बेटी जहां मिट्टी काट रही थी उस स्थान पर स्याहु (साही) अपने सात बेटों के साथ रहती थी। मिट्टी काटते हुए गलती से साहुकार की बेटी की खुरपी की चोट से स्याहु का एक बच्चा मर गया। स्याहु इस पर क्रोधित होकर बोली मैं तुम्हारी कोख बांधूंगी।

स्याहू की बात से डरकर साहूकार की बेटी अपनी सातों भाभीयों से एक-एक कर विनती करती हैं कि वह उसके बदले अपनी कोख बंधवा लें। सबसे छोटी भाभी ननद के बदले अपनी कोख बंधवाने के लिए तैयार हो जाती है। इसके बाद छोटी भाभी के जो भी बच्चे होते हैं वे सात दिन बाद मर जाते हैं। इसके बाद उसने पंडित को बुलवाकर कारण पूछा तो पंडित ने सुरही गाय की सेवा करने की सलाह दी।

सेवा से प्रसन्न सुरही उसे स्याहु के पास ले जाती है। इस बीच थक जाने पर दोनों आराम करने लगते हैं। अचानक साहुकार की छोटी बहू देखती है कि एक सांप गरूड़ पक्षी के बच्चे को डंसने जा रहा है और वह सांप को मार देती है। इतने में गरूड़ पक्षी वहां आ जाती है।

सुरही सहित उन्हें स्याहु के पास पहुंचा देती है। वहां स्याहु छोटी बहू की सेवा से प्रसन्न होकर उसे सात पुत्र और सात बहु होने का अशीर्वाद देती है। स्याहु के आशीर्वाद से छोटी बहु का घर पुत्र और पुत्र वधुओं से हरा भरा हो जाता है।

❑❑❑

धन तेरस पर्व

(दीर्घायु एवं स्वस्थ जीवन हेतु)

माहात्म्य

धनतेरस का त्यौहार दीपावली आने की पूर्व सूचना देता है। इस दिन भगवान् धन्वंतरी क्षीरसागर से अमृत कलश लेकर प्रकट हुए थे, इसलिए वैद्य समाज हर्षोल्लास के साथ धन्वंतरी जयंती मनाता है। धनतेरस के दिन दीर्घायु और स्वस्थ जीवन की कामना से भगवान् धन्वतरी का पूजन किया जाता है। इस दिन यमराज की भी पूजा की जाती है। धनतेरस के दिन लक्ष्मी का आवास घर में माना जाता है। इस तिथि को पुराने बर्तनों के बदले नया बर्तन खरीदना शुभ माना गया है। ऐसा विश्वास किया जाता है कि इस दिन चांदी के बर्तन खरीदने से अधिक पुण्य लाभ मिलता है।

पूजन विधि-विधान

यह त्यौहार कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी को मनाया जाता है। इस दिन यमराज के लिए आटे से निर्मित दीपक बनाकर घर के मुख्य द्वार पर रखने का विधान है। रात्रि को घर की स्त्रियां इस दीपक में सरसों का तेल डालकर चार बत्तियां जलाती हैं और जल, रोली, चावल, फूल, गुड़, नैवेद्य आदि सहित दीपक जलाकर यमराज का पूजन करती हैं। यह दीपक रातभर जलना चाहिए।

यह पूजा दिन छुपने के बाद की जाती है। पूजा में चढ़ाया गया सामान ब्राह्मण को दे दिया जाता है तथा इस दिन भगवान् धन्वंतरी का विधिवत पूजन करने का विशेष महत्त्व है।

पौराणिक संदर्भ

एक समय यमराज ने अपने दूतों से पूछा कि क्या कभी तुम्हें प्राणियों के प्राण का हरण करते समय किसी पर दयाभाव भी आया है, तो वे संकोच में पड़कर बोले-नहीं महाराज! हमें दयाभाव से क्या मतलब। हम तो बस, आपकी आज्ञा का पालन करने में लगे रहते हैं।

यमराज ने उनसे दुबारा पूछा तो उन्होंने संकोच छोड़कर बताया कि एक बार एक ऐसी घटना घटी थी, जिससे हमारा हृदय कांप उठा था। हेम नामक राजा की पत्नी ने जब एक पुत्र को जन्म दिया तो ज्योतिषियों ने नक्षत्र गणना करके बताया कि यह बालक जब भी विवाह करेगा उसके चार दिन बाद ही मर जायेगा।

यह जानकर उस राजा ने बालक को स्त्रियों की छाया तक से बचाने के हेतु यमुना तट की एक गुफा में ब्रह्मचारी के रूप में रखकर बड़ा किया। संयोग से एक दिन जब महाराजा हंस की युवा बेटी यमुना तट पर घूम रही थी तो उस ब्रह्मचारी युवक ने मोहित होकर उससे गंधर्व विवाह कर लिया। चौथा दिन पूरा होते ही वह राजकुमार मर गया।

अपने पति की मृत्यु देखकर उसकी पत्नी बिलख-बिलख कर रोने लगी। उस नवविवाहिता का करुण विलाप सुनकर हमारा हृदय भी कांप उठा। हमने जीवन में कभी भी ऐसी सुंदर जोड़ी नहीं देखी थी। वे दोनों साक्षात् कामदेव व रति के अवतार मालूम होते थे। उस राजकुमार के प्राण हरण करते समय हमारे आंसू नहीं रुक रहे थे।

यह सुनकर यमराज ने कहा-क्या करें, विधि के विधानानुसार उसकी मर्यादा निभाकर हमें ऐसे अप्रिय कार्य करने ही पड़ते हैं। क्या अकाल मृत्यु से बचने का कोई उपाय नहीं है एक यमदूत ने उत्सुकतावश पूछा। यमराज बोले- हां उपाय तो है। अकाल मृत्यु से छुटकारा पाने के लिए व्यक्ति को धनतेरस के दिन पूजन और दीपदान विधिपूर्वक करना चाहिए। इससे अकाल मृत्यु का भय नहीं रहता है।

❑❑❑

दीपावली / लक्ष्मी पूजन पर्व

(ऋद्धि-सिद्धि, धन, वैभव प्राप्ति के लिए)

माहात्म्य

दीपावली प्रतिवर्ष कार्तिक कृष्ण अमावस्या को हर्षोल्लास के साथ लक्ष्मी पूजन करके न केवल हमारे देश में, बल्कि विदेशों में भी मनाई जाती है। इस दिन भगवान् श्रीराम रावण का वध कर लंका विजय प्राप्त करके अयोध्या लौटे थे। इसी दिन भगवान विष्णु ने दैत्यराज बलि की कैद से लक्ष्मी सहित अन्य देवताओं को छुड़वाया तो उनका सारा धन-धान्य, राजपाट एवं वैभव लक्ष्मी जी की कृपा से ही पुनः परिपूर्ण हुआ था। इसीलिए दीपावली के दिन लक्ष्मी पूजन किया जाता है।

लक्ष्मी भोग की अधिष्ठात्री देवी हैं, इनकी सिद्धि से ही जीवन में भौतिक सुख-सुविधाएं प्राप्त होती हैं। जहां लक्ष्मी का वास होता है, वहां सुख-समृद्धि एवं आनंद मिलता है। चूंकि दीपावली की अमावस्या से पितरों की रात आरंभ होती है, इसलिए इस दिन आकाशदीप (कंदील) जलाने की प्रथा है, ताकि पितर मार्ग से भटक न जाएं। वैश्य (बनिया) अपने बही खाते भी दिपावली के दिन ही बदलकर नए बनाते हैं।

पूजन विधि-विधान

लक्ष्मी पूजन की तैयारी सायंकाल से शुरु की जाती है। एक चौकी पर लक्ष्मी और गणेश की मूर्तियां इस प्रकार रखें कि लक्ष्मी के दायीं दिशा में गणेश रहें और उनका मुख पूर्व दिशा की ओर रहे। उनके सामने बैठकर चावलों पर कलश की स्थापना करें। वरुण के प्रतीक इस कलश पर एक नारियल लाल वस्त्र में लपेट कर इस प्रकार रखें कि उसका केवल अग्रभाग ही दिखाई दे। दो बड़े दीपक लेकर एक में घी और दूसरे में तेल भरकर रखें। एक को मूर्तियों के चरणों में और दूसरे को चौकी की दाईं तरफ रखें।

इसके अलावा एक छोटा दीपक गणेशजी के पास भी रखें। फिर शुभ मुहूर्त के समय जल, मौली, अबीर, चंदन, गुलाल चावल, धूप, बत्ती, गुड़, फूल, नैवेद्य आदि लेकर सबसे पहले पवित्रीकरण करें। फिर सारे दीपकों को जलाकर उन्हें नमस्कार करें। उन पर चावल छोड़ दें। पहले पुरुष और बाद में स्त्रियां गणेशजी, लक्ष्मीजी व अन्य देवी-देवताओं का विधिवत षोडशोपचार पूजन, श्रीसूक्त, लक्ष्मी सूक्त व पुरुष श्रीसूक्त का पाठ करें और आरती उतारें।

बही खातों की पूजा कर नए लिखने की शुरुआत करें। तेल के अनेक दीपक जलाकर घर के हरेक कमरों में तिजोरी के पास, आंगन, गैलरी आदि जगह पर रखें ताकि किसी भी जगह अंधेरा न रहे। खांड की मिठाइयां, पकवान, खीर आदि का भोग लगाकर सबको प्रसाद बांटें।

पौराणिक संदर्भ

एक बार सनत्कुमार ने शौनकादि ऋषि-मुनियों से पूछा - दीपावली के त्यौहार पर लक्ष्मीजी के अलावा अन्य देवी-देवताओं का पूजन क्यों किया जाता है? सनत्कुमार बोले- एक बार दैत्यराज बलि ने अपने बाहुबल से अनेक देवी-देवताओं सहित लक्ष्मीजी को बंदी बनाकर कारागार में डाल दिया तब कार्तिक की अमावस्या को श्रीहरि विष्णु भगवान् ने वामन का रूप धारण कर बलि को बांध लिया। तब कहीं जाकर उन सभी को कारागार से मुक्ति मिली। फिर श्रीहरि लक्ष्मीजी के साथ शयन हेतु क्षीर सागर में चले गए।

इसीलिए अन्य देवी-देवताओं के साथ लक्ष्मी के शयन व पूजन का विधान बनाया गया है। जो भी व्यक्ति उनका स्वागत उत्साहपूर्वक करके स्वच्छ कमल शय्या प्रदान करता है, पूजन करता है, उनको लक्ष्मी छोड़कर कभी नहीं जाती। जबकि प्रमाद व निद्रा में पड़े लोगों के घर लक्ष्मी नहीं जाती है।

❑❑❑

अन्नकूट / गोवर्धन पूजन पर्व

(भगवान् श्रीकृष्ण को प्रसन्न करने तथा
गोवंश की रक्षा के लिए)

माहात्म्य

हमारे कृषि प्रधान देश में गोवर्धन पूजा जैसे प्रेरणाप्रद पर्व की अत्यत आवश्यकता है। इसके पीछे एक महान् संदेश गो यानी पृथ्वी और गाय दोनों की उन्नति तथा विकास की ओर ध्यान देना और उनके संवर्धन के लिए सदा प्रयत्नशील होना छिपा है। अन्नकूट का महोत्सव भी गोवर्धन पूजा के दिन कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को ही मनाया जाता है। यह ब्रजवासियों का मुख्य त्यौहार है। अन्नकूट या गोवर्धन पूजा का पर्व यूं तो अति प्राचीन काल से मनाया जाता रहा है लेकिन आज जो विधान मौजूद है वह भगवान श्रीकष्ण के इस धरा पर अवतरित होने के बाद द्वापर युग से आरंभ हुआ है।

धर्मग्रान्थ में इस दिन इंद्र, वरुण, अग्नि आदि देवताओं का पूजा करने का उल्लेख मिलता है। उल्लेखनीय है कि ये पूजन पशुधन व अन्न आदि के भंडार के लिए किया जाता है। बालखिल्य ऋषि का कहना है कि अन्नकूट और गोवर्धन उत्सव श्रीविष्णु भगवान् की प्रसन्नता के लिए मनाना चाहिए। इन पर्वों से गौओं का कल्याण होता है, पुत्र, पौत्रादि, संततियां प्राप्त होती हैं, ऐश्वर्य और सुख प्राप्त होता है। कार्तिक के महीने में जो कुछ भी जप, होम, अर्चन किया जाता है, इन सबकी फलप्राप्ति हेतु गोवर्धन पूजन अवश्य करनी चाहिए।

पूजन विधि-विधान

यह पर्व कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को मनाया जाता है। इस दिन प्रातःकाल शरीर पर तेल की मालिश करके स्नान करना चाहिए। फिर घर के द्वार पर गोबर से गोवर्धन बनाएं। गोबर का अन्नकूट बनाकर उसके समीप विराजमान श्रीकृष्ण के सम्मुख गाय तथा ग्वाल-बालो, इद्र, वरुण, अग्नि और बलि का पूजन षोडशोपचार द्वारा करें। विभिन्न प्रकार के पकवानों व मिष्ठानों का भोग लगाकर पहाड़ की आकृति तैयार करें और उनके मध्य श्रीकृष्ण की मूर्ति रख दें। पूजन के पश्चात् कथा सुनें। प्रसाद रूप में दही व चीनी का मिश्रण सब में बांट दें। फिर पुरोहित को भोजन करवाकर उसे दान-दक्षिणा से प्रसन्न करें।

पौराणिक संदर्भ

वैदिक काल में इंद्र सर्वश्रेष्ठ देवता थे। ऐसी मान्यता थी कि उनकी ही कृपा से वर्षा होती हैं। जिसके कारण अन्न पैदा होता है। द्वापर युग में भगवान कृष्ण के समय में भी ब्रज में लोग पड़वा के दिन इंद्र की पूजा करते थे। कृष्ण जी ने यह पूजा बंद करा दी और ब्रज में स्थित गोवर्धन पहाड़ पर गये। वहां साक्षात् रूप से कृष्ण जी ने गोवर्धन का रूप रखकर भोजन कर सबको संतुष्ट किया। इससे इंद्र रुष्ट हो गये और ब्रज में इतनी वर्षा की कि चारों ओर पानी-पानी हो गया। कृष्ण जी ने अपनी अंगली पर गोवर्धन पहाड़ को उठा लिया। उसके नीचे सब गोप-गोपियों व गाय- बछड़ों को खड़ा करके ब्रज की रक्षा की। इंद्र का अभिमान टूट गया, उन्हें हार माननी पड़ी।

वर्षा समाप्त हो जाने पर सबको लेकर कृष्ण ब्रज में लौटे। तब से गोवर्धन की यह पूजा होने लगी। इसी उपलब्ध में पड़वा को छप्पन प्रकार के भोजन बनाकर भगवान का भोग लगाया जाता है। पहाड़ों पर गौ बछड़े जाने से गोबर ही गोबर हो गया था - इसलिए गोबर की आकृति वाला गोवर्धन का रूप बनाकर गौधूल के समय स्त्री-पुरुष इसकी पूजा करते हैं, परिक्रमा लगाते हैं। आरती, भजन, कीर्तन करके लोग उत्सव मानते हैं। दही, धान की खील व बतासे चढ़ाते हैं। रोली, चावल से पूजा करके फूल चढ़ाते हैं। गोवर्धन की मूर्ति के पास दही, मथानी भी आदि भी रख जाते हैं तथा घी या तेल का दीपक जलाया जाता है।

❒❒❒

भैया दूज / यम द्वितीया पर्व

(बहन द्वारा भाई के सुखी जीवन और लंबी आयु के लिए)

माहात्म्य

इस त्यौहार पर यमुना ने अपने भाई यम को अपने घर बुलाकर सत्कार करके उसे भोजन कराया था, इसीलिए इस त्यौहार को यम द्वितीया के नाम से भी जाना जाता है। भाई-बहन के प्रेम का प्रतीक होने के कारण। इसे भैया दूज के नाम से भी जाना जाता है।

इस दिन बहन भाई की पूजा कर उसकी दीर्घायु तथा अपने सुहाग की रक्षा के लिए हाथ जोड़कर यमराज से प्रार्थना करती है। स्कंद पुराण में लिखा हुआ है कि इस दिन यमराज को तृप्त और प्रसन्न कर पूजन करने वालों को मनोवांछित फल मिलता है एवं धन-धान्य, यश एवं दीर्घायु की प्राप्ति होती है।

पूजन विधि-विधान

यह पर्व कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया को मनाया जाता है। इस दिन यमुना में स्नान करके यमुना तथा ययमराज के पूजन का विशेष विधान है। इसके अलावा भाई बहन के घर आकर उसके हाथ का बना भोजन करता है और बहन भाई की पूजा करती है। विवाहिता बहनें अपने भाईयों को भोजन कराती हैं।

इसके पश्चात् बहन-भाई दोनों मिलकर यम, चित्रगुप्त और यम के दूतों का पूजन करें तथा सबको अर्घ्य दें। बहन-भाई की आयु-वृद्धि के लिए यम की प्रतिमा का पूजन करें। प्रार्थना करें कि मार्कण्डेय, हनुमान, बलि, परशुराम, व्यास, विभीषण, कृपाचार्य तथा द्रोणाचार्य की तरह मेरे भाई को भी चिरंजीवी कर दें।

पौराणिक संदर्भ

सूर्य की पत्नी संज्ञा की दो संतानें थीं। उनमें पुत्र का नाम यमराज और पुत्री का नाम यमुना था। संज्ञा अपने पति सूर्य की उद्दीप्त किरणों को सहन नहीं कर सकने के कारण उत्तरी ध्रुव में छाया बनकर रहने लगी। इसी से ताप्ती नदी तथा शनिश्चर का जन्म हुआ। इसी छाया से सदा युवा रहने वाले अश्विनी कुमारों का भी जन्म हुआ है, जो देवताओं के वैद्य माने जाते हैं।

उत्तरी ध्रव में बसने के बाद संज्ञा (छाया) का यम तथा यमुना के साथ व्यवहार में अंतर आ गया। इससे व्यथित होकर यम ने अपनी नगरी यमपुरी बसाई। यमुना अपने भाई यम को यमपुरी में पापियों को दंड देते देख दुखी होती थी, इसलिए वह गोलोक में चली गई। समय व्यतीत होता रहा। तब काफी सालों के बाद अचानक एक दिन यम का अपनी बहन यमुना की याद आई। यम ने अपने दूतों को यमुना का पता लगाने के लिए भेजा, लेकिन वह कहीं नहीं मिली। फिर यम स्वयं गोलोक गए जहां यमुनाजी की उनसे भेंट हुई।

इतने दिनों बाद यमुना अपने भाई से मिलकर बहुत प्रसन्न हुई। यमुना ने भाई का स्वागत किया और स्वादिष्ट भोजन करवाया। इससे भाई यम ने प्रसन्न होकर बहन से वरदान मांगने के लिए कहा। तब यमुना ने वर मांगा कि - हे भैया, मैं चाहती हूं कि जो भी मेरे जल में स्नान करें, वह यमपुरी नहीं जाए।

यह सुनकर यम चिंत्ति हो उठे और मन-ही-मन विचार करने लगे कि ऐसे वरदान से तो यमपुरी का अस्तिव ही समाप्त हो जाएगा।

भाई को चिंत्ति देख, बहन बोली - भैया आप चिंता न करें, मुझे यह वरदान दें कि जो लोग आज के दिन बहन के यहां भोजन करें तथा मथुरा नगरी स्थित विश्रामघाट पर स्नान करें, वे यमपुरी नहीं जाएं। यमराज ने इसे स्वीकार कर वरदान दे दिया। बहन-भाई मिलन के इस पर्व को अब भाई-दूज के रूप में मनाया जाता है।

❑❑❑

तुलसी विवाह व्रत

(स्त्रियों का व्रत : लोक-परलोक सुधार एव।
यश, वैभव प्राप्ति के लिए)

माहात्म्य

प्रतिवर्ष कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी व्रत को महिलाएं तुलसी और शालिग्राम का विवाह कराती हैं। भारतीय नारी तुलसी को सौभाग्यदायिनी मानकर उसकी पूजा और व्रत करती हैं। तुलसी विवाह का उत्सव यूं तो सारे भारत में प्रचलित है, लेकिन विशेष रूप से इसे उत्तर भारत में मनाया जाता है। तुलसी के दर्शन, स्पर्श, ध्यान, अर्चना, आरोपण एवं सिंचन से अनेक युगों के पाप नष्ट हो जाते हैं। तुलसी समस्त सौभाग्य देने वाली और आधि-व्याधि को मिटाने वाली देवी हैं।

पूजन विधि-विधान

इस दिन उपवास रखने का विधान है, जिसमें अन्न का सेवन न कर केवल फलाहार लिया जाता है। आमतौर पर कार्तिक स्नान करने वाली स्त्रियां तुलसी तथा शालिग्राम का विवाह करती हैं। नए कपड़े, जनेऊ आदि का दान करती हैं। भगवान् विष्णु की प्रतिमा में प्राण प्रतिष्ठा करके उसे वस्त्र और आभूषण से सजाकर, ससम्मान गाजे-बाजे के समारोह के साथ तुलसी चौरा पर ले जाया जाता है। फिर उस जगह विधि पूर्वक पूजन के बाद दोनों का विवाह रचाया जाता है। इस अवसर पर स्त्रियां विवाह के गीत गाती हैं। त्तपश्चात् व्रत की समाप्ति की जाती है। कुछ स्त्रियां तुलसी की 108 परिक्रमाएं करके उसे भोग, पकवान चढ़ाकर भोजन करती हैं।

व्रत कथा

प्राचीन समय में जालंधर नामक एक दैत्य ने अपने उत्पातों के कारण सभी को भयभीत कर रखा था। उसकी पत्नी वृंदा रूपवती होने के साथ एक पतिव्रता स्त्री थी। उसी के प्रताप से वह सर्वविजयी बना हुआ था। उस दैत्य से भयभीत होकर ऋषि, मुनि और देवतागण भगवान् विष्णु के पास अपनी विपदा सुनाने पहुंचे तो उन्होंने वृंदा का पतिधर्म भंग करके उसका बल क्षीण करने का निश्चय किया। भगवान् विष्णु ने अपनी योगमाया से एक मृत शरीर वृंदा के आंगन में फेंकवा दिया।

उसे अपने पति का शरीर समझकर वृंदा ने उसका आलिंगन कर लिया। इससे उसका पतिधर्म नष्ट हो गया। जबकि उसका पति तो देवलोक में इंद्र से युद्ध कर रहा था। इधर वृंदा का सतीत्व नष्ट हुआ तो उसका पति युद्ध में हारकर मृत्यु को प्राप्त हुआ। जब वृंदा को वस्तुस्थिति ज्ञात हुई कि यह सब भगवान् का छल-कपट था, तो उसने क्रोधित होकर भगवान विष्णु को शाप दे दिया कि जिस प्रकार तुमने मुझे छल से पति-वियोगी बनाया है, ठीक उसी तरह तुम भी अपनी पत्नी का छलपूर्वक हरण होने पर उसके वियोग को सहन के लिए मृत्युलोक में जन्म लोगे।

इतना कहकर वृन्दा अपने पति के शव के साथ उसके वियोग में तड़पती हुई सती हो गई। पार्वती ने वृंदा की भस्म में तुलसी, आंवला और मालती के वृक्ष लगाए। इनमें से तुलसी को भगवान् विष्णु ने वृंदा का रूप समझ कर अपनाया। कुछ लोग यह भी मानते हैं कि भगवान विष्णु ने छल से वृंदा का सतीत्व भंग कराया था तो उसने उन्हें पत्थर बनने का शाप दिया था।

इस पर भगवान विष्णु ने कहा था-तुम मुझे लक्ष्मी से भी ज्यादा प्रिय हो गई हो। यह सब तुम्हारे सतीत्व का ही फल है कि तुलसी बनकर तुम सदा मेरे साथ रहोगी। जो भी तुम्हारे साथ मेरा विवाह करेगा, वह परम धाम को प्राप्त होगा। यही कारण है कि शालिग्राम की पूजा बिना तुलसी दल चढ़ाए अधूरी मानी जाती है। इस प्रकार स्त्रियां प्रतिवर्ष तुलसी का विवाह भगवान् विष्ण की प्रसन्नता पाने के लिए ही करती हैं।

❑❑❑

कार्तिक पूर्णिमा / गंगा स्नान पर्व

(मनोवांछित फल प्राप्ति के लिए)

माहात्म्य

श्रद्धालुओं के लिए कार्तिक पूर्णिमा बहुत महत्त्वपूर्ण दिवस है। इस दिन गंगा स्नान तथा सायंकाल दीप दान का विशेष महत्त्व है। इसी दिन भगवान् विष्णु ने मत्स्यावतार ग्रहण किया था। ऐसा माना जाता है कि इसी दिन सोनपुर में गंगा गंडकी के संगम पर गज और ग्राह का युद्ध हुआ था। गज की करुणामयी पुकार सुनकर विष्णु ने ग्राह का संहार कर गज की रक्षा की थी।

कहते हैं कि – इसी दिन भगवान् शंकर ने त्रिपुर नामक राक्षस को भस्म किया था। इसी दिन शिव के प्रकाश स्तंभ के प्रसाद से दुर्गारूपिणी पार्वती महिषासुर का वध करने हेतु शक्ति अर्जित कर सकी थीं। इन्हीं कारणों से हिंदुओं के लिए सभी पूर्णिमाओं में कार्तिक पूर्णिमा विशेष रूप से पवित्र मानी जाती है। इसी दिन लोग गंगा स्नान करके अपने पापों से मुक्ति प्राप्त करते हैं। आकाशदीप जलाकर ज्ञान और विद्या के प्रकाश का बोध कराते हैं। इस पूर्णिमा के गंगा स्नान करने से मनुष्य के सभी पाप धुल जाते हैं।

मान्यताओं के अनुसार कार्तिक माह में किए गए दान, व्रत, तप, जप आदि का लाभ आने वाले समय तक मिलता रहता है। वहीं माना जाता है कि अगर कोई व्यक्ति कार्तिक माह के आखिरी दिन यानी कार्तिक पूर्णिमा को गंगा में स्नान करता है तो उसके लिए यह काफी फलदायी सिद्ध होता है। कार्तिक पूर्णिमा पर गंगा स्नान का विशेष महत्व बताया गया है। इस दिन गंगा में स्नान करना शुभ माना जाता है। मान्यता है कि इस दिन गंगा में स्नान करने से पापों का प्रायश्चित किया जा सकता है। साथ ही इस दिन गंगा स्नान करने से ग्रह दोष भी दूर होते हैं।

पूजन विधि-विधान

कार्तिक पूर्णिमा को प्रातः काल गंगा स्नान करके विधि-विधान पूर्वक श्री सत्यनारायण भगवान् की कथा सुनी जाती है। सायंकाल देव-मंदिरों, चौराहों, गलियों, पीपल के वृक्षों तथा तुलसी के पौधों के पास दीपक जलाये जाते है और गंगाजी के जल में दीपदान किये जाते हैं। इस तिथि में ब्राह्मणों को दान देने, भोजन कराने, गरीबों को भिक्षा देने तथा बड़ों से आशीर्वाद प्राप्त करने का विधान है।

पौराणिक संदर्भ

पुराणों में कहा गया है कि इसी तिथि पर शिवजी ने त्रिपुरा नामक राक्षस को मारा था। एक बार त्रिपुर राक्षस ने प्रयागराज में एक लाख वर्ष तक घोर तप किया। इस तप के प्रभाव से सब चराचर और देवता भयभीत हो उठे। अंत में सभी देवताओं ने मिलकर एक योजना बनाई कि अप्सराओं को भेजकर उसका तप भंग करवा दिया जाए। पर उन्हें सफलता न मिल सकी।

यह देख आखिर में ब्रह्माजी स्वयं उसके पास गए और उससे वर मांगने के लिए कहा। उसने मनुष्य तथा देवता द्वारा न मारे जाने का वरदान मांग लिया। ब्रह्माजी के इस वरदान से त्रिपुर तीनों लोकों में निर्भय होकर अघोर अत्याचार करने लगा। देवताओं के षड्यंत्र से एक बार उसने कैलाश पर्वत पर चढ़ाई कर दी। शिव और त्रिपुर में भयंकर युद्ध हुआ। अंत में भगवान् शिव ने ब्रह्मा और विष्णु की सहायता से उसका वध किया।

तब से इस दिन का महत्त्व बढ़ गया, इसी दिन त्रिपुरोत्सव भी होता है, इस दिन खीर दान का विशेष महत्त्व है। खीर का दान 24 उंगली के बर्तन में दूध भरकर उसमें सोने या चांदी की बनी मछली छोड़कर किया जाता है। काशी में यह तिथि देव दीपावली महोत्सव के रूप में मनायी जाती है।

❑❑❑

भैरव अष्टमी व्रत

(सौभाग्य प्राप्ति एवं पितरों के तर्पण के लिए)

माहात्म्य

पुराणों में ऐसा उल्लेख में ऐसा उल्लेख मिलता है कि भैरव भगवान् शिव के ही दूसरे रूप हैं। इसी दिन को दोपहर के समय शिवजी के प्रिय गण भैरवनाथ का जन्म हुआ था। भैरव से काल भी भयभीत रहता है, इसीलिए इन्हें कालभैरव के नाम से भी जाना जाता है। काशी में भैरवजी के अनेक मंदिर बने हुए हैं जिनमें से सबसे अधिक अधिक प्रसिद्ध मंदिर कालभैरव का है।

भैरव अष्टमी के व्रत को गणेश, विष्णु, यम, चंद्रमा, कुबेर आदि ने किया था। इसी व्रत के प्रभाव से भगवान् विष्णु लक्ष्मी के पति बने। यह सब कामनाओं को देने वाला सर्वश्रेष्ठ व्रत है। जो इस व्रत का निरंतर करता रहता है, वह महापापों से छूट जाता है। उसे सब ऐश्वर्य मिल जाते हैं। ऐसी मान्यता है कि भैरव अष्टमी के दिन प्रातःकाल स्नान कर पितरों का श्राद्ध और तर्पण करने के उपरांत यदि कालभैरव की पूजा की जाए तो उससे उपासक के वर्ष भर के सारे विघ्न टल जाते हैं।

उसे लौकिक, पारलौकिक बाधाओं से मुक्ति मिलती है। यहां तक कि आय में वृद्धि के साथ-साथ वह धीरे-धीरे विपुल धन-धान्य से भी समृद्ध होता है। महाकाल भैरव के मंदिर में चढ़ाए हुए काले धागे को जो मनुष्य अपने गले या बाजू पर बांधता है, उसे भूत-प्रेत तथा जादू-टोने का असर नहीं होता।

पूजन विधि-विधान

यह व्रत मार्गशीर्ष (अगहन) मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी को रखा जाता है। इस दिन उपवास रखकर संकल्प करें। प्रातःकाल दांतों को साफ कर स्नान करें। तर्पण करके प्रत्येक पहर में कालभैरव एवं ईशान नाम के शिव शंकर भोलेनाथ का विधिपूर्वक पूजन करके तीन बार अर्घ्य दें। आधी रात में धूमधाम से शंख, घंटा, नगाड़ा आदि बजाकर कालभैरव की आरती करें। फिर पूर्ण रात्रि जागरण कर शिवजी और भैरवनाथ की कथाएं सुनें। जैसा कि हम सब जानते हैं कि भैरव भगवान् का वाहन कुत्ता माना जाता है। इसीलिए श्रद्धालु लोग उसकी भी पूजा करते हैं। कुछ भक्तगण तो उसे प्रसन्न करने के लिए दूध पिलाते हैं या मिठाई भी खिलाते हैं।

व्रत कथा

विश्व का परम तत्त्व कौन है ? इस विषय पर एक बार ब्रह्मा और भगवान् विष्णु में विवाद उठ खड़ा हुआ। दोनों ही अपने को विश्व का नियंता तथा परम तत्त्व मानने पर अड़े रहे। विवाद बढ़ता देख इसका निर्णय महर्षियों को सौंपा गया। उन्होंने कहा कि भगवान शिव एक व्यक्त सत्ता है एवं ब्रह्मा और विष्णु दोनों ही उसी विभूति से निर्मित हैं, इसलिए उनमें उसके अंश उपस्थित हैं।

यह बात भगवान् विष्णु ने तो सहर्ष स्वीकार कर ली, लेकिन ब्रह्माजी ने इस निर्णय की अवज्ञा करके अपने को सर्वोपरि तथा सृष्टि का नियंता बताना जारा रखा। यह बात भगवान शंकर को स्वीकार नहीं हुई। कहा जाता है कि त्तकाल ही उन्होंने भैरव का रूप धारण कर ब्रह्मा का अहंकार नष्ट किया। संयोग से उस दिन मार्गशीर्ष मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी थी, अतः इस दिन को भैरव अष्टमी व्रत के रूप में मनाया जाने लगा।

उल्लेखनीय है कि हमें भैरव अष्टमी काल का स्मरण कराती है, इसलिए मृत्यु के भय के निवारण हेतु काल भैरव की शरण में जाने की सलाह धर्मशास्त्र देते हैं। विश्वास किया जाता है कि काल भैरव सदा ही सामाजिक मर्यादाओं का पालन करने वाले, धर्मसाधक, शांत प्रकृति, क्षमाशील, सहिष्णु मनुष्यों की काल से रक्षा करते हैं। इसी विश्वास के साथ यह व्रत किया जाता है।

❑❑❑

संकष्ट श्रीगणेश चतुर्थी व्रत

(संकट टालने के लिए)

माहात्म्य

भविष्य पुराण में ऐसा कहा गया है कि जब-जब मनुष्य भारी कष्ट में हो, संकटों और मुसीबतों से घिरा महसूस करें या निकट भविष्य में किसी अनिष्ट की आशंका हो तो उसे चतुर्थी का व्रत करना चाहिए। इससे इस लोक और परलोक दोनों में सुख मिलता है। इस व्रत को करने से व्रती के सब कष्ट दूर हो जाते हैं। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति होती है। मनुष्य वांछित फल पाकर अंत में गणपति को पा जाता है। यहां तक कि इस व्रत के करने से विद्यार्थी को विद्या और रोगी को आरोग्य की प्राप्ति भी होती है।

पूजन विधि-विधान

यूं तो संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत प्रत्येक मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को किया जाता है, लेकिन माघ, श्रावण, मार्गशीर्ष और भाद्रपद में इस व्रत को करने का विशेष माहात्म्य है। व्रती इस दिन स्नानादि नित्य कर्मों से निवृत्त होकर स्वच्छ वस्त्र धारण करके दाहिने हाथ में पुष्प, अक्षत, गंध और जल लेकर संकल्प करें कि अमुक मास, अमुक पक्ष और अमुक तिथि में विद्या, धन, पुत्र, पौत्र प्राप्ति, समस्त रोगों से मुक्ति और समस्त संकटों से छुटकारे के लिए श्रीगणेशजी की प्रसन्नता के लिए मैं संकष्ट चतुर्थी का व्रत करता हूं।

इस संकल्प के बाद दिन भर मौन अथवा उपवास रखकर व्रती रहें। फिर सामर्थ्यानुसार गणेशजी की मूर्ति को कोरे कलश में जल भरकर, मुंह बांधकर स्थापित करें। गजानन भगवान् का चिंतन करते हुए उनका आह्वान करें। फिर गणेशजी का धूप-दीप, गंध, पुष्प, अक्षत, रोली आदि से षोडशोपचार पूजन सायंकाल में करें। पूजा के अंत में 21 लड्डुओं का भोग लगाएं।

इसमें से 5 गणपति के सम्मुख भेंट कर शेष ब्राह्मणों और भक्तों में बांट दें। साथ में दक्षिणा भी दे दें और बोलें रात में चंद्रोदय होने पर यथाविधि चंद्रमा का पूजन कर क्षीरसागर आदि मंत्रों से अर्घ्यदान करें। त्तपश्चात् गणपति को अर्घ्य देते हुए नमस्कार करें और कहें कि हे देव! सब संकटों का हरण करें तथा मेरे अर्घ्य दान को स्वीकार करें।

अब आप फूल और दक्षिणा समेत पांच मोदकों को मेरी आपत्तियां दूर करने के लिए स्वीकारें। वस्त्र से ढका पूजित कलश, दक्षिणा और गणेशजी की प्रतिमा आचार्य को समर्पित कर दें। फिर भोजन ग्रहण करें। उल्लेखनीय है कि भादों मास की शुक्ल चतुर्थी को चंद्रदर्शन निषेध किया गया है, क्योंकि लोक विश्वास है कि इस चतुर्थी के चंद्र दर्शन से झूठा कलंक लगता है।

व्रत कथा

सत्युग में नल नामक एक राजा था, जिसकी दमयंती नामक रूपवती पत्नी थी। जब राजा नल पर विकट समय आया और उनका घर आग में जल गया अपना सबकुछ खोने के बाद अंत में राजा को पत्नी के साथ जगह-जगह भटकना पड़ा। इन सब में राजा अपनी पत्नी पुत्र से भी अलग हो गया। इस प्रकार कष्ट पाते हुए रानी दमयंती शरभंग ऋषि की कुटिया में पहुंची और अपनी दुखभरी कथा सुनाई इस पर ऋषी ने उन्हें संकष्टी व्रत का महात्म्य और विधि-विधान समझाया।

ऋषि ने बताया भाद्रपद मास की कृष्ण चतुर्थी को जो कोई भी विधिपूर्वक श्रीगणेश का पूजन करता है उसकी समस्त मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं और इस व्रत को करने से निश्चित रूप से सभी इच्छित मनोरथ सिद्ध होते हैं। रानी दमयन्ती ने भाद्रपद मास की कृष्ण चतुर्थी से इस व्रत को आरंभ करके लगातार गणेश पूजन किया, तो उसे अपना पति, पुत्र और खोया हुआ राज्य फिर से प्राप्त हो गया। तभी से हर व्रत की परिपाटी चली आ रही है।

❑❑❑

मौनी अमावस्या व्रत

(सभी पापों की मुक्ति हेतु)

माहात्म्य

माघ माह में कृष्ण पक्ष की अमावस्या को मौनी अमावस्या कहते हैं। इस दिन मौन रहना चाहिए। इस व्रत को मौन धारण करके समापन करने वाले को मुनि पद की प्राप्ति होती है। इसलिए इस दिन मौन व्रत रखकर मन को संयम में रखने का विधान बनाया गया है। शास्त्रों में भी वर्णित है कि होंठों से ईश्वर का जाप करने से जितना पुण्य मिलता है, उससे कई गुणा अधिक पुण्य मन में हरि का नाम लेने से मिलता है।

पूजन विधि-विधान

मौनी अमावस्या के दिन संगम में स्नान करना चाहिए। स्नान करने के बाद मौन व्रत संकल्प लें। भगवान विष्णु की प्रतिमा का पीले फूल, केसर, चंदन, घी का दीपक और प्रसाद के साथ पूजन करें। भगवान का ध्यान करने के बाद विष्णु चालीसा या विष्णु सहस्त्रनाम का पाठ करें। ब्राह्मणों ओर गरीबों को दान दक्षिणा जरूर दें। मंदिर में दीप दान करना ना भूलें। शाम को धूप-दीप से आरती करें। पीले मीठे पकवान का भोग लगाएं। गौ माता को मीठी रोटी या हरा चारा खिलने के बाद व्रत खोलें।

व्रत कथा

कांचीपुरी नगर में देवस्वामी नाम का एक ब्राह्मण रहता था। उसकी पत्नी का नाम धनवती और पुत्री का नाम गुणवती था। उसके सात पुत्र थे। देवस्वामी ने सातों पुत्रों का विवाह करने के पश्चात् अपनी पुत्री के विवाह के लिए योग्य वर की तलाशी के लिए अपने बड़े बेटे को नगर से बाहर भेजा दिया और इसके बाद देवस्वामी ने अपनी पुत्री गुणवती की कुंडली एक ज्योतिषी को दिखाई। ज्योतिषी ने गुणवती की कुंडली देखकर कहा कि सप्तपदी होते-होते ही यह कन्या विधवा हो जाएगी।

यह बात सुनकर देवस्वामी अत्यंत दुःखी हुई और इसका उपाय पूछने लगी। ज्योतिषी ने उपाय बताया कि इस योग का निवारण सिंहलद्वीप वासिनी सोमा नामक धोबिन को घर बुलाकर उसकी पूजा करने से ही संभव होगा। यह सुनकर देवस्वामी ने अपने सबसे छोटे लड़के के साथ अपनी पुत्री को सोमा धोबिन को घर लाने के उद्देश्य से सिंहलद्वीप जाने के लिए रवाना किया।

वे दोनों समुद्र के तट पर पहुंचे और समुद्र को पार करने का उपाय सोचने लगे, लेकिन कोई उपाय नहीं सुझा तो दोनों भाई-बहिन भूखे-प्यासे एक वट-वृक्ष की छाया में उदास होकर बैठे गए। उस वृक्ष पर गिद्ध के बच्चे रहते थे। वे दिनभर इन दोनों को परेशान होते हुए देख रह थे। शाम को बच्चों की माँ उनके लिए कुछ आहार लेकर आई और उन्हें खिलाने लगी। लेकिन गिद्ध के बच्चों ने कुछ नहीं खाया और अपनी माँ से कहा कि इस वृक्ष के नीचे आज सुबह से ही दो भूखे-प्यासे प्राणी बैठे हैं।

जब तक वे नहीं खाएंगे, हम लोग भी नहीं खाएंगे। बच्चों की बात सुनकर उनकी माँ गिद्धनी को दया आई गई। उसने दोनों प्राणियों को देखा और उनके पास जाकर कहा कि आपकी इच्छा मैंने जान ली है। आप लोग भोजन करें। कल प्रातः मैं आप लोगों को समुद्र पार सोमा के घर पहुँचा दूंगी।

गिद्धनी की बात सुनकर उन दोनों भाई-बहिन की चिंता कम हुई, दोनों को अत्यंत प्रसन्नता हुई, उन्होंने गिद्धनी को प्रणाम कर भोजन किया। प्रातः होते-होते गिद्धनी ने उन्हें सोमा के घर पहुंचा दिया। जिसके बाद वे सिंहलद्वीप वासिनी सोमा नामक धोबिन को घर लेकर आई और उनकी पूजा की। जिसके बाद उनकी पुत्री का विवाह हो गया।

बसंत पंचमी पर्व

(पाप दोष मुक्ति, विद्या, ज्ञान और ललित कलाओं में दक्षता प्राप्ति के लिए)

माहात्म्य

यह दिवस ऋतुराज बसंत के आगमन का प्रथम दिन माना जाता है। हमारे धार्मिक ग्रंथों में बसंत को ऋतुराज अर्थात सब ऋतुओं का राजा माना गया है। बसंत पंचमी, बसंत ऋतु का एक प्रमुख त्यौहार है। इस प्रकार बसंत पंचमी का त्यौहार मानवमात्र के हृदय के आनंद और खुशी का प्रतीक कहा जाता है। बसंत ऋतु में जहां प्रकृति का सौंदर्य निखर उठता है, वहीं उसकी अनुपम छटा देखते ही बनती है। यह पर्व उत्तरी भारत तथा पश्चिम बंगाल में बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है।

होली का आरंभ भी बसंत पंचमी से ही होता है क्योंकि इस दिन प्रथम बार गुलाल उड़ाई जाती है। उत्तर प्रदेश में इसी दिन से फाग उड़ाना आरंभ करते हैं, जिसका अंत फाल्गुन की पूर्णिमा को होता है। भगवान श्रीकृष्ण इस त्यौहार के अधिदेवता हैं, इसलिए ब्रज प्रदेश में राधा तथा कृष्ण का आनंद-विनोद बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। इसी दिन किसान अपने नए अन्न में घी, गुड़ मिलाकर अग्नि तथा पितरों को तर्पण करते हैं।

ब्रह्मवैवर्त पुराण के कथनानुसार भगवान् श्रीकृष्ण ने इस दिन देवी सरस्वती पर प्रसन्न होकर उन्हें वरदान दिया था। इसीलिए विद्यार्थी तथा शिक्षा प्रेमियों के लिए यह माँ सरस्वती के पूजन का महान पर्व है। चरक संहिता में लिखा है कि इस ऋतु में स्त्री-रमण तथा वन विहार करना चाहिए। कामदेव बसंत के अनन्य सहचर हैं। अतएव कामदेव व रति की भी इस तिथि को पूजा करने का विधान है।

पूजन विधि-विधान

यह त्यौहार माघ मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी को मनाया जाता है। इस दिन नित्य के नैमित्तिक कार्य करके शरीर पर तेल से मालिश करें। फिर स्नान के बाद आभूषण धारण कर पीले वस्त्र पहनें। ब्राह्मणों को पीले चावल, पीले वस्त्र दान करने पर विशेष फल की प्राप्ति होती है। इस दिन विष्णु भगवान् के पूजन का माहात्म्य बताया गया है और ज्ञान की देवी सरस्वती के पूजन का विशेष विधान है। सरस्वती पूजन के पश्चात् शिशुओं को तिलक लगा कर अक्षर ज्ञान प्रारंभ कराने की भी प्रथा है। इस दिन ब्राह्मणों को भोजन कराकर यथाशक्ति दान-दक्षिणा दें।

पौराणिक संदर्भ

इसका उल्लेख ब्रह्मवैवर्त पुराण में इस प्रकार आया है - जब प्रजापति ब्रह्मा ने भगवान् विष्णु की आज्ञा से सृष्टि की रचना की तो वे उसे देखने के लिए निकले। उन्होंने सर्वत्र उदासी देखी। सारा वातावरण उन्हें ऐसा दिखा जैसे किसी के पास वाणी ही न हो। सुनसान, सन्नाटा, उदासी भरा वातावरण देखकर उन्होंने इसे दूर करने के लिए अपने कमंडल से चारों तरफ जल छिड़का।

जलकणों के वृक्षों पर पड़ने से वृक्षों से एक देवी प्रकट हुई, जिसके चार हाथ थे। उनमें से दो हाथों में वह वीणा पकड़े हुए थी तथा उसके शेष दो हाथों में से एक में पुस्तक और दूसरे में माला थी। संसार की मूकता और उदासी भरे वातावरण को दूर करने के लिए ब्रह्माजी ने इस देवी से वीणा बजाने को कहा। वीणा के मधुर स्वर नाद से जीवों को वाणी (वाक् शक्ति) मिल गई।

सप्तविध स्वरों का ज्ञान प्रदान करने के कारण ही इनका नाम सरस्वती पड़ा। वीणावादिनी सरस्वती संगीतमय आह्लादित जीवन जीने की प्रेरणा है। वह विद्या, संगीत और बुद्धि की देवी मानी गई है, जिनकी पूजा-आराधना में मानव कल्याण का समग्र जीवन-दर्शन निहित है। इसीलिए बसंत पंचमी को इनका विधि-विधान से पूजन करने का नियम बनाया गया है।

❑❑❑

माहात्म्य

ऐसा शास्त्र वर्णित है कि सूर्य नारायण के लिए अचला सप्तमी का व्रत करना चाहिए। इस दिन सूर्य भगवान् को गंगा जल से अर्घ्य दान करने का बड़ा माहात्म्य माना गया है। प्राचीन ज्योतिष शास्त्र और आधुनिक विज्ञान ने भी सूर्य को बड़ा महत्व दिया है, क्योंकि प्राणियों व वनस्पतियों को सूर्य से पोषण तथा वृद्धि प्राप्त होती है।

इसके अलावा सूर्य की किरणों में कीटाणुनाशक त्तव पर्याप्त मात्रा में मौजूद रहते हैं। सूर्य की ओर मुख करके जल का अर्घ्य दान करने से शारीरिक विकार नष्ट होते हैं। इस सप्तमी का स्नान मनुष्य के सभी मनोरथों की पूर्ति करने वाला होता है। व्रती की इसके प्रभाव से इस लोक के सभी वांछित भोगों को भोगने की इच्छा पूर्ण होती है और अंत में स्वर्ग में स्थान मिलता है। सप्तमी के दिन भूखे, गरीब, अपाहिज तथा ब्राह्मणों को दान देना परम पुण्यदायी माना गया है। इस व्रत का एक नाम सौर सप्तमी भी है।

पूजन विधि-विधान

यह व्रत माघ मास के शुक्ल पक्ष की सप्तमी को रखा जाता है। चूंकि यह व्रत स्त्रियों का है, इसलिए इसे वे सूर्य नारायण की प्रसन्नता के लिए रखती हैं। व्रती स्त्री को चाहिए कि षष्ठी के दिन केवल एक बार भोजन ग्रहण कर उसी दिन से सूर्य नारायण का विधि पूर्वक पूजन प्रारंभ कर दे। सप्तमी को प्रातःकाल नित्यकर्मों से निवृत्त होकर किसी नदी या तालाब के किनारे कमर से ऊपर तक जल में खड़े होकर सिर पर दीप धारण करके सूर्य नारायण की ओर मुख करें, फिर स्तुति करके अर्घ्य पात्र में गंगाजल, रोली, अक्षत तथा रक्तवर्ण का पुष्प रखकर अर्घ्य दें

नदी या तालाब के अभाव में घर पर ही स्नान कर भगवान् सूर्य की अष्टदली प्रतिमा बनाकर मध्य में भगवान् शिव तथा पार्वती की स्थापना करके विधि-विधानानुसार पूजन करें। सायंकाल प्रतिमा का विसर्जन किसी नदी या सरोवर में करें। ब्राह्मणों को भोजन कराकर तांबे के बर्तन में चावल भरकर, दक्षिणा डालकर ब्राह्मण को दान करें।

व्रत कथा

प्राचीन काल में इंदुमती नाम की एक रूपवती वेश्या थी। एक दिन वह महात्मा वसिष्ठ के आश्रम में पहुंची और हाथ जोड़कर प्रणाम करने के बाद कहने लगी - हे मुनिराज! मैंने आज तक कोई धार्मिक कार्य जैसे-दान, हवन, व्रत, उपवास या किसी भी तरह का भगवान् का पूजन कभी भक्ति से नहीं किया।

मैं हमेशा भौतिक सुखों को भोगने में लगी रही। अब भव-सागर से मेरी मुक्ति कैसे होगी, यही चिंता मुझे हर समय विदग्ध किए रहती है। कृपाकर आप मुझे कोई ऐसा व्रत, दान आदि कर्म बताएं जिसके अनुष्ठान से मुझे मोक्ष प्राप्त हो सके। उस वेश्या के बार-बार प्रार्थना करने पर दयावश मुनिराज वसिष्ठ बोले- तुम माघ शुक्ल सप्तमी के दिन स्नान कर अचला सप्तमी का व्रत करो।

इसके प्रभाव से मुक्ति, सौभाग्य, सौंदर्य सारे मनोरथ पूरे होंगे। व्रत के लिए छठ के दिन एक बार भोजन कर दूसरे दिन प्रातःकाल उठाकर किसी ऐसे जलाशय में जाकर स्नान करो, जिसमें पहले किसी के न होने से पानी हिलता न हो। ऐसा करने से तुम्हारे सारे पाप दूर हो जाएंगे। वसिष्ठ के कथानुसार उस वेश्या ने विधि-विधान से स्नान कर व्रत किया और दान दिया तो वह इस लोक के सब वांछित भोगों को भोग कर अंत में स्वर्ग चली गई।

❐❐❐

महाशिवरात्रि व्रत

(शिव के प्रति समर्पण भाव, करने के लिए, मन की शुद्धि और पापों के विनाश हेतु)

माहात्म्य

महाशिवरात्रि पर्व का महत्व सभी पुराणों में मिलता है। गरुड़ पुराण, पद्म पुराण, स्कंद पुराण, शिव पुराण तथा अग्नि पुराण सभी में महाशिवरात्रि पर्व की महिमा का वर्णन मिलता है। कलियुग में यह व्रत थोडे से ही परिश्रम से साध्य होने पर भी महान पुण्यप्रदायक, सब पापों का नाश करने वाला है।

जिस कामना को मन में लेकर मनुष्य इस व्रत का अनुष्ठान करता है, वह मनोकामना अवश्य पूर्ण होती है। इस लोक में जो चल अथवा अचल शिवलिंग हैं, उन सब में इस रात्रि को भगवान शिव की शक्ति का संचार होता है। इसीलिए इस शिवरात्रि को महारात्रि कहा गया है। इस एक दिन उपवास रखते हुए शिवार्चन करने से साल भर के पापों से शुद्धि हो जाती है।

पूजन विधि-विधान

यह व्रत फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष का चतुर्दशी को मनाया जाता है। इस दिन प्रातःकाल दैनिक कार्यों से निपटकर, काले तिलों का उबटन लगाकर स्नान करें। फिर स्वच्छ धुले हुए वस्त्र धारण करके व्रत का संकल्प करें - कि पाप के नाश के लिए, भोगों की प्राप्ति हेतु तथा अक्षय मोक्ष प्राप्ति के लिए - मैं महाशिवरात्रि के व्रत का संकल्प लेता हूं।

इसके पश्चात शिवजी का पूजन, गणेश, पार्वती, नंदी के साथ उनके प्रिय जैसे - आक व धतूरे के पुष्प, बेलपत्र, दूर्वा, कनेर, मौलसिरी, तुलसी दल आदि के साथ षोडशोपचार द्वारा विधि-विधान से करें। इस दिन शिवजी पर पके आम्रफल चढ़ाना अधिक फलदायी होता है। पूजन के बाद ब्राह्मणों को भोजन, दान करें। शिव स्तोत्र, रुद्राष्टाध्यायी, शिवपुराण की कथा, शिव चालीसा का पाठ और रात्रि जागरण करें। इसके पश्चात दूसरे दिन प्रातःकाल योग्य ब्राह्मणों द्वारा हवन और रुद्राभिषेक करके अन्न-जल ग्रहण कर व्रत का पारण करें।

व्रत कथा

शिव महापुराण के अनुसार बहुत पहले अर्बुद देश में सुन्दरसेन नामक निषाद राजा रहता था। वह एक बार जंगल में अपने कुत्तों के साथ शिकार के लिए गया। पूरे दिन परिश्रम के बाद भी उसे कोई जानवर नहीं मिला। भूख प्यास से पीड़ित होकर वह रात्रि में जलाशय के तट पर एक वृक्ष के पास जा पहुंचा। जहां उसे शिवलिंग के दर्शन हुए।

अपने शरीर की रक्षा के लिए निषाद राज ने वृक्ष की ओट ली लेकिन उनकी जानकारी के बिना कुछ पत्ते वृक्ष से टूटकर शिवलिंग पर गिर पड़े। उसने उन पत्तों को हटाकर शिवलिंग के ऊपर स्थित धूलि को दूर करने के लिए जल से उस शिवलिंग को साफ किया। उसी समय शिवलिंग के पास ही उसके हाथ से एक बाण छूटकर भूमि पर गिर गया। अतः घुटनों को भूमि पर टेककर एक हाथ से शिवलिंग को स्पर्श करते हुए उसने उस बाण को उठा लिया।

इस प्रकार राजा द्वारा रात्रि-जागरण, शिवलिंग का स्नान, स्पर्श और पूजन भी हो गया। प्रातः काल होने पर निषाद राजा अपने घर चला गया और पत्नी के द्वारा दिए गए भोजन को खाकर अपनी भूख मिटाई। यथोचित समय पर उसकी मृत्यु हुई तो यमराज के दूत उसको पाश में बांधकर यमलोक ले जाने लगे, तब शिवजी के गणों ने यमदूतों से युद्ध कर निषाद को पाश से मुक्त करा दिया। इस तरह वह निषाद अपने कुत्तों के साथ भगवान शिव के प्रिय गणों में शामिल हुआ।

❐❐❐

होलिकोत्सव पर्व

(बुराई पर भलाई की जीत)

माहात्म्य

होली एक सामाजिक रंगों का त्यौहार है, आनंदोल्लास का पर्व है। इसके समान आनंद और प्रसन्नता देने वाला दूसरा कोई त्यौहार नहीं है। इसे सभी नर-नारी बड़े उत्साह से मनाते हैं। श्रीब्रह्म पुराण में लिखा है कि फाल्गुन पूर्णिमा के दिन जो लोग चित्त को एकाग्र करके हिंडोले में झलते हुए श्रीगोविन्द पुरुषोत्तम के दर्शन करते हैं, वे निश्चय ही बैकुंठ लोक को जाते हैं।

इस त्यौहार का संबंध प्रह्लाद से जुड़ा हुआ बताया गया है। वैदिक काल में होली के पर्व को नवान्नेष्टि यज्ञ कहा जाता था। खेत से अधपके अन्न को यज्ञ में हवन करके प्रसाद लेने का विधान समाज में था। उस अन्न को होला कहते हैं। इसी से होलिकोत्सव नाम पडा।

पूजन विधि-विधान

यह त्यौहार फाल्गुन मास के शुक्ल पक्ष की अष्टमी होलाष्टक से शुरु होकर पूर्णिमा तक चलता है। सायंकाल में होली जलाने के स्थान पर होलिका पूजन किया जाता है। पूजन के समय भद्रा नहीं होनी चाहिए। सूर्यास्त के बाद भद्रा मुहूर्त में होली का अग्नि संस्कार किया जाता है। गंध, पुष्प, धूप, नैवेद्य, दक्षिणा और फलों में नाममंत्र से होली का विधिवत पूजन किया जाता है।

जलती होली में गेहूं, चने और जौ की बालों को भूनने का भी विधान है। कुछ श्रद्धालु होली की अग्नि में घर में बनाई गई होली को जलाते हैं तो कुछ होली की भस्म भी घर ले जाते हैं।

पौराणिक संदर्भ

नारद पुराण के अनुसार आदिकाल में हिरण्यकश्यप नामक एक राक्षस हुआ था। दैत्यराज खुद को ईश्वर से भी बड़ा समझता था। वह चाहता था कि लोग केवल उसकी पूजा करें। लेकिन उसका खुद का पुत्र प्रह्लाद परम विष्णु भक्त था। भक्ति उसे उसकी मां से विरासत के रूप में मिली थी।

हिरण्यकश्यप के लिए यह बड़ी चिंता की बात थी कि उसका स्वयं का पुत्र विष्णु भक्त कैसे हो गया ? और वह कैसे उसे भक्ति मार्ग से हटाए। हिरण्यकश्यप ने अपने पुत्र को विष्णु भक्ति छोड़ने के लिए कहा परन्तु अथक प्रयासों के बाद भी वह सफल नहीं हो सका।

कई बार समझाने के बाद भी जब प्रह्लाद नहीं माना तो हिरण्यकश्यप ने अपने ही बेटे को जान से मारने का विचार किया। कई कोशिशों के बाद भी वह प्रह्लाद को जान से मारने में नाकाम रहा। बार-बार की कोशिशों से नाकम होकर हिरण्यकश्यप आग बबूला हो उठा।

इसके बाद उसने अपनी बहन होलिका से मदद ली, जिसे भगवान शंकर से ऐसा वरदान मिला था जिसके अनुसार अग्नि उसे जला नहीं सकती थी। तय हुआ कि प्रह्लाद को होलिका के साथ बैठाकर अग्नि में स्वाहा कर दिया जाएगा।

होलिका अपने वरदान के साथ प्रह्लाद को गोद में लेकर चिता पर बैठ गयी। लेकिन विष्णु जी के चमत्कार से होलिका जल गई और प्रह्लाद की जान बच गयी। इसी के बाद से होली की संध्या को अग्नि जलाकर होलिका दहन का आयोजन किया जाता है।

❑❑❑

नव संवत्सर प्रतिपदा व्रत

(नववर्ष मंगलकामना हेतु)

माहात्म्य

भारतीय नववर्ष का प्रारंभ चैत्र मास की शुक्ल पक्ष प्रतिपदा अर्थात पड़वा से होता है। इसे वर्ष प्रतिपदा भी कहते हैं अर्थात् इस दिन से नववर्ष का आरंभ होता है। हमारे समस्त धार्मिक संस्कारों एवं त्यौहारों में सर्वमान्य संवत् विक्रमी संवत है। इसी दिवस से देवी पूजन नवरात्र के रूप में किये जाते हैं। नवरात्र में नौ दिन तक व्रत रखा जाता है और शक्ति उपासना की जाती है। कुछ परिवारों में केवल प्रतिपदा तिथि और दुर्गाष्टमी को ही व्रत करने की परंपरा है।

पूजन विधि-विधान

नव संवत्सर का पूजन करने के लिए इस दिन प्रातःकाल स्नान करके हाथ में गंध, अक्षत, पुष्प और जल लेकर संकल्प इस प्रकार करना चाहिए :

मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य स्वजन परिजनसहितस्य वा आयुरारोग्यैश्वर्या।
दिसकलशुभफलोत्तरोत्तराबृद्धयर्थ ब्रह्मादिसंवत्सरदेवानां पूजनमहं करिष्ये।।

फिर नई बनी हुई चौकी अथवा बालू की वेदी पर स्वच्छ श्वेत वस्त्र बिछाकर उस पर हल्दी अथवा केसर में रंगे हुए अक्षत का अष्टदल कमल बनाना चाहिए। अष्टदल कमल पर सोने की मूर्ति स्थापित कर गौरी गणेश के पूजनोपरांत **ॐ ब्रह्मणे नमः** से ब्रह्मा का आह्वान कर पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य से षोडशोपचार से उनका पूजन करना चाहिए। तत्पश्चात् सर्वविध अभ्युदय के भगवती दुर्गा मंत्र का 108 बार उच्चारण करें। पूजा के अंत में ब्रह्मा से अपने लिए संपूर्ण वर्ष कल्याणकारी होने की प्रार्थना करनी चाहिए।

नवरात्र के नौ दिन देवी दुर्गा के विभिन्न रूपों की पूजा की जाती है। चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि को देवी पूजन का प्रारंभ करने से पूर्व कलश स्थापना की जाती है। नवरात्र के नौ दिन प्रातः, मध्याह्न और संध्या के समय भगवती दुर्गा की पूजा करनी चाहिए। श्रद्धानुसार अष्टमी या नवमी के दिन हवन और कुमारी पूजा कर भगवती को प्रसन्न करना चाहिए।

पौराणिक संदर्भ

श्रीब्रह्म पुराण के अनुसार ब्रह्माजी ने इसी दिन सृष्टि की रचना की थी। इस तरह के और भी उल्लेख अथर्ववेद एवं शतपथ ब्राह्मण में मिलते हैं। एक तरफ यह आनंद का उत्सव है तो दूसरी ओर विजय और परितवर्तन के प्रारंभ का प्रतीक भी है। किसानों के यहां इस दिन नई फसल तैयार होकर घर आती है इसलिए यह उनके लिए शुभ दिन है। आंध्र प्रदेश में इस दिन को उगादि (युगादि) तिथि अर्थात युग के आरंभ के रूप में मनाया जाता है।

इस दिन कश्मीर में सप्तऋषि संवत् के अनुसार नवरेह के नाम से नववर्ष का उत्सव मनाया जाता है। कश्मीरियों का यह प्रमुख त्यौहार है। महाराष्ट्र में गुड़ी पड़वा के रूप में यह उत्सव मनाया जाता है। असम में इस दिन बिहू पर्व मनाया जाता है। ऐतिहासिक दृष्टि से इसी दिन सम्राट चंद्रगुप्त विक्रमादित्य ने शकों पर विजय प्राप्त की थी, अतः उसी दिन से यह विक्रम संवत् के नाम से प्रसिद्ध हो गया है।

इस दिन नए वस्त्र धारण करने, घर को ध्वजा, पताका और तोरण से सजाने, नीम के कोमल पत्तों को खाने, प्याऊ की स्थापना करने तथा ब्राह्मणों को भोजन कराने का भी विधान है। इस दिन योग्य ब्राह्मण के यहां जाकर या अपने यहां बुलाकर पंचांग से वर्षफल तथा अपना राशिफल सुनना चाहिए। चाहें तो इस दिन ब्राह्मण को पंचांग दान में दे सकते हैं। इसका अपार पुण्यफल प्राप्त होता है।

❑❑❑

नवरात्र / दुर्गा पूजन पर्व

(दुर्गा आराधना, सुख-शांति, धन-वैभव और यश-वैभव के लिए)

माहात्म्य

नवरात्र का पर्व वर्ष में दो बार मनाने का विधान है। पहला चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक मनाए जाने वाले नवरात्र को वासंतिक और आश्विन शुक्ल प्रतिपदा में नवमी तक मनाए जाने वाले दूसरे नवरात्र को शारदीय नवरात्र कहा जाता है। शास्त्रों के अनुसार शारदीय नवरात्र का ज्यादा महत्व बताया गया है। नवरात्र के नौ दिनों में देवी भगवती के नौ रूप- शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कूष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धिदात्री की पूजा आराधना करने का विधान है। पुराण में कहा गया है कि - नवरात्रि के व्रत महासिद्धि देने वाले, सभी शत्रुओं का दमन करने वाले, सब कार्यों को पूरा करने वाले, यश, धन-धान्य, राज्य, संतान एवं संपत्ति देने वाले व्रत हैं।

पूजन विधि-विधान

व्रतियों को चाहिए कि नवरात्रि के पहले दिन प्रातःकाल उठकर स्नान आदि करके मंदिर में जाकर माता के दर्शन कर पूजा करें या फिर घर पर ही माता की चौकी स्थापित करें। नवरात्रि व्रत का पहले संकल्प लें तथा फिर घट की स्थापना कर गणपति पूजन करना चाहिए। फिर पृथ्वी का पूजन करके घड़े में आम के हरे पत्ते, दूब, पंचामूल, पंचगव्य डालकर उसके मुंह में सूत्र बांधना चाहिए। नौ दिन दूध, दीप और फूल से पूजन करना चाहिए। घट के पास गेहूं अथवा जौ का पात्र रखकर वरूण पूजन करके मां भगवती का आह्वान करना चाहिए।

नवमी तिथि के दिन विधिपूर्वक मां भगवती का पूजन तथा दुर्गा सप्तशती का पाठ करके कुमारी पूजन का भी माहात्म्य है। कुमारियों की आयु 1 वर्ष से 10 वर्ष के बीच ही होनी चाहिए। कन्याओं का पूजन वैदिक विधान से करना चाहिए। नवदुर्गा पाठ के बाद हवन करके ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिए।

पौराणिक संदर्भ

इस कथा का श्रीमार्कण्डेय पुराण में इस प्रकार वर्णन किया गया है कि - एक बार दैत्य गुरु शुक्राचार्य के कहने पर दैत्यों ने घोर तपस्या कर ब्रह्माजी को प्रसन्न किया और वर मांगा कि उन्हें कोई पुरुष, जानवर और शत्रु न मार सके। ब्रह्माजी द्वारा वरदान मिलते ही असुरों ने अत्याचार करना शुरु कर दिया। महिषासुर नामक दैत्य ने देवताओं को अत्यधिक पीड़ित, आतंकित करना शुरु कर दिया। घबराकर देवराज इंद्र के नेतृत्व में देवताओं ने ब्रह्मा के पास जाकर अपनी रक्षा की गुहार लगाई, तब देवताओं की रक्षा की लगाई।

ब्रह्माजी ने वरदान का भेद बताते हुए कहा कि असुरों का सर्वनाश कोई स्त्री-शक्ति ही कर सकती है। ब्रह्माजी की सलाह से देवताओं ने अपनी-अपनी शक्तियां सम्मिलित कर एक अदम्य शक्ति रूपी देवी का सृजन किया। इस देवी ने महिषासुर के साथ भयानक युद्ध किया और दसवें दिन उसे मारने में सफल हुई। जब तक देवी महिषासुर से युद्ध करती रही तब तक सभी देवी-देवताओं और धरती के स्त्री-पुरुषों ने उस शक्तिस्वरूपा, सिंहवाहिनी की पूजा की। महिषासुर के वध से प्रसन्न होकर कन्याओं को खिला-पिलाकर, दान-दक्षिणा देने की परंपरा चल पड़ी, जिसका निर्वाह आज भी नवरात्रों में किया जाता है।

चूंकि देवी ने रौद्र रूप धारण का असुर संहार किया था, इसीलिए शारदीय नवरात्र को शक्ति पर्व के रूप में मनाया जाता है। इसी प्रकार चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नौ दिन तक देवों के आह्वान पर असुरों के संहार के लिए माता पार्वती ने भी नौ रूप उत्पन्न किए। यह सब चैत्र मास में नौ दिन तक घटा था, इसलिए चैत्र मास में भी नवरात्र मनाए जाते हैं।

❑❑❑

गणगौर / गौरी तृतीया व्रत

(स्त्रियों का व्रत : अखंड सौभाग्य पाने के लिए)

माहात्म्य

महिलाएं इस व्रत को एक पर्व के रूप में मनाती हैं। यह व्रत चैत्र शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को किया जाता है। इसे तीज या गौरी व्रत के नाम से भी जाना जाता है। इस व्रत को करने से सुहागिनों का सुहाग अखंड रहता है। यह गौरी पूजा सौभाग्यवती स्त्रियों और कन्याओं का विशेष त्यौहार है। इस दिन भगवान शिव ने पार्वतीजी को और पार्वतीजी ने समस्त स्त्रियों को सौभाग्य का वरदान दिया था। गणगौर का व्रत चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से आरंभ होकर तृतीया तक मनाया जाता है। अनेक स्थानों पर तीन दिन के बजाय अंतिम तिथि तृतीया को ही व्रत करने की प्रथा है।

पूजन विधि-विधान

इस दिन सौभाग्यवती महिलाएं दोपहर तक व्रत रखती हैं। व्रत धारण कर पूजन के पहले दिन देवी गौरी की प्रतिमा की स्थापना की जाती है। फिर उसका सौभाग्य संबंधी चीजें, जैसे- सिंदूर, कांच की चूड़ियां, मेंहदी, महावर, काजल, बिंदी, टीका, शीशा, कंघी आदि से श्रृंगार किया जाता है। इसके पश्चात चंदन, अक्षत, धूप, दीप, पुष्प, नैवेद्यादि से विधिवत पूजन करके भोग लगाया जाता है, फिर गौरीजी की कथा का वाचन किया जाता है। कथा की समाप्ति के बाद व्रत रखने वाली सौभाग्यवती स्त्रियां गौरीजी पर चढ़ाए हुए सिंदूर से अपनी-अपनी मांग भरती हैं। शाम को एक बार भोजन कर व्रत तोड़ा जाता है।

ॐ देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि मे परमं सुखम्।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।

व्रत कथा

इस व्रत की कथा का उल्लेख श्रीस्कंद पुराण काशीखंड उत्तरार्ध के 80वें अध्याय में किया गया है - एक बार भगवान् शंकर, पार्वती और नारद चैत्र शुक्ल की तृतीया को भ्रमण करते हुए एक गांव में पहुंचे, तो उनके स्वागत के लिए साधारण स्त्रियां तुरंत ही थाली में हलदी, अक्षत (चावल), कुंकुम, जल, पत्र-पुष्प लेकर उनके पूजन के लिए पहुंची।

पार्वतीजी ने उन स्त्रियों द्वारा की गई पूजा तथा भक्ति-भाव को स्वीकारा और उन पर सारा सुहाग छिड़का, तब उन्होंने माँ गौरी से मंगल कामना व आशीर्वाद की याचना की। अखंड सौभाग्य का वरदान पाकर वे स्त्रियां वापस लौट गईं। इसके बाद कुछ और स्त्रियां श्रृंगार कर सोने-चांदी की थालियों में विभिन्न प्रकार के व्यंजन लेकर पहुंचीं, तो शिवजी ने पार्वती से कहा- गौरी! तुमने सारा सुहाग साधारण स्त्रियों में बांट दिया तो अब इन्हें क्या दोगी ? पार्वती ने कहा-इसकी चिंता आप न करें।

मैंने ऊपरी पदार्थों से बना सुहाग रस ही उन्हें दिया था, इन पतिव्रता स्त्रियों को तो मैं अपनी उंगली चीरकर, रक्त का सुहाग रस दूंगी। इससे वे मेरी तरह ही सौभाग्यशाली हो जाएंगी। जब कुलीन स्त्रियां पार्वती का पूजन कर चुकीं, तब पार्वती ने अपनी उंगली चीरकर उन पर रक्त छिड़क दिया। इससे उन सभी ने अखंड सौभाग्य पाया।

फिर भगवान् शंकर की आज्ञा से नदी में जाकर पार्वती ने स्नान किया और बालू (रेत) के महादेव बनाकर उनका पूजन किया। बालू के पकवान बनाकर भोग लगाया और परिक्रमा की। बालू के दो कणों का प्रसाद खाकर अपने मस्तक पर टीका लगाया। इस बालू की मूर्ति से शिवजी ने वहां प्रकट होकर पार्वती को वरदान दिया- जो स्त्री आज के दिन से मेरा पूजन और तुम्हारा व्रत करेंगी उसके पति चिरंजीव रहेंगे और अंत में मोक्ष पाएंगे।

❑❑❑

राम नवमी व्रत

(भगवान राम की आराधना हेतु)

माहात्म्य

चैत्र माह की शुक्ल पक्ष की नवमी को भारतवर्ष में हिंदू संप्रदाय राम के जन्मदिन यानि की रामनवमी के रुप में मनाता है। भगवान श्री राम का जन्म चैत्र महीने की शुक्ल पक्ष की नवमी को अयोध्या में हुआ। राम जन्मभूमि अयोध्या में राम जन्म का यह उत्सव धूमधाम से मनाया जाता है। भगवान राम आदर्शों के प्रतीक हैं उनके जन्मोत्सव पर आराधक उनके बताये आदर्शों को जीवन में उतारने का प्रयास करते हैं। भगवान श्रीराम के जीवन का प्रत्येक आदर्श व्यवहारिक और विचारणीय है। रामनवमी पर पारिवारिक सुख शांति और समृद्धि के लिये व्रत भी रखा जाता है।

पूजन विधि-विधान

रामनवमी के दिन उपवास रखने वाले व्यक्ति को सुबह जल्दी उठकर घर की साफ सफाई कर स्नानादि के बाद व्रत का संकल्प करना चाहिये। घर, पूजाघर या मंदिर को ध्वजा, पताका, बंदनवार आदि से सजाया भी जा सकता है। भगवान राम, माता सीता व लक्ष्मण की मूर्तियों का पूजन षोडशोपचार से करें। जिसमें रोली, कुंकुम, चावल, स्वच्छ जल, फूल, घंटी, शंख आदि का प्रयोग करें और जल, रोली अर्पित करें। त्तपश्चात मुट्ठी भरकर चावल चढायें। आरती के बाद पवित्र जल को आरती में सम्मिलत सभी जनों पर छिड़कें। अपनी आर्थिक क्षमता व श्रद्धानुसार दान-पुण्य भी अवश्य करना चाहिये। जिस समय व्रत कथा सुनें उस समय हाथ में गेंहू या बाजरा आदि अन्न के दाने रखें।

व्रत कथा

एक बार की बात है जब राम, सीता और लक्ष्मण वनवास पर थे। वन में चलते-चलते भगवान राम ने थोड़ा विश्राम करने का विचार किया। वहीं पास में एक बुढिया रहती थी, भगवान राम, लक्ष्मण और माता सीता बुढ़िया के पास पंहुच गये। बुढ़िया उस समय सूत कात रही थी, बुढिया ने उनकी आवभगत की और उन्हें स्नान ध्यान करवा भोजन करने का आग्रह किया। इस पर भगवान राम ने कहा माई मेरा है। हंस भी भूखा है पहले इसके लिये मोती ला दो। ताकि फिर मैं भी भोजन कर सकूं। बुढ़िया मुश्किल में पड़ गई। लेकिन घर आये मेहमानों का निरादर भी नहीं कर सकती थी।

वह दौड़ी-दौड़ी राजा के पास गई और उनसे उधार में मोती देने की कही। राजा को मालूम था कि बुढिया की हैसियत नहीं है। लौटाने की लेकिन फिर भी उसने तरस खाकर बुढिया को मोती दे दिया। अब बुढ़िया ने वो मोती है। हंस को खिला दिया जिसके बाद भगवान श्री राम ने भी भोजन किया। जाते-जाते भगवान राम बुढिया के आंगन में मोतियों का एक पेड़ लगा गये। कुछ समय बाद पेड़ बड़ा हुआ मोती लगने लगे बुढ़िया को इसकी सुध नहीं थी। जो भी मोती गिरते पड़ोसी उठाकर ले जाते।

एक दिन बुढिया पेड़ के नीचे बैठी सूत कात रही थी की पेड़ से मोती गिरने लगे बुढ़िया उन्हें समेटकर राजा के पास ले गई। राजा हैरान कि बुढ़िया के पास इतने मोती कहां से आये। बुढ़िया ने बता दिया की उसके आंगन में पेड़ है। अब राजा ने वह पेड़ ही अपने आंगन में मंगवा लिया। लेकिन भगवान की माया अब पेड़ पर कांटे उगने लगे एक दिन एक कांटा रानी के पैर में चुभा तो यह पीड़ा राजा से सहन न हो सकी, उसने तुरंत पेड़ को बुढ़िया के आंगन में ही लगवा दिया और पेड़ पर प्रभु की लीला से फिर से मोती लगने लगे जिन्हें बुढ़िया प्रभु के प्रसाद रुप में बांटने लगी।

अक्षय तृतीया व्रत

(पितरों की आत्मशांति, अक्षय यश एवं कीर्ति हेतु)

माहात्म्य

पुराणों के अनुसार इसी दिन से सत्युग और त्रेतायुग का आरंभ हुआ था। विष्णु धर्मोत्तर पुराण में कहा गया है कि जो व्यक्ति एक भी अक्षय तृतीया का व्रत कर लेता है, वह सब तीर्थों का फल पा जाता है। भगवान् श्रीकृष्ण का कथन है कि अक्षय तृतीया के दिन स्नान, जप, तप, होम, स्वाध्याय, पितृ तर्पण और दान, जो कुछ भी किया जाता है, वह सब अक्षय हो जाता है। इसीलिए इस तिथि को अक्षय तृतीया' के नाम से जाना जाता है। शास्त्रों के अनुसार बहुत से शुभ व पूजनीय कार्य इसी दिन आरंभ किए जाते हैं, जिनसे सुख, समृद्धि और सफलता की प्राप्ति होती है।

इसीलिए नए व्यवसाय, भूमि का क्रय, भवन, संस्था का उद्घाटन, विवाह, हवन आदि इस तिथि को किए जाते हैं। जो मनुष्य इस दिन गंगास्नान करता है, वह सब पापों से मुक्त हो जाता है। भगवान् परशुराम का अवतरण भी इसी दिन होने के कारण उनकी जयंती भी इसी दिन मनाई जाती है। यदि यह व्रत सोमवार, रोहिणी, कृतिका नक्षत्र से युक्त हो, तो अधिक फलदायक माना जाता है। भगवान् बदरीनाथ के पट (द्वार) भी इसी दिन खुलते हैं।

पूजन विधि-विधान

यह व्रत वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया को रखा जाता है। इस दिन उपवास करके भगवान् विष्णु, लक्ष्मी, श्रीकृष्ण (वासुदेव) का पूजन किया जाता है। व्रती को इस दिन प्रातःकालीन कर्मों से निवृत्त होकर स्नान करना चाहिए। विधि-विधानानुसार भगवान् का पूजन तुलसीदल चढ़ाकर धूप-दीप, अक्षत, पुष्प आदि से करने के पश्चात् भीगे हुए चने की दाल का भोग लगाएं।

इसमें मिश्री और तुलसीदल भी मिला लें। फिर भक्तों में प्रसाद वितरित करें। भगवान् की प्यारी वस्तुओं का, जिसका उल्लेख माहात्म्य में किया गया है, दान करें। इस दिन जौ के दान का विशेष माहात्म्य बताया गया है। व्रत के दिन चीनी, गुड़, सत्तू को दान और सेवन का भी विधान है।

व्रत कथा

प्राचीन काल में किसी नगर में महोदय नामक एक बनिया (वैश्य) रहता था जो सत्यवादी, देव एवं ब्राह्मणों का पूजक तथा सदाचारी था। वह प्रायः दुखी और चिंत्ति रहा करता था क्योंकि उसका परिवार बहुत बड़ा और आमदनी कम थी। एक दिन उसने रोहिणी नक्षत्र में वैशाख शुक्लपक्ष में तृतीया का माहात्म्य सुना कि इस तिथि को जो कुछ भी दान किया जाता है, उसका फल अक्षय होता है। यह जानकर उसने गंगा स्नान किया और पितृ एवं देवताओं का तर्पण किया। फिर घर आकर देवी-देवताओं का विधिपूर्वक पूजन किया।

ब्राह्मणों को दान-दक्षिणा के रूप में जौ, गेहूं, सत्तू, दूध, दही, गुड़, घड़ा, पंखा, सोना शक्ति अनुसार शुद्ध मन से प्रदान किए। यद्यपि उसकी पत्नी ने दान का विरोध भी किया, लेकिन वह धर्म-कर्म से विमुख न हुआ। परिणाम यह हुआ कि वह दूसरे जन्म में कुशावतीपुरी नामक नगर का राजा बना और धन संपन्न हुआ। उसने संपन्नता के बल पर बड़े-बड़े यज्ञ पूरे किए, गोदान, स्वर्ण दान दिए। अपनी इच्छानुसार भोगों को भोगा।

अनेक दीन-दुखियों को धन देकर संतुष्ट किया, फिर भी उसका धन कभी समाप्त नहीं हुआ, क्योंकि उसके पास का धन अक्षय भंडार था। अक्षय तृतीया को श्रद्धापूर्वक दान का ही यह सब फल था। इसीलिए हिंदुओं में इस व्रत का बड़ा माहात्म्य है।

❑❑❑

सीता नवमी व्रत

(देवी सीता और प्रभु राम की कृपा प्राप्ति हेतु)

माहात्म्य

सीता जी की जयंती वैशाख शुक्ल नवमी को मनाया जाता है लेकिन भारत के कुछ हिस्सों में फाल्गुन कृष्ण अष्टमी को भी सीता जयंती के रूप में जाना जाता है। रामायण में दोनों ही तिथियां सीता के प्राकाट्य के लिए उचित मानी जाती हैं। इनके पूजन से पृथ्वी दान करने के बराबर फल मिलता है।

सीता जी का जन्म धरती के गर्भ से हुआ था इसीलिए वह माँ अन्नपूर्णा नाम से भी जानी जाती हैं। उनकी कृपा वंदना न केवल मनुष्य के जीवन में सुख समृद्धि की लाती हैं बल्कि उन्हें जीवन को कल्याण की और अग्रसर करती हैं। सीताष्टमी का व्रत मुख्यतः सुहागिन महिलाएं ही करती हैं ताकि इस व्रत से उन्हें माता सीता जैसे ही गुणों की प्राप्ति हो और उनका दांपत्य जीवन में सुख का संचार हो।

पूजन विधि-विधान

वैष्णव भक्त के अतिरिक्त अन्य सम्प्रदाय के लोग भी सीता नवमी के दिन व्रत रखकर पूजा-पाठ करते हैं। सीता नवमी की पूजा करने हेतु अष्टमी के दिन ही तैयारियां शुरु कर दें। अष्टमी के दिन घर में साफ-सफाई कर लें। घर में पवित्रता के एक स्थल पर मण्डप बनाएं। उस मण्डप में श्रीराम-जानकी को स्थापित करें। श्रीराम जानकी की एक साथ पूजा करें। विविध प्रकार के फल और प्रसाद से भोग लगाएं। उसके बाद नवमी को विधिवत पूजन कर दशमी को मण्डप विसर्जित कर दें।

व्रत कथा

एक बार मिथिला राज्य में बहुत सालों से बारिश नहीं हो रही थी। वर्षा के अभाव में मिथिला के निवासी और राजा जनक बहुत चिंत्ति थे। उन्होंने ऋषियों से इस विषय पर मंत्रणा की तो उन्होंने कहा कि यदि राजा जनक स्वयं हल चलाएं तो इन्द्र देव प्रसन्न होंगे और बारिश होगी। राजा जनक ने ऋषियों की बात मानकर हल चलाया। हल चलाते समय उनका हल एक कलश से टकराया जिसमें एक सुंदर कन्या थी। राजा निःसंतान थे इसलिए वह बहुत हर्षित हुए और उन्होंने उस कन्या का नाम सीता रखा।

दूसरी कथा

सीता माता के जन्म से जुड़ा एक रहस्य यह भी है कि – सीता राजा जानकी की पुत्री न होकर रावण की पुत्री थी। इसके पीछे कथा प्रचलित है – कि सीता वेदवती का पुर्नजन्म थीं। वेदवती एक सुंदर कन्या थीं और विष्णु की उपासक थीं। साथ ही वेदवती भगवान विष्णु से विवाह करना चाहती थीं। इसके लिये उस सुंदर कन्या ने कठिन तपस्या की और जंगल में कुटिया बना कर रहने लगीं। एक दिन जब वेदवती तपस्या कर रही थीं तभी रावण वहां से गुजरा और उन्हें परेशान करने लगा।

इससे दुखी होकर वेदवती हवन कुंड में कूद गयी। उन्होंने रावण को श्राप दिया कि अगले जन्म में मैं तुम्हारी पुत्री बनकर जन्म लूंगी और तुम्हारी मौत का कारण बनूंगी। इसके बाद मंदोदरी और रावण के यहां एक पुत्री ने जन्म लिया। रावण ने क्रुद्ध होकर उसे गहरे समुद्र में फेंक दिया। उस कन्या को देखकर सागर की देवी वरुणी बहुत दुखी हुई।

वरुणी ने उस कन्या को पृथ्वी माता को दे दिया। धरती की देवी ने इस कन्या राजा जनक और उनकी पत्नी सुनैना को दिया। इस प्रकार सीता धरती की गोद से राजा जनक को प्राप्त हुई थीं। जिस प्रकार सीता माता धरती से प्रकट हुईं उसी प्रकार उनका अंत भी धरती में समाहित होकर ही हुआ था।

❑❑❑

गंगा दशहरा पर्व

(मन के विकार नष्ट करने एवं पितृ शांति के लिए)

माहात्म्य

भविष्य पुराण में लिखा है कि जो मनुष्य इस पर्व के दिन गंगा के पानी में खड़ा होकर दस बार गंगा स्तोत्र पढ़ता है, वह चाहे गरीब हो या अमीर, सामर्थ्यवान हो या असमर्थ, वह गंगा को पूजकर उस फल को पाता है। वह शरीर, वाणी और चित्त से होने वाले दस तरह के पापों से मुक्त हो जाता है। शास्त्रों के अनुसार ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि, हस्त नक्षत्र युक्त के दिन गंगा पूजन, स्नान, ध्यान, उपासना, अन्न और वस्त्रादि का दान आदि करने से कायिक, वाचिक, मानसिक आदि दोषों का नाश होता है। इस दिन शिवलिंग का पूजन करने व रात्रि जागरण करने का भी विधान है, जिसका अनंत फल प्राप्त होता है।

पूजन विधि-विधान

यह पर्व ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष की दशमी को गंगाजल में स्नान करके मनाया जाता है। यदि किसी कारणवश गंगा के जल में स्नान करना संभव न हो, तो किसी भी नदी में स्नान करके इसकी कमी की पूर्ति की जा सकती है। आमतौर पर सामान्य भक्तगण अपने घर में ही स्नान करते समय गंगाजल की कुछ बूंदें डालकर उसे ही गंगाजल मानकर स्नान कर लेते हैं। स्नान के दौरान गंगाजी से भक्तिपूर्वक मन में अर्चना करें। इस दिन गंगा का पूजन का गौरी के पूजन के समान ही करने का विधान है। दीप जलाकर गंगा के जल में प्रवाहित करना एक पुण्य परंपरा मानी जाती है। इस दिन श्रद्धालु पूर्वजों का तर्पण कर जल में गोते लगाते हैं।

पौराणिक संदर्भ

गंगावतरण की कथा का वर्णन वाल्मीकि रामायण, देवी भागवत, महाभारत तथा स्कंद पुराण में मिलता है। पुरातन युग में अयोध्यापति महाराज सगर ने एक बार विशाल यज्ञ का आयोजन किया और उसकी सुरक्षा का भार उन्होंने अपने पौत्र अंशुमान को सौंपा। देवराज इंद्र ने राजा सगर के यज्ञीय अश्व का अपहरण कर लिया, तो यज्ञ के कार्य में रुकावट पैदा हो गई। इंद्र ने घोड़े का अपहरण कर उसे कपिल मुनि के आश्रम में बांध दिया।

घोड़े को खोजते हुए राजा सगर के पुत्र जब कपिल मुनि के आश्रम में पहुंचे, तो कोलाहल सुनकर कपिल मुनि की समाधि टूट गई। परिणामस्वरूप वे क्रोधित हो गए और उनकी क्रोधाग्नि में जलकर राजा के हजारों पुत्र भस्म हो गए। अंशुमान घोड़े की खोज में जब मुनि के आश्रम में पहुंचा, तो वहां महात्मा गरुड़ ने उसे सगर के हजारों पुत्रों के भस्म होने की जानकारी दी। उनकी मुक्ति का मार्ग उन्होंने स्वर्ग से गंगाजी को पृथ्वी पर लाना भी बताया।

चूंकि पहले यज्ञ शुरू करवाना जरूरी था। अतः अंशुमान ने घोड़े को यज्ञ मंडप पहुंचाया और यज्ञ करवाया। फिर राजा सगर को पूरा वृत्तांत बताया। कुछ समय बाद राजा सगर का देहांत हो गया। जीवन पर्यन्त तपस्या करके गंगाजी को पृथ्वी पर लाने का बीड़ा अंशुमान और उसके पुत्र दिलीप ने उठाया, लेकिन उन्हें सफलता नहीं मिली। दिलीप के पुत्र भगीरथ ने जब कई वर्षों तक कठोर तपस्या की, तब कहीं जाकर ब्रह्माजी प्रसन्न हुए और उन्होंने भगीरथ से वर मांगने को कहा। भगीरथ ने गंगाजी को पृथ्वी पर भेजने के लिए निवेदन किया।

गंगा जी का वेग संभालने हेतु भागीरथ जी ने भगवान शंकर को प्रसन्न किया भगवान शंकर की जटाओं से होती हुई देवी गंगा का अवतरण भूमि पर हुआ। बहता हुआ गंगा का जल ऋषि कपिल के आश्रम में पहुंचा और इस प्रकार उनके सभी पुत्र श्राप मुक्त हुए। ब्रह्मा जी ने पुनः प्रकट होकर भागीरथ के कठिन तप से प्रभावित होकर, गंगा जी को भागीरथी नाम से संबोधित किया। इस प्रकार भागीरथ ने अपने पुण्य से पुत्र लाभ पाया।

❑❑❑

वटसावित्री व्रत

(पति की मंगल कामना एवं अखंड सौभाग्य प्राप्ति हेतु)

माहात्म्य

इस व्रत को ज्येष्ठ मास के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी से अमावस्या अथवा पूर्णिमा तक करने का विधान है लेकिन ज्यादातर स्त्रियां इसे अमावस्या को ही करती हैं। यह स्त्रियों का एक महत्त्वपूर्ण पर्व है, इसीलिए सुहागिन स्त्रियां अखंड सौभाग्यवती बनी रहने की कामना से इसे करती हैं। सत्यवान और सावित्री की कथा का इस पर्व से गहरा संबंध है, क्योंकि सावित्री ने वट वृक्ष का पूजन और व्रत करके ही अपने सतीत्व और तप के बल से अपने मृत पति सत्यवान को यमराज से जीतकर पुनः जीवित कर लिया था। यही कारण है कि इस व्रत का नाम वट सावित्री पड़ा। शास्त्रों में कहा गया है कि वट (बड़ / बरगद) वृक्ष के मूल में ब्रह्मा, मध्य में विष्णु और उग्र भाग में भगवान शिव निवास करते हैं।

पूजन विधि-विधान

विधानानुसार यह व्रत केवल स्त्रियों के द्वारा ही किया जाता है, यूं तो इस व्रत को सौभाग्यवती स्त्रियों के लिए ही बताया गया है, लेकिन कुमारी, विधवा, पुत्रवती, अपुत्रवती स्त्रियां भी इस व्रत को करती हैं। व्रती को प्रतिदिन प्रातःकाल नित्य कर्मों से निवृत्त हो स्नान करके, पवित्र होकर, स्वच्छ वस्त्र धारण करने चाहिए। फिर जल से भरा पात्र (घड़ा / कलश) लेकर वट वृक्ष के पास जाकर व्रत का संकल्प लेना चाहिए तथा पात्र का जल जड़ों में डाल देना चाहिए।

वट के तने पर रोली, चंदन का टीका लगाकर चावल, चना, गुड़ आदि चढ़ा दें। विधिवत् पूजन करें। मिट्टी से बने सत्यवान, सावित्री और यमराज की प्रतिमाओं पर रोली, चंदन लगाएं एवं अगरबत्ती, दीपक दिखाएं, फूल से पूजन करें। इसके पश्चात् वृक्ष के तने के चारों ओर कच्चे सफेद सूत के धागों को हलदी में रंग कर सात बार परिक्रमा करते हुए लपेट दें। पूजा व व्रत के समापन के बाद ब्राह्मणों को घर बुलाकर भोजन कराएं तथा दान दक्षिणा दें। यदि भोजन न करा सकें तो ब्राह्मण को बांस की बनी टोकरी में अन्न, फल, वस्त्र आदि रखकर दान देने का विधान है। अंत में सत्यवान-सावित्री की कथा सुनें।

व्रत कथा

सावित्री मद्र देश के राजा अश्वपति की पुत्री थी। बड़ी होने पर सावित्री ने अपने पिता की इच्छानुसार सत्यवान से विवाह कर लिया। विवाह से पूर्व देवऋषि नारद जी ने सावित्री से कहा था कि उसका पति सत्यवान विवाह के पश्चात् सिर्फ एक वर्ष तक ही जीवित रहेगा। किंतु सावित्री सत्यवान को पति रूप में स्वीकार कर चुकी थी इसलिए उन्होंने अपने मन से अंगीकार किये हुए पति का त्याग नहीं किया। सावित्री ने एक वर्ष तक पति व्रत धर्म का पालन किया। उसने पूरे मन से नेत्रहीन सास ससुर और अल्पायु पति की सेवा की।

एक वर्ष समाप्ति के दिन सत्यवान जब प्रतिदिन की तरह जंगल से लकड़ियां लेने गये तो सावित्री भी साथ गयीं। वहां एक सर्प ने सत्यवान को डस लिया। वह बेहोश होकर गिर पड़ा। तभी वहां यमराज प्रकट हो गये और सत्यावान के प्राण लेकर जाने लगे। यह देख सावित्री भी उनके साथ चल दी। सावित्री के पतिव्रता धर्म से प्रसन्न होकर यमराज ने उन्हें वरदान मांगने के लिए कहा। सावित्री ने सास-ससुर के लिए नेत्र, खोया हुआ राज्य और स्वयं के लिए सौ पुत्रों की माता का वरदान मांगा। अपने वचन में बंधे यमराज को उन्हें यह वरदान देना पड़ा और सत्यवान को फिर से जीवित करना पड़ा। सावित्री की इस पुण्य कथा को सुनने तथा पतिव्रता रहने पर महिलाओं के सभी मनोरथ सिद्ध होंगे और सभी विपत्तियां दूर होंगी।

❑❑❑

गुरुपूर्णिमा / व्यासपूर्णिमा व्रत

(गुरु के प्रति सम्मान, श्रद्धा एवं आस्था प्रकट करने के लिए)

माहात्म्य

आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा को व्यास पूजा गुरु पूर्णिमा के रूप में मनाई जाती है। गुरु परंपरा की सिद्धि के लिए परब्रह्म, ब्रह्मा, शक्ति, व्यास, शुकदेव, गौढपाद, गोविंद स्वामी, शंकराचार्य का नाम मंत्र से अवाहनादि पूजन करके अंत में अपने दीक्षा गुरु का देव तुल्य पूजन करना चाहिए। गुरु कृपा से जीवन में ज्ञान-विज्ञान, सुख-आनंद की प्राप्ति होती है। गुरु पूर्णिमा के दिन अपने गुरु की पूजा करने से अज्ञान का अंधकार मिटता है, जीवन कल्याणमय बनता है। गु' यानी अंधेरा, रु' का अर्थ है मिटा देने वाला भाव। जो अज्ञानता के अंधकार को मिटा दे, वही होता है सच्चा और पूर्ण गुरु।

पूजन विधि-विधान

यह व्रत व पूजन आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा को किया जाता है। इस दिन प्रातः काल स्नानादि दैनिक कर्मों से निवृत्त होकर प्रभु पूजा गुरु की सेवा में उपस्थित होकर उन्हें उच्चासन पर बैठाकर पुष्प माला अर्पित करें। फिर संकल्प करके षोडशोपचार से गुरु का पूजन करें, क्योंकि इस दिन गुरु की पूजा देवता के समान करने का विधान है। इस पर्व को श्रद्धा भाव से मनाकर गुरु को यथाशक्ति भेंट अर्पण करें।

फिर उनसे आशीर्वाद प्राप्त करें, ताकि वह फलदायक हो। उसके अलावा शिष्य गुरु से विनम्रतापूर्वक जाने-अनजाने में किए गए दुर्व्यवहार, अहंकार, प्रमाद, हिंसा या अन्य कोई ऐसी भूल, जो अनजाने में ही उससे हो गई हो, उस भूल के लिए क्षमा मांगें। इनके पश्चात् ब्राह्मणों को भोजन कराकर यथाशक्ति दान-दक्षिणा देने का भी विधान है।

व्रत कथा

यह कथा महाभारत में उल्लिखित है - हस्तिनापुर में गंगभट नाम का एक मल्लाह (मछुआरा / धीवर) रहता था एक दिन उसे बड़ी भारी मछली नदी से मिली। उसे घर ले जाकर उसने चीरा, तो उसमें से कन्या निकली उस कन्या का नाम उसने सत्यवती रखा। मछली के पेट से जन्म लेने के कारण उसके शरीर से मछली की दुर्गंध निकलती रहती थी। सत्यवती जब युवती हो गई, तो एक दिन गंगभट उसे नाव के पास बिठाकर किसी आवश्यक कार्य से अपने घर चला गया।

इस बीच वहां पाराशर नाम के एक ऋषी आये और सत्यवती से बोले तुम अपनी नाव में बिठाकर उस पार उतार दो। सत्यवती के सौंदर्य पर ऋषि पराशर मोहित हो गये और विवाह की कामना की सत्यवती ने स्वयं को नीच जाति और शरीर से दुर्गंध आने वाली बताया इस दोष को ऋषि पराशर ने तुरंत दूर कर दिया। इस प्रकार ऋषि पराशर और देवी सत्यवती की संतान महर्षि वेद व्यास का जन्म हुआ। जन्म के समय उस बालक के सिर पर जटाएं थीं, वह यज्ञोपवीत पहने हुए था। उत्पन्न होते ही उसने अपने पिता को नमस्कार किया और हिमालय पर्वत पर चला गया, जहां हिमालय की गुफाओं और बदरीवन में उसने कठोर तप किया।

बाद में बदरीवन में रहते हुए अध्ययन-अध्यापन किया, जिससे उसका नाम बादरायण के नाम से संसार में विख्यात हुआ। उन्होंने महाभारत के अलावा वेद, शास्त्र और पूराणों की भी रचना की। अपनी रचनाओं के माध्यम से वे पूरे विश्व के गुरु माने जाते हैं।। गुरुपूर्णिमा को जन्मे महर्षि वेदव्यास के नामकरण पर ही इस तिथि को व्यासपूर्णिमा भी कहते हैं। चूंकि आदि शंकराचार्य को महर्षि व्यास का अवतार माना जाता है इसलिए व्यासपूर्णिमा के दिन साधु-सन्यासियों द्वारा शंकराचार्य का पूजन किया जाता है।

❑❑❑

नागपंचमी व्रत

(नाग दंश से बचने के लिए)

माहात्म्य

ऐसा जन-विश्वास है कि नाग पचमी के दिन नाग देवता का पूजन करने से वे प्रसन्न होते हैं और आशीर्वाद देकर भक्त की मनोकामनाएं पूर्ण करते हैं। इस कारण उनके कृपा पात्र बन जाने से हमारी सात पीढ़ी तक को सर्प-दंश का भय नहीं रहता। यूं तो अनादि काल से ही देवताओं के साथ नागों के अस्तित्व के संदर्भ मिलते हैं। पुराणों में भी नागों के संबंध में बहुतायत वर्णित सामग्री उपलब्ध है। यहां तक कि उसमें नागों के संसार को नागलोक का नाम दिया गया है। पुराणों में वर्णित है कि समुद्र मंथन से महान कार्य में नागराज वासुकी ने अपना शरीर रस्सी के रूप में समर्पित कर दिया था। देवताओं की माता अदिति की सगी बहन कद्रू के पुत्र होने के रिश्ते से नाग देवताओं के छोटे भाई हैं।

हमारी पृथ्वी का भार शेषनाग के फन के ऊपर धारण किया जाना शास्त्रों में वर्णित है। भगवान विष्णु ने भी अपनी शय्या बनाकर विश्व कल्याण का कार्य पूरा किया है। भगवान शंकर के गले में अनेकों विषधर नाग सदा उनके शरीर की शोभा बढ़ाते रहते हैं, इसीलिए वे नागेंद्रहार कहलाते हैं। नाग पंचमी के आरंभिक इतिहास के संबंध में श्रीवाराह पुराण में लिखा है कि सृजन शक्ति के अधिष्ठाता ब्रह्माजी ने अपने प्रसाद से शेषनाग को अलंकृत किया करने जैसी सेवा के लिए जनता ने उनकी प्रशंसा की थी। कहा जाता है कि तभी से इस पर्व को इस जाति के प्रति श्रद्धा प्रदर्शित करने का प्रतीक मान लिया गया है। यजुर्वेद में भी नामों और पूजन का उल्लेख मिलता है। इस व्रत का माहात्म्य पढ़ने या सुनने मात्र से ही समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं।

पूजन विधि-विधान

यह व्रत श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी को रखा जाता है। इस वत के एक दिन पूर्व यानी चतुर्थी को एक समय भोजन कर पंचमी को पूरे दिन भर का उपवास रखने का विधान है। गरुड़ पुराण के अनुसार व्रती अपने घर के दोनों ओर नागों को चित्रित करके उनकी विधि-विधानानुसार पूजा करें। कुछ स्थानों पर लोग रस्सी से सात गांठें लगाकर उसे सर्प का आकार प्रदान कर पूजते हैं।

चूंकि ज्योतिष विद्या के मतानुसार पंचम तिथि का स्वामी नाग को माना जाता है, इसलिए भक्ति भाव के साथ गंध, पुष्प, धूप, कच्चा दूध, खीर, भीगे हुए बाजरे और घी से पूजन करें। सुगंधित पुष्प और दूध सर्पो को अति प्रिय होने के कारण इस दिन सपेरे नाग को दूध पिलाने के लिए कहते हैं और वस्त्र, अन्न और धन भेंट स्वरुप पाते हैं। फिर ब्राह्मणों को घी युक्त खीर और लड्डुओं का भोजन कराएं। दूध या दूध से बने पदार्थ भी खिलाएं। इस व्रत के दिन सूर्यास्त के बाद भूमि खोदना वर्जित किया

व्रत कथा

इसी गांव में एक किसान परिवार अपने पुत्र एवं पुत्री के साथ आनंदपूर्वक रहता था। एक दिन जब अपना खेत जोत रहा था, तो एक सर्पिणी के तीन बच्चे हल के नीचे कुचल कर मर गए। सर्पिणी ने बदला लेने के लिए किसान और उसके पुत्र को रात्रि में डस लिया। सुबह जब किसान की पुत्री ने देखा कि भाई और पिता को सर्पिणी ने डस लिया है, तो वह सर्पिणी के लिए दूध से भरा कटोरा लेकर आई और उस सर्पिणी से अपने पिता के अपराध की क्षमा मांगने लगी। इससे सर्पिणी का क्रोध प्रेम में बदल गया। उसने प्रसन्न होकर उसके पिता और भाई का जहर वापस खींचकर उन्हें जीवित कर दिया। उस दिन श्रावण मास शुक्ल पक्ष की पंचमी थी। बस, उसी दिन से नाग पूजा की परंपरा चल पड़ी।

❒❒❒

रक्षा बंधन पर्व

(भाई के प्रति बहन के पवित्र स्नेह एवं रक्षा हेतु)

माहात्म्य

भारतीय त्यौहारों में रक्षाबंधन का पर्व आध्यात्मिक, धार्मिक व ऐतिहासिक महत्त्व रखता है। रक्षाबंधन प्रतीक है, भाई-बहन के पवित्र स्नेह और विश्वास का। इस पर्व के विषय में भविष्य पुराण में लिखा है कि - युधिष्ठिर ने श्रीकृष्ण से ऐसा रक्षा विधान पूछा, जिसके करने से मनुष्य भयहीन हो जाये तो उन्होंने बताया कि रक्षाबंधन पर्व सब रोगों का नाशक तथा सब अशुभों को नष्ट करने वाला है। इसे वर्ष में एक बार विधि पूर्वक कर लेने से वर्ष भर शत्रुओं से रक्षा रहती है। इसको देवराज इंद्र की जीत के लिए इंद्राणी ने अपनाया था। जिसके फलस्वरूप इंद्र की दोनों लोकों में जीत हुई। यह त्यौहार विजय, सुख, पुत्र, पौत्र, धन और आरोग्य देने वाला है। इस दिन भाई को राखी बांधते हुए बहन अपेक्षा करती है कि वह सब प्रकार से उसकी रक्षा करेंगा।

पूजन विधि-विधान

यह पर्व प्रतिवर्ष श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है। इस दिन प्रातःकाल सूर्योदय के समय श्रुति और स्मृतियों के विधानानुसार स्नान करें। साफ पानी से देवताओं और पितरों का तर्पण कर फूल, धूप, मौली, रोली, चावल, सरसों, नारियल आदि का चढ़ावा चढ़ाएं। पूजन से पूर्व घर की शुद्धि अवश्य करें। इससे पाप एवं दुष्कर्मों का नाश होता है। निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए रक्षा सूत्र बांधें। मंत्रोच्चारण से रक्षा बंधन का विधान किया है, वह इस प्रकार है -

येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः। तेन त्वामनुबध्नामि रक्षे माचल माचल।।

अर्थात जिस रक्षा से महाबली दानवेन्द्र बलि बांधा गया था, तुझे मैं उसी से बांधता हूं। रक्षे! तुम हर तरह अचल रहना। जो इस विधि से रक्षाबंधन धारण करता है, वह एक वर्ष तक निरापद एवं सुखी रहता है। रक्षाबंधन का निषिद्ध काल भद्रा बताया गया है, इसलिए इस काल में रक्षाबंधन नहीं करना चाहिए। भद्रा में रक्षाबंधन करने से ऐसा माना जाता है कि राजा की मृत्यु होती है और परिवार का अशुभ होता है। सामान्य परंपरा के अनुसार रक्षाबंधन के दिन बहन भाई को तिलक लगाकर हाथ में नारियल, रूमाल, दक्षिणा (मुद्रा) रखती है। फिर राखी बांधकर मिष्ठान खिलाकर मुख मीठा करती है।

पौराणिक संदर्भ

इस पर्व की कथा का उल्लेख भविष्य पुराण में इस प्रकार किया गया है - प्राचीन काल में एक बार देवताओं और दैत्यों के बीच युद्ध शुरू हुआ, तो वह बारह वर्षों तक चलता रहा। अंत में देवताओं की पराजय हुई तो वे सब अमरावती छोड़कर चले गए और विजेता दैत्यराज ने तीनों लोकों पर अपना अधिकार कर लिया। उसने सभी को यज्ञ कर्म न करने और अपनी पूजा करने का आदेश दे दिया। धर्म का नाश होते ही जब देवताओं का बल घटने लगा, तो इंद्र घबराकर अपने गुरु बृहस्पति के पास पहुंचे और उनसे इस विपत्ति के शमन का उपाय पूछा। आचार्य बृहस्पति ने इंद्र से श्रावण पूर्णिमा को रक्षा विधान संपन्न कराया।

इंद्राणी ने इस दिन द्विजों से स्वस्तिवाचन करवाकर रक्षा सूत्र लिया और इंद्र की दाहिनी कलाई में बांधकर उन्हें युद्ध के लिए भेज दिया। रक्षाबंधन के प्रभाव से इंद्र की हुई। रक्षाबंधन की दूसरी कथा के अनुसार एक बार भगवान् श्रीकृष्ण के हाथ में चोट लगने के कारण खून निकलने लगा। यह देखकर द्रौपदी ने तुरंत अपनी साड़ी फाड़कर कृष्ण के हाथ में बांध दी। बस, इसी बंधन के ऋणी श्रीकृष्ण ने दुःशासन-दुर्योधन द्वारा चीरहरण के समय द्रौपदी की लाज बचाई। द्रौपदी ने भगवान् श्रीकृष्ण को अपना भाई माना था, इसलिए उन्होंने जीवन भर द्रौपदी की रक्षा की।

❑❑❑

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व

(भगवान् श्रीकृष्ण के प्रति श्रद्धा एवं सुख-समृद्धि हेतु)

माहात्म्य

संपूर्ण भारत में भाद्रपद मास में कृष्ण पक्ष की अष्टमी के दिन भगवान् श्रीकृष्ण का जन्म बड़ी श्रद्धा और धूमधाम से मनाया जाता है। इस दिन लोग उपवास रखते हैं। शास्त्रों में बताया गया है कि श्रीहरि के अवतरण काल में अन्न ग्रहण नहीं करना चाहिए। जन्माष्टमी के अवसर पर मंदिरों को विशेष रूप से सजाया जाता है और भगवान् श्रीकृष्ण से संबंधित झांकिया निकाली जाती हैं।

इस दिन श्रीकृष्ण की जन्मभूमि मथुरा में विशेष आयोजन होते हैं। महाराष्ट्र में संध्या के समय दही हांडी प्रतियोगिता आयोजित कर जन्मोत्सव मनाने का प्रचलन काफी प्रसिद्ध है। इस दिन श्रीकृष्ण ने रोहिणी नक्षत्र में अर्द्धरात्रि को मथुरा में माता देवकी की कोख से जन्म धारण करके पापी कंस और उसके दुष्ट असुरों का संहार किया था और भक्तों की रक्षा कर उनका उद्धार किया था। जो व्यक्ति इस व्रत का पालन करता है वह सौ जन्मों के पापों से मुक्त हो जाता है।

पूजन विधि-विधान

इस दिन प्रातःकाल दैनिक नित्यकर्मों, स्नानादि से निवृत्त होकर व्रती को इस प्रकार संकल्प लेना चाहिए कि - मैं श्रीकृष्ण भगवान् की प्रीति के लिए और अपने समस्त पापों के शमन के लिए प्रसन्नता पूर्वक जन्माष्टमी के दिन उपवास रखकर व्रत को पूर्ण करूंगा। अर्द्धरात्रि में पूजन करने के पश्चात् दूसरे दिन भोजन करूंगा।

व्रती को इस दिन यम नियमों का पालन करते हुए निर्जल व्रत रखना चाहिए। इस दिन घरों और मंदिरों में भगवान श्रीकृष्ण के भजन, कीर्तन उनकी लीलाओं के दर्शन किये जाते हैं। संध्या के समय झूला झुलाया जाता है। आरती के बाद दही, माखन, पंजीरी व उसमें मिले सूखे मेवे का मिला प्रसाद भोग लगाकर भक्तों में बांटा जाता है। दूसरे दिन ब्राह्मणों को प्रेम से भोजन कराकर स्वयं भी पारण किया जाता है।

पौराणिक संदर्भ

बात द्वापर युग की है। मथुरा नगरी में राजा उग्रसेन का राज्य था। उनका पुत्र कंस परम प्रतापी होने के बावजूद अत्यंत निर्दयी स्वभाव का था। जिसके अत्याचारों से आमजन दुःखी था। कंस अपनी बहन देवकी से अधिक स्नेह करता था। देवकी का विवाह वासुदेव से संपन्न हुआ ही था कि आकाशवाणी ने कंस को चेताया कि तुम्हारी मृत्यु का कारण तुम्हारी ही बहन का आठवां पुत्र होगा।

इस पर कंस ने वासुदेव और देवकी को करागार में डाल दिया। वहां उसने दोनों की सात संतानों की हत्या भी कर दी। आठवीं संतान को कंस से बचाने के लिए वसुदेव अर्द्धरात्रि में बालक को गोकुल में नंद जी के यहां छोड़ आये। देवी और वसुदेव की यही आठवीं संतान भगवान कृष्ण का अवतार थी। कंस को अपने सूत्रों से ज्ञात हो गया था कि कृष्ण का लालन-पालन गोकुल में नंद जी के यहां हो रहा है। उनका वध करने के लिए कंस ने कई राक्षस, पूतना और असुरों को भेजा परंतु उन सबका संहार भगवान कृष्ण ने कर दिया। बचपन में भगवान कृष्ण की अलौकिक लीलाओं ने सबको चकित कर दिया था।

भगवान कृष्ण ने ही आगे जाकर निर्दयी कंस का संहार किया और अपने नाना उग्रसेन को फिर से राजगद्दी पर बिठाया और अपने माता-पिता को कारागार से छुड़ाया। भगवन श्रीकृष्ण के इस दिव्य रूप को देखकर देवकी और वसुदेव उनके सामने नतमस्तक हो गये। ऐसे दिव्य स्वरुप भगवान श्रीकृष्ण की श्रद्धा में इस दिन का व्रत किया जाता है।

❑❑❑

हरितालिका व्रत

(स्त्रियों का व्रतः सुयोग्य पति पाने एवं पति की दीर्घायु हेतु)

माहात्म्य

इस व्रत के द्वारा कुमारी कन्याएं अपने भावी सुंदर पति के लिए भगवान् से प्रार्थना करती हैं, ताकि उन्हें मनचाहा पति मिल जाए। सुहागिनें अपने स्वामी की लंबी आयु पाने और सौभाग्य की रक्षा हेतु इस व्रत का पालन बडी कठोरता से करती हैं। बहुत स्त्रियां तो निर्जला व्रत रहकर इसका पारण करती हैं।

पूजन विधि-विधान

यह व्रत भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया को रखा जाता है। यदि तृतीया दिन हस्त नक्षत्र हो तो इसका महत्त्व ओर अधिक बढ़ जाता है। तृतीया के दिन प्रातःकाल दैनिक क्रिया, स्नानादि से निपट कर रखने का विधान है। स्त्रियां उमा - **महेश्वर सायुज्य सिद्धये हरतालिका व्रत महं करिष्ये** संकल्प करके कहें कि हरितालिका व्रत सात जन्म तक राज्य और अखंड सौभाग्य वृद्धि के लिए उमा का व्रत करती हूं। फिर गणेश की पूजा करके गौरी सहित महेश्वर का पूजन करें।

घर को केले के पत्तों, स्तंभों से सजाकर, मंडप तोरण बनाएं। दिन के समय और फिर सायंकाल शिव-पार्वती की मूर्ति का पूजन, अर्चना विधि-विधानानुसार करके सुहाग की सारी वस्तुएं रखकर मां पार्वताजी को चढ़ाएं। इसके पश्चात पति की दीर्घायु की प्रार्थना करें। ब्राह्मण अथवा पुरोहित को भोजन कराकर दक्षिणा देने का विधान है। अंत में पति के साथ कथा सुनें, फिर व्रत का पारण करें।

व्रत कथा

एक समय देवर्षि नारद ने हिमालय से कहा - गिरिराज! आपकी कन्या ने अनेक वर्षों तक कठोर तप किया है, उसी से प्रसन्न होकर भगवान् विष्णु आपकी सुपुत्री से विवाह करने की इच्छा रखते हैं। इसलिए मैं आपकी इच्छा जानने के लिए आया हूं।

हिमालय ने मुदित होकर कहा- देवर्षि! इसमें मुझे क्या आपत्ति हो सकती है। इस पर नारद जी ने विष्णुजी को इस विवाह की स्वीकृति बता दी। जब पार्वती को यह बात मालूम हुई, तो वह बहुत दुखी होकर प्राण त्यागने की सोचने लगी। यह देखकर उनकी एक सखी ने उन्हें घने जंगल में जाकर भगवान् शंकर की तपस्या करने की सलाह दी। सच्चे हृदय से भगवान शंकर को वरण करने वाली पार्वती अपनी सखी के साथ घनघोर जंगल में तपस्या करने के लिए चल पड़ीं।

इधर वचन भंग की चिंता में हिमालयराज मूर्छित हो गए। अब तो सभी राजकर्मचारी पार्वती की खोज में लग गए। भाद्रपद शुक्ल तृतीया के दिन व्रत उपवास करके शिव लिंग का पूजन और रात्रि जागरण करने से पार्वती पर प्रसन्न होकर भगवान् शिव पूजा स्थल पर प्रकट हुए और उन्हें अपनी अर्धांगिनी स्वीकार कर लिया। फिर वे कैलास पर्वत पर चले गए।

अगले दिन प्रातः काल जब पार्वती पूजन सामग्री को नदी में प्रवाहित कर रही थीं, उसी समय हिमालयराज खोजते हुए वहां आ पहुंचे। पुत्री के मन की बात जानकर उन्होंने शास्त्रोक्त विधि-विधानानुसार शिव-पार्वती का विवाह कराया। फिर शिवजी ने कहा- हे पार्वती! इस व्रत को जो मेरी आराधना करके पूरा करेंगा, उस व्रती कुमारी को मैं मनोवांछित फल दूंगा। जो विवाहित स्त्री परम श्रद्धापूर्वक इस व्रत को करेंगी, उसे तुम्हारे समान अचल सुहाग मिलेगा। तब से इस व्रत को मनाने का प्रचलन आरंभ हआ।

❒❒❒

ऋषि पंचमी व्रत

(कायिक, वाचिक, मानसिक पापों से छुटकारा पाने के लिए)

माहात्म्य

इस व्रत को करने से कायिक, वाचिक और मानसिक जो-जो पाप हों, वे सब विलीन हो जाते हैं यानी सभी पापों की निवृत्ति होती है, वे नष्ट हो जाते हैं। यह व्रत जाने-अनजाने में हुए पापों की निवृत्ति के लिए स्त्री तथा पुरुष को समान रूप से अवश्य ही करना चाहिए। ऋषि पंचमी व्रत को करने से सुख, रूप-लावण्य से परिपूर्ण शरीर, पुत्र-पौत्रादि से संपन्न होते हैं। सभी प्रकार के आनंद और संपत्तियों की प्राप्ति होती है। आपत्तियां, परेशानियां टल जाती हैं। इस लोक में सदा सुख से रहने को मिलता है और परलोक में अक्षय पद की प्राप्ति होती है। इसके करने से व्रती को नरक की यातनाओं से छुटकारा मिल जाता है।

पूजन विधि-विधान

यह व्रत भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी को रखा जाता है। इस व्रत को प्रायः स्त्रियां पति की मंगल कामना के लिए करती हैं। पुरुष भी अपनी पत्नी की मंगल कामना के लिए इसे कर सकते हैं। इस दिन व्रती स्त्री दोपहर के समय किसी नदी या सरोवर के स्वच्छ जल से स्नान करके अपामार्ग (चिचिड़ा) वनस्पति से प्रार्थना करती है कि वह उसे आयु, बल, पशु, प्रज्ञा और मेधा दें। फिर उसी वनस्पति से 108 दातुन लेकर दांत साफ करें। इसके पश्चात् पंचगव्य का सेवन करें।

घर में वेदी बनाकर उसे गोबर से लीप दें। रंगों से सर्वतोभद्र मंडप बनाकर उस पर मिट्टी या तांबे का घड़ा पानी से भरकर रख दें। उसमें पंचरत्न, फूल, गंध और अक्षत रखकर वस्त्र से ढक दें। फिर अरुन्धती सहित सप्तऋषियों का षोडशोपचार से पूजन करें और यह प्रार्थना करें कि वे मेरे दिए अर्घ्य जल को स्वीकार करके प्रसन्न हों। ब्राह्मण को पकवान दान करें। व्रत में अनाज, दूध, दही, नमक, चीनी आदि नहीं खाएं, केवल फलाहार करें। इस व्रत में केवल शाक का ही भोजन करना चाहिए तथा ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए।

व्रत कथा

इस व्रत की कथा का उल्लेख श्रीब्रह्मांड पुराण में इस तरह से हुआ है - विदर्भ देश की राजधानी में उत्तंक नाम का एक ब्राह्मण रहता था। उसकी सुशीला नामक पत्नी बड़ी पतिव्रता थी। सुशीला की दो संतानों में एक पुत्र और एक पुत्री थी। पुत्र बहुत ही ज्ञानी, सद्‌गुणों से विभूषित था। ब्राह्मण ने पुत्री के युवा होने पर समान कुल के योग्य वर के साथ उसका विवाह कर दिया परंतु शीघ्र ही प्रारब्ध योग से वह विधवा हो गई। अपनी विधवा पुत्री को लेकर दुखी ब्राह्मण-दंपती गंगा के तट पर कुटिया बना कर रहने लगा।

एक दिन एकाएक उसके शरीर में कीड़े पड़ने शुरू हो गये और उसका सारा शरीर कृमिमय हो गया। उसकी यह दशा देख माँ दुखी होकर रोने लगी। उसने इस दुर्गति का कारण अपने पति से जानना चाहा, तो उसने समाधि लगाकर बताया - पूर्व जन्म में रजस्वला होकर भी उसने भोजनादि पात्रों को स्पर्श कर दिया था।

इसी पाप के कारण इसका शरीर कृमिमय हो गया। दूसरों को ऋषि-पंचमी का व्रत करते देखकर भी इस जन्म में इसने यह व्रत नहीं किया। हमारे शास्त्रों में लिखा है कि रजस्वला स्त्री के भोजनादि के पात्रों का स्पर्श नहीं करना चाहिए, क्योंकि उस स्थिति में वह अपवित्र होती है। ब्राह्मण ने आगे बताया कि यदि उसकी पुत्री शुद्ध मन से अब भी ऋषि-पंचमी का व्रत धारण करें, तो इसकी सारी तकलीफें और रोग दूर हो जाएंगे और यह अगले जन्म में अखंड सौभाग्य को प्राप्त कर सकती है। उसने अपने पिता की बात को सुना और यह व्रत विधि-विधान से किया और उसके सभी दुख दूर हो गये।

❑❑❑

राधा अष्टमी व्रत

(राधाजी का अशीर्वाद प्राप्त करने के लिए)

माहात्म्य

भाद्रपद माह की शुक्ल अष्टमी को राधाष्टमी मनाई जाती है। शास्त्रों में इस तिथि को श्री राधाजी का प्राकट्य दिवस माना गया है। राधा अष्टमी एक बेहद प्राचीन उत्सव है। यह त्यौहार भगवान कृष्ण की जयंती के रूप में उसी उत्साह से मनाया जाता है। राधा और कृष्ण के बीच प्रेम अनन्त है और केवल सभी संसारिक अशुद्धियों पर काबू पाने के बाद ही समझा जा सकता है। यह अनूठा संगम दर्शाता है कि एक व्यक्ति की आत्मा परम आत्मा के साथ विलीन हो जाती है। राधा व्यक्तिगत आत्मा का प्रतीक है और भगवान कृष्ण सार्वभौमिक आत्मा हैं। यह ज्ञात है कि राधा और कृष्ण एक साथ मौजूद हैं और उन्हें राधाकृष्ण कहा जाता है।

हिंदू ग्रंथों में इसका उल्लेख किया गया है, राधा अष्टमी व्रत रखने वाले व्यक्ति को एक समृद्ध और सुखी जीवन मिलेगा। व्यक्ति अपने सभी बाधाओं को दूर केरगा, भौतिक इच्छाओं को प्राप्त करेगा और अंत में उद्धार प्राप्त करेंगा। यह माना जाता है कि राधा अष्टमी उपवास और देवी दुर्गा की पूजा करने के बाद, व्यक्ति अपने सभी पापों से मुक्त हो जाएगा। उनके दिमाग को नकारात्मक और बुरे विचारों से हटा दिया जाएगा और वह आध्यात्मिक आनंद प्राप्त करेगा।

पूजन विधि-विधान

इस दिन प्रातः सूर्योदय से पूर्व उठकर स्नानादि क्रियाओं से निवृत होकर श्री राधा जी का विधिवत पूजन करना चाहिए । इस दिन श्री राधा कृष्ण मंदिर में ध्वजा, पुष्पमाला,वस्त्र, पताका, तोरणादि व विभिन्न प्रकार के मिष्ठान्नों एवं फलों से श्री राधा जी की स्तुति करनी चाहिए।

मंदिर में पांच रंगों से मंडप सजाएं, उनके भीतर षोडश दल के आकार का कमलयंत्र बनाएं, उस कमल के मध्य में दिव्य आसन पर श्री राधा कृष्ण की युगलमूर्ति पश्चिमाभिमुख करके स्थापित करें। बंधु बांधवों सहित अपनी सामर्थ्यानुसार पूजा की सामग्री लेकर भक्तिभाव से भगवान की स्तुति गाएं। दिन में हरिचर्चा में समय बिताएं तथा रात्रि को नाम संकीर्तन करें। एक समय फलाहार करें। मंदिर में दीपदान करें।

व्रत कथा

राधा का पृथ्वी पर आना एक सामान्य घटना नहीं है। गोलोक में रहने वाली राधा को एक शाप के कारण पृथ्वी पर आकर कृष्ण का वियोग सहना पड़ा। इस संदर्भ में ब्रह्मवैवर्त पुराण में एक कथा आई है। एक बार राधा गोलोक से कहीं बाहर गयी थी उस समय श्री कृष्ण अपनी विरजा नाम की सखी के साथ विहार कर रहे थे। संयोगवश राधा वहां आ गई।

विरजा के साथ कृष्ण को देखकर राधा क्रोधित हो गईं और कृष्ण एवं विरजा को भला बुरा कहने लगी। लज्जावश विरजा नदी बनकर बहने लगी। कृष्ण के प्रति राधा के क्रोधपूर्ण शब्दों को सुनकर कृष्ण का मित्र सुदामा आवेश में आ गया। सुदामा कृष्ण का पक्ष लेते हुए राधा से आवेशपूर्ण शब्दों में बात करने लगा। सुदामा के इस व्यवहार को देखकर राधा नाराज हो गई।

राधा ने सुदामा को दानव रूप में जन्म लेने का शाप दे दिया। क्रोध में भरे हुए सुदामा ने भी हित अहित का विचार किए बिना राधा को मनुष्य योनि में जन्म लेने का शाप दे दिया। राधा के शाप से सुदामा शंखचूर नाम का दानव बना जिसका वध भगवान शिव ने किया। सुदामा के शाप के कारण राधा को मनुष्य रूप में जन्म लेकर धरती पर आना पड़ा।

❑❑❑

अनंत चतुर्दशी व्रत

(अनंत फल प्राप्ति एवं कष्टों के निवारण के लिए)

माहात्म्य

यह व्रत भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी (चौदस) को रखा जाता है। इस व्रत को करने और भगवान विष्णु का पूजन करने से व्रती की समस्त मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं, अनंत कष्टों से मुक्ति मिलती है। व्रती के सब पाप नष्ट होते हैं। इसीलिए यह अनंत व्रत माना जाता है। भक्त इसे धन, धान्य, पुत्रादि की कामना से भी करते हैं। इस दिन वेद ग्रंथों का पाठ करके भक्ति की स्मृति का डोरा बांधा जाता है, जो भगवान् विष्णु को प्रसन्न करने तथा अनंत फलदायक माना गया है।

पूजन विधि-विधान

व्रती को प्रातःकाल नित्य कर्मों से मुक्त हो, स्नानादि कर भगवान् विष्णु का ध्यान करना चाहिए। फिर सर्वतोभद्र मंडल बनाकर उस पर कलश की स्थापना करें। इसके पश्चात् अक्षत, दूर्वा तथा शुद्ध सूत से बने और हल्दी से रंगे हुए चौदह गांठ के अनंत को सम्मुख रखकर हवन किया जाता है। इसके उपरांत भगवान् का ध्यान करते हुए सूत से बने उस अनंत को व्रती अपनी भुजा पर बांध ले। यदि पुराना अनंत बंधा हो, तो उसे निकाल दे। यह अनंत फलदायी सिद्ध होगा। पुरोहित या ब्राह्मण को सम्मानपूर्वक पकवान और मिष्ठान का भोजन कराकर सामर्थ्य के अनुसार दान-दक्षिणा देकर प्रसन्नतापूर्वक विदा करें। फिर स्वयं नमक रहित एक वक्त का भोजन करें।

व्रत कथा

पुराने समय में सुमंत नाम के एक ऋषि हुआ करते थे उनकी बेटी सुशीला थी। सुशीला की सौतेली मां का स्वभाव कर्कश था। कर्कशा ने सुशीला को बड़े कष्ट दिए। काफी प्रयासों के बाद कौण्डिन्य ऋषि से सुशीला का विवाह संपन्न हुआ।

लेकिन यहां भी सुशीला को दरिद्रता का ही सामना करना पड़ा। उन्हें जंगलों में भटकना पड़ रहा था। एक दिन उन्होंने देखा कि कुछ लोग अनंत भगवान की पूजा कर रहे हैं और हाथ में अनंत रक्षासूत्र भी बांध रहे हैं। सुशीला ने उनसे अनंत भगवान की उपासना के व्रत के महत्व को जानकर पूजा का विधि विधान पूछा और उसका पालन करते हुए अनंत रक्षासूत्र अपनी कलाई पर भी बांध लिया। देखते ही देखते उनके दिन फिरने लगे। कौण्डिन्य ऋषि में अंहकार आ गया कि यह सब उन्होंने अपनी मेहनत से निर्मित किया है।

एक साल बाद फिर अनंत चतुर्दशी आई, सुशीला अनंत भगवान का शुक्रिया कर उनकी पूजा आराधना कर अनंत रक्षासूत्र को बांध कर घर लौटी तो कौण्डिन्य को उसके हाथ में बंधा वह अनंत धागा दिखाई दिया और उसके बारे में पूछा। सुशीला ने खुशी-खुशी बताया कि अनंत भगवान की आराधना कर यह रक्षासूत्र बंधवाया है, इसके बाद ही हमारे दिन अच्छे आए हैं। इस पर कौण्डिन्य खुद को अपमानित महसूस किया और सोचने लगे कि उनकी मेहनत का श्रेय सुशीला अपनी पूजा को दे रही है।

उन्होंने उस धागे को उतरवा दिया। इससे अनंत भगवान रूष्ट हो गये और देखते ही देखते कौण्डिन्य फिर दरिद्रता आ पड़ी। तब एक विद्वान ऋषि ने उन्हें उनके किए का अहसास करवाया और कौण्डिन्य को अपने कृत्य का पश्चाताप करने की कही। लगातार चौदह वर्षों तक उन्होंने अनंत चतुर्दशी का उपवास रखा उसके पश्चात भगवान श्री हरि प्रसन्न हुए और कौण्डिन्य व सुशीला फिर से सुखपूर्वक रहने लगे। मान्यता है कि पांडवों ने भी अपने कष्ट के दिनों (वनवास) में अनंत चतुर्दशी के व्रत को किया था। जिसके पश्चात उन्होंने कौरवों पर विजय हासिल की। यहीं नहीं सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र के दिन भी इस व्रत के पश्चात फिरे थे।

❒❒❒

वैभव लक्ष्मी व्रत

(धन-धान्य और वैभव प्राप्ति हेतु)

माहात्म्य

पूजा-उपासना तो जैसे भारतवासियों की सांसों में बसा हुआ है। शायद की ऐसा कोई दिन गुजरता होगा, जब कोई खास पूजा का संयोग न बनता हो। सप्ताह के हर दिन के अनुसार भी विशेष पूजा का विधान है। शुक्रवार को लक्ष्मी देवी का व्रत रखा जाता है। इसे वैभव लक्ष्मी व्रत भी कहा जाता है।

पूजा-उपासना तो जैसे भारतवासियों की सांसों में बसा हुआ है। शायद की ऐसा कोई दिन गुजरता होगा, जब कोई खास पूजा का संयोग न बनता हो। सप्ताह के हर दिन के अनुसार भी विशेष पूजा का विधान है। शुक्रवार को लक्ष्मी देवी का व्रत रखा जाता है। इसे वैभव लक्ष्मी व्रत भी कहा जाता है।

इस व्रत को स्त्री या पुरुष, कोई भी कर सकता है। इस व्रत को करने से उपासक को धन और सुख-समृद्धि की प्राप्ति होती है। घर-परिवार में लक्ष्मी का वास बनाए रखने के लिए भी यह व्रत उपयोगी है। इस दिन स्त्री-पुरुष लक्ष्मी की पूजा करते हुए सफेद फूल, सफेद चंदन आदि से पूजा करते हैं। खीर से भगवान को भोग लगाकर प्रसाद ग्रहण करते हैं।

इस व्रत के दिन उपासक को एक समय भोजन करना चाहिए। अगर कोई व्यक्ति माता वैभव लक्ष्मी का व्रत करने के साथ ही लक्ष्मी श्री यंत्र को स्थापित कर उसकी नियमित रूप से पूजा करता है, तो उसके व्यापार में वृद्धि ओर धन में बढोतरी होती है।

पूजन विधि-विधान

वैभव लक्ष्मी का व्रत शुक्रवार के दिन करना चाहिए। व्रती को शुक्रवार के दिन सभी कार्य संपन्न कर पूजा के लिए घर में लक्ष्मी जी की मूर्ति या श्री यंत्र को लाल रंग के कपड़े पर रखकर स्थापित करना चाहिए। माता की प्रतिमा या श्री यंत्र के सामने बैठकर लक्ष्मी जी के आठ श्री रूपों का ध्यान करना चाहिए।

इसके बाद पूजा की थाली में एक मुट्ठी चावल रखकर, जल से भरा हुआ तांबे का लोटा लेना चाहिए। थाली में एक या दो सोने का आभूषण और थोड़े लाल रंग के फूल भी रखने चाहिए। आटे के चुरमें में कुछ फल काटकर पूजा का प्रसाद तैयार कर, पूरे विधि-विधान से लक्ष्मी जी की पूजा करनी चाहिए तथा वैभव लक्ष्मी की कथा सुननी चाहिए और प्रसाद बांटना चाहिए।

व्रत कथा

किसी शहर में अनेक लोग रहते थे। सभी अपने-अपने कामों में लगे रहते थे। किसी को किसी की परवाह नहीं थी। भजन-कीर्तन, भक्ति-भाव, दया-माया, परोपकार जैसे संस्कार कम हो गए। शहर में बुराइयां बढ़ गई थीं। इनके बावजूद शहर में कुछ अच्छे लोग भी रहते थे।

ऐसे ही लोगों में शीला और उनके पति की गृहस्थी मानी जाती थी। शीला धार्मिक प्रकृति की और संतोषी स्वभाव वाली थी। उनका पति भी विवेकी और सुशील था। शीला और उसका पति कभी किसी की बुराई नहीं करते थे और प्रभु भजन में अच्छी तरह समय व्यतीत कर रहे थे। शहर के लोग उनकी गृहस्थी की सराहना करते थे।

देखते ही देखते समय बदल गया। शीला का पति बुरी संगति में पड़ गया। अब वह जल्द से जल्द करोड़पति बनने के ख्वाब देखने लगा। यानी वह कुमार्ग पर चलने लगा और अपनी सारी धन संपत्ति गंवा दी। शीला अपने पति का यह व्यवहार देखकर बहुत दुःखी हुई, किन्तु वह भगवान पर भरोसा कर सबकुछ सहने लगी। वह अपना अधिकांश समय प्रभु भक्ति में बिताने लगी।

अचानक एक दिन दोपहर को उनके द्वार पर किसी ने दस्तक दी। शीला ने द्वार खोला तो देखा कि एक माँजी खड़ी थी। उसके चेहरे पर अलौकिक तेज निखर रहा था। उनकी आँखों में से मानो अमृत बह रहा था। उसका भव्य चेहरा करुणा और प्यार से छलक रहा था। उसको देखते ही शीला के मन में अपार शांति छा गई। शीला के रोम-रोम में आनंद छा गया।

शीला उस माँजी को आदर के साथ घर में ले आई। घर में बिठाने के लिए कुछ भी नहीं थ। अतः शीला ने सकुचाकर एक फटी हुई चद्दर पर उसको बिठाया। मांजी बोलीं - क्यों शीला! मुझे पहचाना नहीं ? हर शुक्रवार को लक्ष्मीजी के मंदिर में भजन-कीर्तन के समय मैं भी वहां आती हूं।

इसके बावजूद शीला कुछ समझ नहीं पा रही थी। फिर मांजी बोलीं - तुम बहुत दिनों से मंदिर नहीं आई अतः मैं तुम्हें देखने चली आई। मांजी के अति प्रेमभरे शब्दों से शीला का हृदय पिघल गया। उसकी आंखों में आंसू आ गए और वह बिलख-बिलखकर रोने लगी। मांजी ने कहा- बेटी! सुख और दुःख तो धूप और छाँव जैसे होते हैं। धैर्य रखो बेटी! मुझे तेरी सारी परेशानी बता। मांजी के व्यवहार से शीला को काफी संबल मिला और सुख की आस में उसने मांजी को अपनी सारी कहानी कह सुनाई।

कहानी सुनकर माँजी ने कहा- कर्म की गति न्यारी होती है। हर इंसान को अपने कर्म भुगतने ही पड़ते हैं। इसलिए तू चिंता मत कर। अब तू कर्म भुगत चुकी है। अब तुम्हारे सुख के दिन अवश्य आएँगे। तू तो माँ लक्ष्मीजी की भक्त है। माँ लक्ष्मीजी तो प्रेम और करुणा की अवतार हैं। वे अपने भक्तों पर हमेशा ममता रखती हैं। इसलिए तू धैर्य रखकर माँ लक्ष्मीजी का व्रत कर। इससे सब कुछ ठीक हो जाएगा।

शीला के पूछने पर मांजी ने उसे व्रत की सारी विधि भी बताई। मांजी ने कहा- बेटी! मां लक्ष्मीजी का व्रत बहुत सरल है। उसे वरदलक्ष्मी व्रत या वैभव लक्ष्मी व्रत कहा जाता है। यह व्रत करने वाले की सब मनोकामना पूर्ण होती है। वह सुख-संपत्ति और यश प्राप्त करता है। शीला यह सुनकर आनंदित हो गई। शीला ने संकल्प करके आँखें खोली तो सामने कोई न था। वह विस्मित हो गई कि मांजी कहां गईं ? शीला को तत्काल यह समझते देर न लगी कि मांजी और कोई नहीं साक्षात लक्ष्मीजी ही थीं।

दूसरे दिन शुक्रवार था। सवेरे स्नान करके स्वच्छ वस्त्र पहनकर शीला ने मांजी द्वारा बताई विधि से पूरे मन से व्रत किया। व्रत के अंत में प्रसाद वितरित कियाा। यह प्रसाद पहले पति को खिलाया। प्रसाद खाते ही पति के स्वभाव में फर्क पड़ गया। उस दिन उसने शीला को मारा नहीं, सताया भी नहीं। शीला को बहुत आनंद हुआ। उनके मन में वैभवलक्ष्मी व्रत के लिए अधिक श्रद्धा बढ़ गई।

शीला ने पूर्ण श्रद्धा - भक्ति से इक्कीस शुक्रवार तक वैभवलक्ष्मी व्रत किया। इक्कीसवें शुक्रवार को माँजी के कहे मुताबिक उद्यापन विधि कर के सात स्त्रियों को वैभवलक्ष्मी व्रत की सात पुस्तकें उपहार में दीं। फिर माताजी के धनलक्ष्मी स्वरूप की छवि को वंदन करके मन ही मन प्रार्थना करने लगीं - हे मां धनलक्ष्मी! मैंने आपका वैभवलक्ष्मी व्रत करने की मन्नत मानी थी, वह व्रत आज पूर्ण किया है।

हे मां! मेरी हर विपत्ति दूर करो। हमारा सबका कल्याण करो। जिसे संतान न हो, उसे संतान देना। सौभाग्यवती स्त्री का सौभाग्य अखंड रखना। कुंआरी लड़की को मनभावन पति देना। जो आपका यह चमत्कारी वैभवलक्ष्मी व्रत करें, उनकी सब विपत्ति दूर करना। सभी को सुखी करना। हे माँ! आपकी महिमा अपार है। ऐसा बोलकर लक्ष्मीजी के धनलक्ष्मी स्वरूप की छवि को प्रणाम किया।

व्रत के प्रभाव से शीला का पति अच्छा आदमी बन गया और कड़ी मेहनत करके व्यवसाय करने लगा। उसने तुरंत शीला के गिरवी रखे गहने छुड़ा लिए। घर में धन आगमन हुआ। घर में पहले जैसी सुख-शांति छा गई।

❑❑❑

श्रीसत्यनारायण व्रत

(मानसिक शाति, धन-वैभव की प्राप्ति एवं
धर्म आस्था बढ़ाने के लिए)

माहात्म्य

सत्य ही नारायण है, यह भाव सत्यनारायण की कथा से उभरता है। सत्य को साक्षात् भगवान् मानकर जीवन में उसकी आराधना करना ही सत्यव्रत है। एक सत्यव्रती अपने उत्तम व्यवहार और शुभ कर्मों से ही भगवान् की सच्ची पूजा करता है। लोग सत्यनारायण कथा के माध्यम से सत्यव्रत का सही रूप समझें, तो वे सच्चे अर्थों में सुख-समृद्धि के अधिकारी बन सकते हैं।

एक बार देवर्षि नारद ने मृत्युलोक पर दुखित मानव समाज की कष्ट निवृत्ति, प्राणियों के दुखों के निवारण का उपाय जब भगवान् विष्णु से पूछा तो उन्होंने कहा - अर्थात हे पुत्र! मृत्युलोक में ही नहीं बल्कि स्वर्ग में भी अति दुर्लभ बड़ा ही पवित्र एक व्रत है, जिसे मैं तुम्हारे स्नेह से प्रेरित होकर आज प्रकट करता हूं।

श्रीसत्यनारायण व्रत को विधि-विधान पूर्वक करने से इस लोक में सुख और अंत में सद्गति प्राप्त होती है। सत्य को ही भगवान स्वरूप मानकर जो व्यक्ति इस व्रत को करता है, उसे प्रभु की कृपा का लाभ अवश्य मिलता है। प्रभु सत्य साधना से प्रसन्न होते हैं और उनकी कृपा से साधकों को लौकिक सुख और पारलौकिक शांति निश्चित रूप से मिलती है। सत्यव्रत को अपनाने वाला दरिद्र भी भगवान् की कृपा से धन-धान्य से परिपूर्ण हो जाता है। उसके पास से संसार के कष्ट, आपत्तियां डरकर भाग जाती हैं।

वे विघ्न-बाधा रहित जीवन जीते हैं। उन्हें इच्छित फलों की प्राप्ति होती है तथा उनके पाप नष्ट हो जाते हैं। श्रीसत्यनारायण व्रत की कथा में विभिन्न कथानकों के माध्यम से एक ही तथ्य प्रमुखता से प्रकट होता है कि सत्यनिष्ठा अपनाने से इहलौकिक और पारलौकिक दोनों जीवन सुख शांतिमय बनते हैं और इस सत्यवृत्ति को छोड़ने से अनेक प्रकार के कष्टों को भोगना पड़ता है।

पूजन विधि-विधान

सामान्यतया यह व्रत संक्रांति, पूर्णिमा, अमावस्या, में से किसी भी दिन सत्यदेव का पूजन करके कथा पाठ कर संपन्न किया जाता है, क्योंकि इन दिनों में किया गया व्रत विशेष फलदायी माना गया है। व्रत करने से पूर्व प्रातः संकल्प जरूर लें। इस दिन जो सामग्री लगती है, उसे इकट्ठा कर लें जैसे - केले के पत्ते, आम के पत्ते तोरण के लिए, पंच पल्लव, कलश, नवग्रहों के लिए लाल कपड़ा, भगवान के आसन के लिए सफेद कपड़ा, शालिग्राम शिला, तुलसी दल, चंदन, चावल, अबीर, गुलाल, कुंकुम, लौंग, इलायची, नारियल, सुपारी, धूप, अगरबत्ती, पुष्प, अनेक फल, केला, पंचामृत, दक्षिणा, नैवेद्य, पुण्याहवाचन, प्रसाद के लिए पंजीरी, मिष्ठान आदि।

इस दिन प्रातःकाल ब्रह्म मुहूर्त में उठकर नित्य कर्मों से निवृत्त होकर स्नान, संध्या करने के उपरांत श्रीसूर्य भगवान् को प्रणाम कर चंदन, अक्षत, धूप, दीप आदि से सूर्य की पूजा करके उनसे प्रार्थना करें कि मैं अपने इष्ट सिद्धि, सब आपत्तियों के नाश, सब पापों को दूर करने, मनोरथ सिद्धि आदि के लिए श्रीसत्यनारायण व्रत का पूजन करना चाहता हूं। अतः मैं सूर्य द्वारा सबको यथाशक्ति पत्र, पुष्प आदि श्रद्धापूर्वक अर्पण करता हूं, उसे स्वीकार कीजिए।

फिर सभी ग्रहों को नमस्कार करके प्रार्थना करें। व्रती दिन भर निराहार रहकर भगवान् विष्णु का ध्यान व गुणगान करें। गौरी, गणेश, वरुण आदि पांचों लोकपाल और नवग्रहों का षोडशोपचार विधि से पूजन करें, फिर प्रार्थना और याचना करें कि वे बस उनको सिद्धि प्रदान करें। इसके पश्चात् भगवान् श्रीसत्यनारायण का ध्यान करते हुए व्रत की कथा को श्रद्धापूर्वक सुनें। कथा के बाद उनकी आरती उतारें और भक्तों में प्रसाद का वितरण करें।

व्रत कथा

प्राचीन काल में किसी काशीपरी में शतानंद नाम का एक निधन ब्राह्मण रहता था। वह भीख मांग कर अपना गुजारा करता था। उसकी इस दशा से दुखी होकर भगवान् विष्णु ने एक बूढ़े ब्राह्मण का रूप धारण कर उसका सत्यनारायण व्रत का सविस्तार विधि-विधान बताया और अंतर्धान हो गए। शतानंद ने अपने मन में श्रीसत्यनारायण व्रत का संकल्प कर लिया जिसकी चिंता में वह रात भर सो न सका। ज्यों ही सवेरा हुआ तो वह इस व्रत के अनुष्ठान के उद्देश्य से भिक्षा मागने निकला।

उसे उस दिन भिक्षा में बहुत धन-धान्य मिला। संध्या के समय उसने घर पहुंचकर पूर्ण श्रद्धापूर्वक सत्यदेव का पूजन करके व्रत किया। व्रत के प्रभाव से वह कुछ ही दिनों में संपन्न हो गया। जब तक वह जीवित रहा, उसने नियमित रूप से प्रति मास इस व्रत को पूजन सहित किया और कथा सुनी। मृत्यु होने पर उसे विष्णुलोक में स्थान मिला।

ऋषियों के यह पूछने पर कि शतानंद के बाद इस व्रत का किसने किया, इसके उत्तर में सूतजी ने कहा-एक जब शतानंद वैभववान होकर अपन बंधु-बांधवों के साथ एकाग्रमन से कथा सुन रहा था, उसी समय वहां भूख-प्यास से व्याकुल एक लकड़हारा आकर कथा सुनने बैठ गया। कथा के बाद उसने प्रसाद खाकर जल ग्रहण किया और शतानंद से जब इस व्रत का प्रयोजन पूछा तो उसने इसे मनोवांछित फल देने वाला बताया और अपनी पूर्व की कहानी बताई।

उसके ऐश्वर्य प्राप्त करने की बात सुनकर उस लकड़हारे ने इस व्रत का विधि-विधान जाना और इसके पूजन का निश्चय करके लकड़ी बेचने चल पड़ा। भगवद्कृपा से उस दिन लकड़ियां दोगुने भाव में बिक गईं। लकड़हारे ने उन पैसों से व्रत पूजन की सारी सामग्री खरीद ली और घर आकर अपने भाई-बंधुओं व पड़ोसियों सहित विधिपूर्वक सत्यनारायण भगवान का व्रत रखकर पूजन किया तथा कथा सुनी। सत्यदेव की कृपा और व्रत के प्रभाव से वह लकड़हारा कुछ ही समय में धनवान बन कर इस लोक के सारे सुख भोगने लगा। मरने के बाद उसे सत्यलोक में स्थान मिला।

इसके पश्चात् सूतजी ने एक और कथा का उल्लेख किया, जो इस प्रकार है-प्राचीन काल में उल्कामुख नामक एक राजा था, जो बड़ा ही सत्यवादी और संयमी था। उसकी रानी भी धर्मनिष्ठ थी। एक दिन वे दोनों भद्रशीला नदी के तट पर श्रीसत्यनारायण की कथा सुन रहे थे कि वहां एक वैश्य आ पहुंचा। अपनी रत्नों से भरी नौका को किनारे पर बांधकर वह भी पूजा में सम्मिलित हो गया। वहां का चमत्कार देखकर उस वैश्य ने राजा से जिज्ञासावश पूछा कि यह कौन-सा पूजन है ? तब राजा ने बताया कि हम अतुल तेजवान भगवान विष्णु का पूजन कर रहे हैं, जिसके करने और व्रत धारण करने से मनोवांछित फल मिलता है।

व्रत की महिमा सुनकर वह वैश्य अपने घर लौट गया। घर पहुंचकर इस सारे वृत्तांत को उसने अपनी पत्नी को बताया। उसने यह संकल्प भी लिया कि जब मेरे घर संतान होगी तब मैं इस व्रत को करूंगा। सत्यनारायण भगवान् की कृपा से उसकी पत्नी गर्भवती हुई और दस माह में उसने एक कन्या को जन्म दिया। चंद्रकलाओं की भांति दिन-प्रतिदिन बढ़ने वाली इस कन्या का नाम कलावती रखा गया। वैश्य की स्त्री लीलावती ने उसे इस व्रत के संकल्प का स्मरण कराया तो उसने कन्या के विवाह के समय व्रत करने को कहा। फिर वह अपने काम-धंधे में व्यस्त हो गया। जब कलावती का विवाह हो गया तो लीलावती ने फिर से पति को स्मरण कराया। वैश्य अपने दामाद के साथ समुद्र पार व्यापार करने के लिए बिना व्रत किए चला गया।

इस कारण सत्यनारायण उस पर अप्रसन्न हो गए। जिस स्थान पर वैश्य अपने दामाद को लेकर व्यापार करने गया था, उस रत्नासारपुर नगर के राजा चंद्रकेतु के राज्य में चोरी हो गई। जब राजा के सिपाहियों ने चोरों का पीछा किया तो वे चोरी किया हुआ धन, रत्न आदि पकड़े जाने के डर से भागते-भागते वैश्य के डेरे में खोजते

हुए पहुंचे तो राजा का धन वहां मिल गया। इस पर दोनों वैश्यों को चोर समझकर सिपाही उन्हें पकड़कर ले गए और उन्हें कारागार में डाल दिया। राजा ने वैश्य का सारा धन जब्त कर राजकोष में रखवा दिया।

इधर लीलावती और कलावती भी भगवान् सत्यनारायण के कोप के कारण बुरे दिन देखने लगीं। तब उन्हें अपनी गलती का स्मरण हो आया। उन्होंने अपने पति के संकल से क्षमा मांगकर व्रत पूरे विधि-विधान से किया तो वे प्रसन्न हुए और राजा चंद्रकेतु को स्वप्न में दर्शन देकर कहा कि सवेरा होते ही वह कारागार में बंदी दोनों वैश्यों को उनका धन लौटा दे। राजा ने वैसा ही किया जैसा आदेश भगवान् ने उसे दिया था। वैश्य और उसका दामाद दोनों प्रसन्नतापूर्वक अपना धन नौकाओं में भरकर घर की ओर लौट पड़े।

इसी बीच श्रीसत्यनारायण ने उनकी परीक्षा लेने के लिए एक वृद्ध का रूप धारण किया और उनके निकट पहुंचकर उनसे पूछा कि तुम्हारी नौका में क्या भरा है ? इस पर वे बोले-कुछ नहीं घास-फूस और फूल-पत्ते हैं, महाराज। तथास्तु' कहकर वह वृद्ध वहां से चल दिया। अपनी नौका को हलकी जानकर उन्होंने देखा कि बहुमूल्य चीजों के स्थान पर नौका में घास-फूंस और पत्र-पुष्प ही भरा था।

दामाद और वैश्य समझ गए कि उनके झूठ बोलने का ही यह परिणाम हुआ है। बस फिर क्या था, वे दोनों उस वृद्ध के पैर पकड़कर माफी मांगने लगे। करुणाकर भगवान् ने द्रवित होकर फिर से उन्हें वरदान दिया और अंतर्धान हो गए। वैश्य की नौका फिर से धन से परिपूर्ण हो गई। तब उन्होंने वहीं ठहरकर भगवान का व्रत किया, कथा सुनी और त्तपश्चात् घर की ओर चल पड़े।

लीलावती को अपने पति के वापस लौटने का समाचार मिला तो उसने श्रीसत्यनारायण की कथा सुनते हुए अपनी पुत्री कलावती को उनके स्वागत के लिए कहा। पति और पिता के आगमन की बात सुनकर कलावती कथा का प्रसाद लिए बिना ही उनके स्वागत के लिए दौड़ पड़ी। परंतु जैसे ही नदी के पास पहुंची तो वैश्य के दामाद की नौका जल में डूब गई। यह दृश्य देखकर लीलावती और कलावती छाती पीट-पीट कर, दहाड़े मारकर रोने लगीं।

इसी बीच आकाशवाणी हुई कि हे वणिक! तेरी कन्या सत्यदेव के प्रसाद को छोड़कर उसका अनादर करके पति से मिलने के लिए दौड़ पड़ी थी। यदि वह घर जाकर अब भी प्रसाद ग्रहण कर ले और फिर आए तो उसका पति जी उठेगा।' यह सुनते ही कलावती घर की ओर दौड़कर गई। उसने प्रसाद ग्रहण किया और अपने पिता तथा पति के लिए भी ले आई।

तब सभी ने देखा कि उसके पति की डूबी हुई नौका जल से स्वतः ही बाहर निकल आई है। फिर तो उस वैश्य व उसके दामाद के परिवार ने जीवनपर्यंत इस व्रत को किया और कथा कराई। इसके बाद सूतजी ने एक कथा और बताई-एक बार तुंगध्वज नामक एक राजा वन में शिकार खेलने गया। वहा उसने अनेक जानवरों का शिकार किया। जब वह लौट रहा था तो उसने एक बरगद के पेड़ के नीचे बहुत-से लोगों को श्रीसत्यनारायण व्रत की कथा करते देखा।

राजा ने न तो भगवान को नमस्कार किया और न ही उन लोगों के दिए प्रसाद को स्वीकार कर सेवन किया। जब वह लौट रहा था तो उसने एक बरगद के पेड़ करते देखा। राजा ने न तो भगवान को नमस्कार कर सेवन किया। अपने महल में लौटने पर जब उसे ज्ञात हुआ कि पुत्र-पौत्र, धन-संपत्ति नष्ट हो गया है, तो वन की घटना का उसे तुरंत ही स्मरण हो आया। वह फिर वन में लौटा और भगवान सत्यनारायण के व्रत का पूजन किया।

कथा कराई तो उसके प्रभाव से उसका सारा राज्य, धन-संपत्ति के अलावा राजवंश ज्यों-का-त्यों व्यवस्थित मिला। तब से राजा ने समय-समय पर जीवन-पर्यंत श्रीसत्यनारायण का व्रत पूजन कर कथा कराई और सुखमय जीवन व्यतीत किया। मरणोपरांत यह मोक्ष का भागी बना। बोलो सत्यनारायण भगवान् का जय! वृंदावन विहारी लाल की जय!

❑❑❑

अमावस्या व्रत

(पितृ शांति, पुण्य प्राप्ति और शिव कृपा प्राप्ति हेतु)

माहात्म्य

प्रत्येक माह एक अमावस्या आती है। अमावस्या का व्रत पितृ शांति, श्राद्ध कार्य, तर्पण और विशेष शांति कार्यों के लिए किया जाता है। इस दिन व्रत, जप, तप और अन्य कार्य करने से पुण्य फलों की प्राप्ति होती है। इस व्रत को विवाहित स्त्रियाँ अपने पति की लम्बी आयु के लिये करती है। अमावस्या तिथि पर गंगा स्नान का बड़ा महत्व है। इस दिन मौन रहकर स्नान करने से सहस्त्र गौ दान के समान पुण्य की प्राप्ति होती है।

इस दिन कुरुक्षेत्र के ब्रह्मा सरोवर में डूबकी लगाने का भी बहुत अधिक पुण्य माना गया है। ऋषि व्यास के अनुसार इस तिथि में स्नान-ध्यान करने से सहस्त्र गौ दान के समान पुन्य फल प्राप्त होता है। अमावस्या के समय पितृ तर्पण कार्यों को करने का विधान माना जाता है। अमावस्या को पितरों के निमित पिंडदान और तर्पण किया जाता है। मान्यता है कि अमावस्या के दिन पितरों के निमित पिंडदान और तर्पण करने से पितर देवताओं का आशीष मिलता है।

इस दिन तीर्थस्नान, जप, तप और व्रत के पुण्य से ऋण या कर्ज और पापों से मिली पीड़ाओं से छुटकारा मिलता है। इसलिए यह संयम, साधना और तप के लिए श्रेष्ठ दिन माना जाता है। पुराणों में अमावस्या को कुछ विशेष व्रतों के विधान है जिससे तन, मन और धन के कष्टों से मुक्ति मिलती है।

अमावस्याओं को व्रत, जप, तप और पितृ कार्य करने का विशेष महत्व बताया गया है -

सोमवती अमावस्या : शिव कृपा एवं अभीष्ट फलों की सिद्धि के लिए।
भोमवती अमावस्या : शत्रु विनाश कर प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्ति के लिए।
शनिश्चरी अमावस्या : पाप मुक्ति, उत्तम स्वास्थ्य व रोगों को कम करने के लिए।
महालय श्राद्ध अमावस्या : पितृ शांति व पापकर्म से मुक्ति के लिए।
मौनी अमावस्या : तीनों ऋणों से मुक्ति के लिए।
पौष अमावस्या : पितृदोष शांति और पूर्व जन्म के अशुभ पापों से मुक्ति के लिए।
हरियाली / श्रावण अमावस्या : मनोबल वृद्धि, मानसिक शांति, शिव कृपा के लिए।
मार्गशीर्ष अमावस्या : भगवान कृष्ण की कृपा प्राप्ति और संतानहीनता दूर करने के लिए।

पूजन विधि-विधान

इस दिन प्रातः काल उठकर नित्य कर्म तथा स्नान कर स्वच्छ वस्त्र पहन लें। अब सभी पूजन सामग्री लेकर पीपल के वृक्ष के पास जायें। पीपल की जड़ में लक्ष्मी नारायण की स्थापना करके दूध / जल अर्पित करें। पीपल की जड़ में सूत लपेट दें। भगवान का ध्यान करके पुष्प, अक्षत, चन्दन, भोग, धूप इत्यादि अर्पण करें। फिर प्रेमपूर्वक हाथ जोड़कर भगवान की प्रार्थना करें। अब पेड़ के चारों ओर श्री वासुदेवाय नमः बोलते हुए 108 बार परिक्रमा करें। इसके बाद कथा सुनें अथवा सुनायें। सामर्थ्यानुसार दान दें। ऐसा करने से भगवान पुत्र, पौत्र, धन, धान्य तथा सभी मनोवांछित फल प्रदान करते हैं। इस दिन मूली और रूई का स्पर्श ना करें।

व्रत कथा

एक गरीब ब्राह्मण परिवार था। उस परिवार में पति-पत्नी के अलावा एक पुत्री भी थी। वह पुत्री धीरे-धीरे बड़ी होने लगी। उस पुत्री में समय और बढ़ती उम्र के साथ सभी स्त्रियोचित गुणों का विकास हो रहा था। वह लड़की सुंदर, संस्कारवान एवं गुणवान थी। किंतु गरीब होने के कारण उसका विवाह नहीं हो पा रहा था।

एक दिन उस ब्राह्मण के घर एक साधु महाराज पधारें। वो उस कन्या के सेवाभाव से काफी प्रसन्न हुए। कन्या को लंबी आयु का आशीर्वाद देते हुए साधु ने कहा कि इस कन्या के हथेली में विवाह योग्य रेखा नहीं है।

तब ब्राह्मण दम्पति ने साधु से उपाय पूछा, कि कन्या ऐसा क्या करें कि उसके हाथ में विवाह योग बन जाए। साधु ने कुछ देर विचार करने के बाद अपनी अंतर्दृष्टि से ध्यान करके बताया कि कुछ दूरी पर एक गांव में सोना नाम की धोबिन जाति की एक महिला अपने बेटे और बहू के साथ रहती है, जो बहुत ही आचार-विचार और संस्कार संपन्न तथा पति परायण है।

यदि यह कन्या उसकी सेवा करें और वह महिला इसकी शादी में अपने मांग का सिंदूर लगा दें, उसके बाद इस कन्या का विवाह हो तो इस कन्या का वैधव्य योग मिट सकता है। साधु ने यह भी बताया कि वह महिला कहीं आती-जाती नहीं है।

यह बात सुनकर ब्राह्मणी ने अपनी बेटी से धोबिन की सेवा करने की बात कही। अगल दिन कन्या प्रातः काल ही उठ कर सोना धोबिन के घर जाकर, साफ-सफाई और अन्य सारे करके अपने घर वापस आ जाती।

एक दिन सोना धोबिन अपनी बहू से पूछती है कि- तुम तो सुबह ही उठकर सारे काम कर लेती हो और पता भी नहीं चलता। बहू ने कहा- मां जी, मैंने तो सोचा कि आप ही सुबह उठकर सारे काम खुद ही खत्म कर लेती हैं। मैं तो देर से उठती हूं। इस पर दोनों सास-बहू निगरानी करने लगी कि कौन है जो सुबह ही घर का सारा काम करके चला जाता है।

कई दिनों के बाद धोबिन ने देखा कि एक कन्या मुंह अंधेरे घर में आती है और सारे काम करने के बाद चली जाती है। जब वह जाने लगी तो सोना धोबिन उसके पैरों पर गिर पड़ी, पूछने लगी कि आप कौन है और इस तरह छुपकर मेरे घर की चाकरी क्यों करती हैं?

तब कन्या ने साधु द्बारा कही गई सारी बात बताई। सोना धोबिन पति परायण थी, उसमें तेज था। वह तैयार हो गई। सोना धोबिन के पति थोड़ा अस्वस्थ थे। उसने अपनी बहू से अपने लौट आने तक घर पर ही रहने को कहा।

सोना धोबिन ने जैसे ही अपने मांग का सिन्दूर उस कन्या की मांग में लगाया, उसका पति मर गया। उसे इस बात का पता चल गया। वह घर से निरजल ही चली थी, यह सोचकर की रास्ते में कहीं पीपल का पेड़ मिलेगा तो उसे भंवरी देकर और उसकी परिक्रमा करके ही जल ग्रहण करेंगी।

उस दिन सोमवती अमावस्या थी। ब्राह्मण के घर मिले पूए-पकवान की जगह उसने ईंट के टुकड़ों से 108 बार भंवरी देकर 108 बार पीपल के पेड़ की परिक्रमा की और उसके बाद जल ग्रहण किया। ऐसा करते ही उसके पति के मुर्दा शरीर में वापस जान आ गई। धोबिन का पति वापस जीवित हो उठा।

इसीलिए सोमवती अमावस्या के दिन से शुरू करके जो व्यक्ति अमावस्या के दिन भंवरी देता है, उसके सुख और सौभाग्य में वृद्धि होती है। पीपल के पेड़ में सभी देवों का वास होता है। अतः जो व्यक्ति हर अमावस्या को न कर सके, वह सोमवार को पड़ने वाली अमावस्या के दिन 108 वस्तुओं कि भंवरी देकर सोना धोबिन और गौरी-गणेश का पूजन करता है, उसे अखंड सौभाग्य की प्राप्ति होती है।

ऐसी प्रचलित परंपरा है कि पहली सोमवती अमावस्या के दिन धान, पान, हल्दी, सिंदूर और सुपाड़ी की भंवरी दी जाती है। उसके बाद की सोमवती अमावस्या को अपने सामर्थ्य के हिसाब से फल, मिठाई, सुहाग सामग्री, खाने की सामग्री इत्यादि की भंवरी दी जाती है और फिर भंवरी पर चढाया गया सामान किसी सुपात्र ब्राह्मण, ननंद या भांजे को दिया जा सकता है।

❒❒❒

प्रदोष व्रत

(सुखी विवाहित जीवन जीने के लिए)

माहात्म्य

प्रदोष का सामान्य अर्थ रात का शुभारंभ माना जाता है अर्थात जब सूर्यास्त हो चुकने के बाद संध्या काल आता है, तो रात्रि के प्रारभ होने के पूर्व काल को प्रदोष काल कहते हैं। यानी सूर्यास्त और रात्रि के संधिकाल को प्रदोष काल माना जाता है। इस व्रत को स्त्री और पुरुष दोनों ही समान रूप से कर सकते हैं, क्योंकि यह दोनों के लिए ही समान रूप से फलदायी है। लेकिन यह व्रत स्त्रियां ही अधिक करती हैं। चूंकि त्रयोदशी के दिन जो वार (दिन) पड़ता है, उसी के नाम पर प्रदोष का नामकरण किया जाता है, अतः वारों के अनुसार सात प्रदोष माने गए हैं। इनके व्रत फल भी अपनी-अपनी विशिष्टताएं लिए हुए होते हैं, जो निम्नानुसार है -

रवि प्रदोष : सर्व प्रकार के सुख-समृद्धि, आजीवन आरोग्यता और दीर्घायु के लिए।
सोम प्रदोष : सर्व मनोकामनाओं एवं अभीष्ट फलों की सिद्धि के लिए।
मंगल प्रदोष : पाप मुक्ति, उत्तम स्वास्थ्य व रोगों को कम करने के लिए।
बुध प्रदोष : सभी प्रकार का कामना सिद्धि और भारी कष्ट दूर करने के लिए।
गुरु प्रदोष : शत्रु विनाश कर प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्ति के लिए।
शुक्र प्रदोष : स्त्री के सौभाग्य, समृद्धि व कल्याण के लिए।
शनि प्रदोष : निर्धनता दूर कर समृद्धि एवं पुत्र प्राप्ति के लिए।

ऐसा जन विश्वास है कि रविवार, सोमवार और शनिवार को पड़ने वाले प्रदोष के व्रत को करने से समस्त अभीष्ट फलों की प्राप्ति होती है, सारे दुखों से मुक्ति मिलती है, सौ गोदान के बराबर पुण्य मिलता है। सोमवार के दिन भगवान् शंकर का पड़ने वाला प्रदोष व्रत विशेष पुण्यदायी माना गया है। मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए कुल 11 या वर्ष भर की 26 त्रयोदशियों का व्रत करना चाहिए। प्रदोष के व्रत धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष प्राप्ति के परम साधन माने गए हैं। जो मनुष्य प्रदोष व्रत के आख्यान को प्रतिदिन सुनता है और शिव भगवान् का अर्चन एकाग्रचित्त होकर करता है, वह ज्ञान और ऐश्वर्य से युक्त होकर अंत में शिव लोक चला जाता है।

पूजन विधि-विधान

यह व्रत प्रत्येक मास में कृष्ण व शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी को रखा जाता है। इसलिए इसे वार व्रत के अनुसार ही पूजन करने का विधान शास्त्र सम्मत होता है, क्योंकि प्रत्येक वार के प्रदोष व्रत की पूजन विधि भिन्न-भिन्न होती है। व्रती को ब्रह्म मुहूर्त में उठकर नित्य कर्म जैसे स्नानादि से निवृत्त होकर पवित्र मन से पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ भगवान् शिव का ध्यान करके व्रत प्रारंभ करना चाहिए। इस व्रत के मुख्य देवता भगवान् शिव को माना गया है। उनके साथ पार्वती का भी पूजन करने का विधान है। इस दिन निराहार रहकर सायंकाल स्नान करके सफेद वस्त्र धारण करें। संध्या, जप आदि करके शिव पूजन बिल्व पत्र, कमल, धतूरा के फल, पुष्प, तुलसी, द्रोणपुष्प, चंपक चढ़ाकर ॐ नमः शिवाय का जाप करते हुए 17 बार माला से पूर्ण करें। शिव लिंग को पंचामृत से स्नान करा के चंदन का तिलक लगाएं।

फिर बेल पत्र चढ़ाकर शिव-पार्वती की प्रतिमा का षोडशोपचार द्वारा पूजन करें। ऋतु के अनुसार फल अर्पित करें। पूजन के समय पूर्व की ओर मुख रखें, क्योंकि दक्षिण या पश्चिम की ओर मुख रखकर पूजन न करने के निर्देश शास्त्र वर्णित हैं। व्रत वाले को दिन भर भोजन करना वर्जित है, लेकिन संध्या पूजन के बाद एक समय भोजन करने का विधान अवश्य है। किसी विशेष संकल्प को धारण करने पर तो सायंकाल तक निर्जल व्रत करना चाहिए। पूजन के पश्चात् व्रत की कथा सुनें। फिर ब्राह्मणों को भोजन करा के यथाशक्ति दक्षिणा दें।

व्रत कथा

प्राचीन काल में एक ब्राह्मणी विधवा हो गई। वह भिक्षा मांग कर अपना जीवन-निर्वाह करने लगी। वह सवेरे-सवेरे अपने पुत्र को लेकर घर से निकलती और सायंकाल घर लौटती। एक दिन उसकी भेंट विदर्भ देश के राजकुमार से हुई। राजकुमार अपने पिता की मृत्यु हो जाने के शोक में मारा-मारा घूम रहा था। उसकी दशा देखकर ब्राह्मणी को बड़ी दया आई।

वह उसे अपने साथ घर ले आई उसने राजकुमार को अपने पुत्र के समान पाला। एक दिन वह ब्राह्मणी दोनों बालकों को लेकर शांडिल्य ऋषि के आश्रम में गई। ऋषि से भगवान शंकर के पूजन की विधि जानकर वह प्रदोष व्रत करने लगी। एक दिन दोनों बालक वन में घूम रहे थे। उन्होंने वहां गंधर्व कन्याओं को क्रीड़ा करते देखा। उन्हें देखकर ब्राह्मण कुमार तो घर लौट आया और राजकुमार अंशुमती नामक गंधर्व-कन्या से बात करने में लग गया। वह देर से घर लौट पाया।

दूसरे दिन भी वह उसी स्थान पर पहुंच गया। अंशुमती वहां अपने माता-पिता के साथ बैठी हुई थी। माता-पिता ने उससे कहा कि हम भगवान् शंकर की आज्ञा से अंशुमती का विवाह तुम्हारे साथ करेंगे। राजकुमार मान गया। विवाह हो गया। उसने गंधर्वराज विद्रविक की विशाल सेना लेकर विदर्भ पर अधिकार कर लिया। यह प्रदोष व्रत का ही फल था। तभी से समाज में प्रदोष व्रत की प्रतिष्ठा हुई।

दूसरी कथा

एक गांव में एक अत्यंत गरीब ब्राह्मण रहता था। उसकी पत्नी सत्य मार्ग पर चलने वाली और धार्मिक प्रवृत्ति की थी। वह नियमित प्रदोष का व्रत किया करती थी। एक समय की बात है कि ब्राह्मणी का पुत्र गंगास्नान के लिए गया हुआ था। दुर्भाग्यवश रास्ते में चोरों ने उसे घेर लिया और बोले-तुम अपने पिता का गुप्त धन बतला दो, वरना हम तुम्हें मार डालेंगे। बालक ने बड़ी विनम्रता से उत्तर दिया कि हम लोग बहुत गरीब हैं, हमारे पास धन कहां है ? चोरों ने बालक की पोटली की ओर इशारा करते हुए पूछा -

तेरी पोटली में क्या बंधा है ? बालक ने निस्संकोच उत्तर दिया-इसमें मेरी माँ ने रोटियां बांधी हैं। चोरों में से एक ने उसे गरीब समझ कहा-इस बालक को जाने दो, यह अति दीनहींन और गरीब है। चोरों ने बालक को जाने दिया । बालक चलते-चलते एक नगर के समीप पहुंचा। वहां एक वट का वृक्ष था। बालक उसकी छाया में बैठ गया। थकावट के कारण उसे नींद आ गई और वह उस वट वृक्ष के नीचे सो गया।

उधर राज्य के सिपाही चोरों की खोज करते हुए उस बालक के पास पहुंच गए। सिपाही बालक को चोर समझकर राजा के पास ले गए। राजा ने भी उसे चोर समझकर कारावास की आज्ञा दे दी। उधर बालक की मां प्रदोष का व्रत कर रही थी।

व्रत के प्रभाव से उसी रात राजा को स्वप्न दिखाई दिया कि तुमने जिस बालक को कारागार में बंद कर रखा है, वह निर्दोष है, उसे प्रातः छोड़ देना, अन्यथा तुम्हें एक निर्दोष ब्राह्मण को कैद करने का महादोष लगेगा। प्रातःकाल होते ही राजा ने सिपाहियों को आज्ञा दी कि बालक को कारावास से ससम्मान बुलाकर मेरे पास लाओ। सिपाही बालक को लेकर राजा के समक्ष उपस्थित हुए तो राजा ने बालक से सब वृत्तात पूछा।

वृत्तांत सुनने के पश्चात् राजा ने सिपाहियों को भेजकर बालक के माता-पिता को अपने दरबार में बुलवा लिया। राजा ने ब्राह्मण और ब्राह्मणी को भयभीत देखकर कहा-आप लोग डरो नहीं। आपका बालक निर्दोष है। हम आपकी दरिद्रता देखकर पांच गांव आपको दान में देते हैं। इस प्रकार प्रदोष व्रत के प्रभाव एव भोलेनाथ की कृपा से ब्राह्मणी एवं उसका परिवार सुख से रहने लगे।

❒❒❒

संतोषी माता व्रत

(सुखी वैवाहिक जीवन, मनोकामना सिद्धि, वैभव प्राप्ति हेतु)

माहात्म्य

शुक्रवार के दिन मां संतोषी का व्रत-पूजन किया जाता है। सुख-सौभाग्य की कामना के लिए माता संतोषी के 16 शुक्रवार तक व्रत किये जाने का विधान है। संतोषी माता उन देवी देवताओं में से एक हैं जिनका जिक्र पुराणों में नहीं किया गया है। परन्तु आम जनता के बीच उनकी लोकप्रियता बहुत ज्यादा है।

पूजन विधि-विधान

माँ संतोषी का व्रत 16 शुक्रवार किया जाता है। इस व्रत में खट्टी चीजों का प्रयोग नहीं किया जाता। इस दिन सुबह जल्दी उठ कर स्नान करने के पश्चात माता के स्वरुप को स्वच्छ देवस्थान पर रखते हैं और साथ में छोटे कलश की स्थापना करते हैं। चने के साथ गुड़ और केला प्रसाद के रूप में रखते हैं। अब देवी स्वरुप संतोषी माता के सामने दीया जलाते हैं और मन्त्र का उच्चारण करते हैं। आरती के बाद प्रसाद ग्रहण किया जाता है। यह प्रक्रिया 16 शुक्रवार करने के पश्चात् इस व्रत का उद्यापन करते हैं। उद्यापन में कम से कम 8 बच्चों को भोजन कराते हैं।

व्रत कथा

एक बुढ़िया थी। उसका एक ही पुत्र था। बुढ़िया अपनी पुत्र वधू पर बहुत अत्याचार करती थी। उसका पुत्र कामकाज के सिलसिले में परदेश गया हुआ था। एक दिन बहू दुःखी हो मंदिर चली गई। वहाँ उसने देखा कि बहुत-सी स्त्रियाँ पूजा कर रही थीं। उसने स्त्रियों से व्रत के बारे में जानकारी ली तो वे बोलीं कि हम संतोषी माता का व्रत कर रही हैं। इससे सभी प्रकार के कष्टों का नाश होता है।

स्त्रियों ने बताया - शुक्रवार को नहा-धोकर एक लोटे में शुद्ध जल ले गुड़-चने का प्रसाद लेना तथा सच्चे मन से माँ का पूजन करनी चाहिए। खटाई भूल कर भी मत खाना और न ही किसी को देना। एक वक्त भोजन करना। व्रत विधान सुनकर अब वह शुक्रवार को संयम से व्रत करने लगी। माता की कृपा से कुछ दिनों के बाद पति का पत्र आया। कुछ दिनों बाद पैसा भी आ गया। उसने प्रसन्न मन से फिर व्रत किया तथा मंदिर में जा अन्य स्त्रियों से बोली- संतोषी माँ की कृपा से हमें पति का पत्र तथा रुपया आया है। अन्य सभी स्त्रियाँ भी श्रद्धा से व्रत करने लगीं। बहू ने कहा- हे माँ! जब मेरा पति घर आ जाएगा तो मैं तुम्हारे व्रत का उद्यापन करूँगी।

यह सुनकर माता संतोषी ने कृपा दिखाई और उसके पति को धन सहित घर वापस भेज दिया। घर आकर पुत्र ने अपनी माँ व पत्नी को बहुत सारे रुपए दिए। पत्नी ने कहा कि मुझे संतोषी माता के व्रत का उद्यापन करना है। उसने सभी को न्योता दे उद्यापन की सारी तैयारी की। पड़ोस की एक स्त्री उसे सुखी देख ईर्ष्या करने लगी थी। उसने अपने बच्चों को सिखा दिया कि तुम भोजन के समय खटाई जरूर माँगना।

उद्यापन के समय खाना खाते-खाते बच्चे खटाई के लिए मचल उठे तो बहू ने पैसा देकर उन्हें बहलाया। बच्चे दुकान से उन पैसों की इमली-खटाई खरीदकर खाने लगे, तो बहू पर माता ने कोप किया। राजा के दूत उसके पति को पकड़कर ले जाने लगे। तो किसी ने बताया कि उद्यापन में बच्चों ने पैसों की इमली खटाई खाई है तो बहू ने पुनः व्रत के उद्यापन का संकल्प किया।

संकल्प के बाद वह मंदिर से निकली तो राह में पति आता दिखाई दिया। पति बोला- इतना धन जो कमाया है, उसका टैक्स राजा ने माँगा था। अगले शुक्रवार को उसने फिर विधिवत व्रत का उद्यापन किया। इससे संतोषी माँ प्रसन्न हुईं। नौ माह बाद चाँद-सा सुंदर पुत्र हुआ। अब सास, बहू तथा बेटा माँ की कृपा से आनंद से रहने लगे।

❑❑❑

सोलह सोमवार व्रत

(मनोनुकूल जीवनसाथी हेतु)

माहात्म्य

पालक, संहारक तथा अर्धनारीश्वर रूप में स्थित शिवजी शीघ्र ही प्रसन्न होने वाले देव हैं। यही कारण है कि इन्हे। प्रसन्न करने के लिए भक्त विभिन्न रूप में आराधना करते है। भगवान् शिव की इन व्रत आराधनाओं में कुछ अत्यंत ही सरल होती हैं तो कुछ बहुत ही कठिन होती हैं।

इन्हीं व्रत में 16 सोमवार व्रत भी है जो बहुत ही कठिन है किन्तु इस व्रत को करने से भगवान शिव शीघ्र ही प्रसन्न होकर मनोवांछित फल प्रदान करते है। भगवान शंकर को महादेव कहा जाता है। यह व्रत कोई भी कर सकता है। यह व्रत यदि कुंवारी कन्याओं द्वारा किया जाए तो उन्हें मनोनुकूल पति की प्राप्ति होती है। परन्तु इस व्रत को पूर्ण विधि-विधान से करना बहुत जरुरी होता है।

16 सोमवारी व्रत श्रावण सोमवार व्रत से अलग होता है और कठिन भी। इस व्रत को श्रावण, चैत्र, वैशाख, कार्तिक और मार्गशीर्ष मास में आरम्भ करना चाहिए। उपर्युक्त मास में व्रत आरम्भ करने से शुभ फल की प्राप्ति होती है।

पूजन विधि-विधान

व्रत वाले दिन में ब्रह्ममुहूर्त में उठकर गंगाजल से पूजास्थल को अच्छी तरह से साफ कर लें। पूजा स्थान पर लाल वस्त्र बिछाकर शिव परिवार को स्थापित कर लें। पूजा शुरू करते समय शिव परिवार को पंचामृत यानि दूध, दही, शहद, शक्कर, घी और गंगाजल से स्नान करवाएँ। इसके बाद गंध, चन्दन, फूल, रोली, वस्त्र आदि से पूजन करें।

शिव भगवान को सफेद फूल, बेलपत्र, सफेद वस्त्र और गणेश जी को सिंदूर, दूर्वा, गुड़ और पीले वस्त्र अर्पित करें। भोग लगाने के लिए शिव जी के लिए सफेद और गणेश जी के लिए पीले रंग के पकवानों और लड्डुओं का भोग लगाएं।

पूजा करने के लिए भगवान शिव और गणेश के स्त्रोतों, मंत्र और स्तुति करें। सारी तैयारी के बाद पूजा शुरु करते समय सुगंधित धूप, घी व पाँच बत्तियों के दीप और कपूर से आरती करें। पूजन के पश्चात कथा अवश्य कहें और सुनें। इसके बाद भोजन या फलाहार ग्रहण करें।

व्रत कथा

एक बार सनत कुमारों ने भगवान शिव से उनसे सावन का महीना प्रिय होने का कारण जानना चाहा। भोले भण्डारी ने बताया कि देवी सती ने अपने पति को हर जन्म में पाने का प्रण कर रखा था। जब देवी सती ने अपने पिता के घर अपने पति का अपमान न सह पाने के कारण अपने शरीर का त्याग कर दिया था तो कुछ समय बाद उन्होनें राजा हिमाचल और उनकी पत्नी मैना देवी के घर जन्म लिया।

इस जन्म में उनका नाम पार्वती था। अपने पूर्व जन्म के प्रण के कारण उन्होंने इस जन्म में भी भगवान शिव को पति रूप में पाने के लिए बहुत कठोर तपस्या करी। उनकी तपस्या से भगवान शिव प्रसन्न हो गए और उनका पार्वती जी से विवाह के लिए स्वीकृति दे दी। इस प्रकार पार्वती जी का शिव जी को हर जन्म में अपना पति के रूप में पाने का प्रण पूरा हुआ। इसीलिए, विशेषकर कुँवारी लड़कियां मनचाहा पति पाने के लिए सोलह सोमवार का व्रत जरूर करती हैं।

❏❏❏

सूर्य ग्रहण / चन्द्र ग्रहण व्रत

(सूर्य ग्रह शांति, चंद्र ग्रह शांति, मानसिक विकास दूर करने के लिए)

माहात्म्य

शास्त्रों में इसका बड़ा माहात्म्य बताया गया है। सूर्य ग्रहण / चंद्र ग्रहण अवधि में व्रत करना जातक को मानसिक दोषों से मुक्त करता है। पितृ दोषों से युक्त व्यक्तियों को यह व्रत विशेष रूप से करना चाहिए। इसके अतिरिक्त इस समय अवधि में मंत्र सिद्धि, यंत्र अभिमंत्रित प्रक्रिया और ग्रह शांति के उपाय विशेष रूप से किये जाने का विधि-विधान है। ग्रहण के दिन पवित्र नदियों, सरोवरों और जलाशयों में स्नान करना शुभ माना गया है। इसके साथ ही इस दिन धर्म स्थलों में दान पुण्य की महिमा विशेष बताई गयी है।

प्रायश्चित पश्चाताप और पापों की क्षमा के लिए भी ग्रहण अवधि का प्रयोग किया जा सकता है। पुराणों की मान्यता के अनुसार राहु चंद्रमा को तथा केतु सूर्य को ग्रसता है। ये दोनों ही छाया की संतान हैं। चंद्रमा और सूर्य की छाया के साथ-साथ चलते हैं।

पूजन विधि-विधान

ग्रहण लगने के पूर्व नदी या घर में उपलब्ध जल से स्नान करके भगवान का पूजन, यज्ञ, जप करना चाहिए। भजन-कीर्तन करके ग्रहण के समय का सदुपयोग करें। ग्रहण के दौरान कोई कार्य न करें। ग्रहण के समय में मत्रों का जाप करने से सिद्धि प्राप्त होती है।

ग्रहण की अवधि में तेल लगाना, भोजन करना, जल पीना, मल-मूत्र त्याग करना, केश विन्यास बनाना, रति-क्रीड़ा करना, मंजन करना वर्जित किए गए हैं। कुछ लोग ग्रहण के दौरान भी स्नान करते हैं। ग्रहण समाप्त हो जाने पर स्नान करके ब्राह्मण को दान देने का विधान है। कहीं-कहीं वस्त्र, बर्तन धोने का भी नियम है।

पुराना पानी, अन्न नष्ट कर नया भोजन पकाया जाता है और ताजा पानी भरकर पिया जाता है। ग्रहण के बाद अन्न को दान देने का अधिक माहात्म्य बताया गया है, क्योंकि अन्न (गेंहू या चावल) को सूर्य / चंद्र की कारक वस्तु माना गया है।

व्रत कथा

इस कथा का उल्लेख श्रीमद्‌भागवत पुराण के आठवें स्कंध में लिखा है कि - जब समुद्र मंथन से अमृत का घड़ा निकला तो उसके बंटवारे के लिए स्त्री वेशधारी मोहिनी के रूप में नारायण से दैत्यों ने प्रार्थना की। तब उस मोहिनी ने झगड़े को निपटाने के लिए देवताओं और दैत्यों को अलग-अलग बिठाया।

फिर कलश लेकर बातों और अदाओं से दैत्यों को ठगते हुए उसने देवताओं को अमृत पान कराना शुरू किया, तो राहु को उस पर संदेह हो गया। तब वह देवताओं का वेश बना उनकी पंक्ति में घुस गया आर सूर्य-चद्र के बीच बैठ गया।

जब मोहिनी सब देवताओं को क्रमशः अमृत पिलाती आई तब चंद्र और सूर्य ने राहु की उपस्थिति की सूचना भगवान को दी। इस पर उन्होंने अमृत पान करते हुए राहु का सिर चक्र से काट डाला। परंतु अमृत पान कर लेने के कारण उसका सिर और धड़ अमर हो गए।

ब्रह्माजी ने उसे राहु और केतु ग्रह बनाया, इसलिए वे देवताओं के साथ रहने लगे। इसी वैर से राहु और केतु सूर्य-चद्रमा का अब तक पीछा करते हैं और उनको निगलने का प्रयास करते रहते हैं। इसी कारण सूर्य और चंद्र को ग्रहण लगता है।

❑❑❑

रविवार व्रत

(सूर्य ग्रह शांति, आत्म सम्मान, तेज और मान-सम्मान की प्राप्ति हेतु)

माहात्म्य

यह व्रत आश्विन मास के शुक्ल पक्ष के अंतिम रविवार से शुरु करना शुभ माना गया है। इसे 12, 30 या पूरे एक वर्ष के 52 व्रतों की संख्या में करना चाहिए। इस व्रत के देवता भगवान सूर्य हैं। सूर्य ग्रह की शांति के लिए भी यह व्रत किया जा सकता है। इस व्रत को करने से व्रती अपने समस्त कष्टों से मुक्ति पा सकता है और असीम सुखों को पा सकता है।

इसका उल्लेख नारद पुराण में भी है की रविवार के दिन पूजा करना काफी आरोग्यदायक और शुभ होता है। रविवार का व्रत करने से मनुष्य का मान-सम्मान बढ़ता है, बुद्धि में तेजस्विता आती है। मानसिक क्लेश दूर होकर मन शांत रहता है, सुख की अनुभूति होती है, आरोग्यता प्राप्त होती है, मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं, संसारिक कष्टों से मुक्ति मिलती है, पाप नष्ट होती है और घर में ऋद्धि-सिद्धि का वास होता है।

पूजन विधि-विधान

सर्व मनोकामनाओं की पूर्ति हेतु रविवार का व्रत श्रेष्ठ है। इस व्रत की विधि इस प्रकार प्रातःकाल स्नानादि से निवृत्त हो स्वच्छ वस्त्र धारण करें। शांतचित्त होकर परमात्मा का स्मरण करें। भोजन एक समय से अधिक नहीं करना चाहिए।

भोजन तथा फलाहार सूर्य के प्रकाश रहते ही कर लेना उचित है। यदि निराराहर रहने पर सूर्य छिप जाये तो दूसरे दिन सूर्य उदय हो जाने पर अर्घ्य देने के बाद ही भोजन करें। व्रत के अंत में व्रत कथा सुननी चाहिए। व्रत के दिन नमकीन तेलयुक्त भोजन कदापि ग्रहण न करें। इस व्रत के करने से मान-सम्मान बढ़ता है तथा शत्रुओं का क्षय होता है। आंख की पीड़ा के अतिरिक्त अन्य सब पीड़ाएं दूर होती हैं।

व्रत कथा

प्राचीन- काल में कंचनपुर में एक बुढ़िया रहती थी। वह नियमित रूप से रवि वार का व्रत कर रही थी। रविवार के दिन सूर्योदय से पहले उठकर बुढ़िया स्नानादि से निवृत्त होकर अपने घर के आंगन को गोबर से लीपकर स्वच्छ करती थी। उसके बाद सूर्य भगवान की पूजा करते हुए, रविवार व्रत कथा सुन कर सूर्य भगवान का भोग लगाकर दिन में एक समय भोजन करती थी।

सूर्य भगवान की अनुकम्पा से बुढ़िया को किसी प्रकार की कोई चिन्ता व कष्ट नहीं था। धीरे-धीरे उसका घर धन-धान्य से भर रहा था। उस बुढ़िया को सुखी-समृद्ध होते देखकर उसकी पड़ोसन उससे बुरी तरह जलने लगी थी। बुढ़िया ने कोई गाय नहीं पाल रखी थी। अतः वह अपनी पड़ोसन के आंगन में बंधी गाय का गोबर लाती थी। पड़ोसन ने कुछ सोचकर अपनी गाय को घर के भीतर बांध दिया।

रविवार को गोबर न मिलने से बुढ़िया अपना आंगन नहीं लीप सकी। आंगन न लीप पाने के कारण उस बुढ़िया ने सूर्य भगवान को भोग नहीं लगाया और उस दिन स्वयं भी भोजन नहीं किया। सूर्यास्त होने पर बुढ़िया भूखी-प्यास सो गई। रात्रि में सूर्य भगवान ने उसे स्वप्न में दर्शन दिए और उससे व्रत न करने तथा उन्हें भोग न लगाने का कारण पूछा।

बुढ़िया ने बहुत ही करुण स्वर में पड़ोसन के द्वारा घर के अन्दर गाय बांधने और गोबर न मिल पाने की बात कही। सूर्य भगवान ने अपनी अनन्य भक्त बुढ़िया की परेशानी का कारण जानकर उसके सब दुःख दूर करते हुए कहा, "हे माता! तुम प्रत्येक रविवार को मेरी पूजा और व्रत करती हो।

मैं तुमसे अति प्रसन्न हूं और तुम्हें ऐसी गाय प्रदान करता हूं जो तुम्हारे घर-आंगन को धन-धान्य से भर देगी। तुम्हारी सभी मनोकामनाएं- पूरी होंगी। रविवार का व्रत करने वालों की मैं सभी इच्छाएं पूरी करता हूं। मेरा व्रत करने व कथा सुनने से बांझ स्त्रियों को पुत्र की प्राप्ति होती है। निर्धनों के घर में धन की वर्षा होती है। शारीरिक कष्ट नष्ट होते हैं। मेरा व्रत करते हुए प्राणी मोक्ष को प्राप्त करता है। स्वप्न में उस बुढ़िया को ऐसा वरदान देकर सूर्य भगवान अन्तर्धान हो गए।

प्रातःकाल सूर्योदय से पूर्व उस बुढ़िया की आंख खुली तो वह अपने घर के आंगन में सुन्दर गाय और बछड़े को देखकर हैरान हो गई। गाय को आंगन में बांधकर उसने जल्दी से उसे चारा लाकर खिलाया। पड़ोसन ने उस बुढ़िया के आंगन में बंधी सुन्दर गाय और बछड़े को देखा तो वह उससे और अधिक जलने लगी।

तभी गाय ने सोने का गोबर किया। गोबर को देखते ही पड़ोसन की आंखें फट गईं। पड़ोसन ने उस बुढ़िया को आसपास न पाकर तुरन्त उस गोबर को उठाया और अपने घर ले गई तथा अपनी गाय का गोबर वहां रख आई। सोने के गोबर से पड़ोसन कुछ ही दिनों में धनवान हो गई। गाय प्रति दिन सूर्योदय से पूर्व सोने का गोबर किया करती थी और बुढ़िया के उठने के पहले पड़ोसन उस गोबर को उठाकर ले जाती थी।

बहुत दिनों तक बुढ़िया को सोने के गोबर के बारे में कुछ पता ही नहीं चला। बुढ़िया पहले की तरह हर रविवार को भगवान सूर्यदेव का व्रत करती रही और कथा सुनती रही। लेकिन सूर्य भगवान को जब पड़ोसन की चालाकी का पता चला तो उन्होंने तेज आंधी चलाई। आंधी का प्रकोप देखकर बुढ़िया ने गाय को घर के भीतर बांध दिया।

सुबह उठकर बुढ़िया ने सोने का गोबर देखा उसे बहुत आश्चर्य हुआ। उस दिन के बाद बुढ़िया गाय को घर के भीतर बांधने लगी। सोने के गोबर से बुढ़िया कुछ ही दिन में बहुत धनी हो गई। उस बुढ़िया के धनी होने से पड़ोसन बुरी तरह जल-भुनकर राख हो गई और उसने अपने पति को समझा-बुझाकर उस नगर के राजा के पास भेज दिया।

राजा को जब बुढ़िया के पास सोने के गोबर देने वाली गाय के बारे में पता चला तो उसने अपने सैनिक भेजकर बुढ़िया की गाय लाने का आदेश दिया। सैनिक उस बुढ़िया के घर पहुचे। उस समय बुढ़िया सूर्य भगवान को भोग लगाकर स्वयं भोजन ग्रहण करने वाली थी। राजा के सैनिकों ने गाय और बछड़े को खोला और अपने साथ महल की ओर ले चले। बुढ़िया ने सैनिकों से गाय और उसके बछड़े को न ले जाने की प्रार्थना की, बहुत रोई-चिल्ला- लेकिन राजा के सैनिक नहीं माने। गाय व बछड़े के चले जाने से बुढ़िया को बहुत दुःख हुआ। उस दिन उसने कुछ नहीं खाया और सारी रात सूर्य भगवान से गाय व बछड़े को लौटाने के लिए प्रार्थना करती रही।

सुन्दर- गाय को देखकर राजा बहुत खुश हुआ। सुबह जब राजा ने सोने का गोबर देखा तो उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। उधर सूर्य भगवान को भूखी-प्यासी बुढ़िया को इस तरह प्रार्थना करते देख उस पर बहुत करुणा आई। उसी रात सूर्य भगवान ने राजा को स्वप्न में कहा, राजन! बुढ़िया की गाय व बछड़ा तुरन्त लौटा दो, नहीं तो तुम पर विपत्तियों- का पहाड़ टूट पड़ेगा। तुम्हारे राज्य में भूकम्प आएगा।

तुम्हारा महल नष्ट हो जाएगा। सूर्य भगवान के स्वप्न से बुरी तरह भयभीत राजा ने प्रातः उठते ही गाय और बछड़ा बुढ़िया को लौटा दिया। राजा ने बहुत-सा धन देकर बुढ़िया से अपनी गलती के लिए क्षमा भी मांगी। राजा ने पड़ोसन और उसके पति को उनकी इस दुष्टता के लिए दण्ड भी दिया।

फिर राजा ने पूरे राज्य में घोषणा कराई कि सभी स्त्री-पुरुष रविवार का व्रत किया करें। रविवार का व्रत करने से सभी लोगों के घर धन-धान्य से भर गए। चारों ओर खुशहाली छा गई। सभी लोगों के शारीरिक कष्ट दूर हो गए। निस्सन्तान- स्त्रियों को पुत्रों की प्राप्ति होने लगी। राज्य में सभी स्त्री-पुर- ष सुखी जीवन-यापन करने लगे।

❑❑❑

सोमवार व्रत

(अखंड सौभाग्य, संतान प्राप्ति एवं चंद्र ग्रह शांति)

माहात्म्य

इस व्रत को श्रावण, चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, कार्तिक, मार्गशीष माह के शुक्ल पक्ष के प्रथम सोमवार से प्रारंभ करना चाहिए। इस व्रत को कम से कम एक वर्ष करना चाहिए। इस व्रत को करने से समस्त मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। उज्जवल भविष्य, कीर्ति, मान-सम्मान और दुखों का नाश होता है। अविवाहित लडकियां विवाह कामना से और वैवाहिक स्त्रियां अखंड सौभाग्य की कामना से इस व्रत को करती हैं।

पूजन विधि-विधान

नित्य कर्मों से निवृत्त होकर स्नानादि कर व्रत का संकल्प लें और भगवान शिव की आराधना करें। सोमवार व्रत साधारणतया दिन के तीसरे पहर तक होता है। व्रत में फलाहार या पारायण का कोई खास नियम नहीं है किंतु यह आवश्यक है कि दिन रात में केवल एक समय भोजन करें। सोमवार के व्रत में शिवजी पार्वती का पूजन करना चाहिए। वैसे इस व्रत का कठोर रूप से पालन करने वाले दिन में **ॐ नमः शिवाय** का जाप करते रहते है। सांयकाल में भगवान शिव का पूजन करें, भोग लगाएं, कथा और आरती करें तथा स्वयं प्रसाद ग्रहण करें।

व्रत कथा

बहुत समय पहले की बात है। एक गाँव में एक साहूकार रहता था। उसके पास धन-दौलत की कोई कमी नहीं थी लेकिन उसके सन्तान नहीं थी। वो वक्त अपने वंश के लिए चिंत्ति रहता था। वो हर सोमवार को व्रत रखता था जिसमे दिन में वो शिवजी की पूजा करता था और शाम को शिवलिंग के दिया जलाता था। एक दिन माता पार्वती ने शिवजी से कहा नाथ, ये मनुष्य आपका परम भक्त है। आपको इसकी इच्छा पूरी करनी चाहिए। शिवजी ने कहा पार्वती, ये संसार एक कर्मक्षेत्र है, जैसे- एक किसान अपने खेत में बीज बोता है तो इसका परिणाम उसको मिलता है। उसी प्रकार इस संसार में आदमी जैसा भी कर्म करेगा उसको वैसा ही फल मिलेगा।

माता पार्वती ने फिर शिवजी से आग्रह किया प्रभु, फिर भी आप इसकी श्रुधा को देखिये, ये आपका परम भक्त हैं। आपको इसकी मदद करनी चाहिये, अगर आपका लोगो की इच्छा पूरी नहीं करेंगे तो वो आपकी आराधना क्यों करेंगे। माता पार्वती के जोर देने पर शिवजी ने कहा, इस मनुष्य के कोई पुत्र नहीं है इसलिए ये सदैव चिंत्ति रहते हैं, हालांकि इसके भाग्य में पुत्र नहीं है। फिर भी मैं आपके आग्रह पर इसको पुत्र देने का वरदान देता हूं लेकिन वो केवल 12 वर्ष जीवित रह पायेगा, मै इससे ज्यादा कुछ नहीं कर सकता हूं।

साहूकार को भगवान शिव ने स्वप्न में उसके पुत्र के 12 वर्ष तक जीवित रहने की बात कही। जिसको सुनकर वो ना तो ज्यादा खुश हुआ और ना ज्यादा दुखी हुआ। वो हमेशा की तरह अपनी पूजा जारी रखने लगा। कुछ दिनों बाद उसकी पत्नी गर्भवती हो गयी और उसने एक सुंदर बालक को जन्म दिया। सभी घर में बालक के जन्म पर खुशिया मना रहे थे। लेकिन वो साहूकार अपना दर्द केवल खुद ही जानता था और उसने किसी को भी बालक के 12 वर्ष जीवित रहने की बात नहीं बताई। जब वो बालक एक वर्ष का हुआ तो उसकी माँ ने साहूकार से उसकी शादी की बात करने को कहा, लेकिन साहूकार ने शादी के लिए साफ मना करते हुए कहा कि वो उसको शिक्षा के लिए काशी भेजेगा।

साहूकार ने बालक के मामा को बुलाया और कुछ पैसे देकर बालक को काशी ले जाकर शिक्षा देने को कहा। उसने अपने पुत्र को कहा कि वो काशी जाते वक्त यज्ञ करते और ब्राह्मणों को खाना खिलाते हुए जाए। दोनों मामा-भांजे ने ऐसा ही किया।

रास्ते में एक बार वो दोनों जिस शहर से जा रहे थे उसका राजा अपनी पुत्री का विवाह एक ऐसे राजकुमार से करवा रहा था जिसके केवल एक आँख थी। दुल्हे का पिता बहुत चिंत्ति था कि अगर दुल्हन उसके पुत्र को देखेगी तो विवाह के लिए मना कर देगी। इसलिए उसने जब उस साहूकार के लडके को देखा तो उसने सोचा कि इस बालक को विवाह के लिए तोरण के समय मेरे पुत्र के स्थान पर दुल्हन के सामने पेश कर दूं।

दुल्हे के पिता ने उस लडके के मामा से बात की तो वो राजी हो गये। इस तरह उस बालक ने दुल्हे के कपड़े पहन लिए और घोडी पर बैठकर तोरण की रस्म पुरी कर दी। अब जब तोरण की रस्म हो गयी तो दुल्हे के पिता ने सोचा कि फेरो में भी उसके पुत्र के स्थान पर साहूकार के बेटे को बदल दिया जाए ताकि उसकी बात ढकी रहे। मामा फिर राजी हो गया और विवाह समारोह भी निपट गया। अब वो बालक काशी के लिए रवाना हो गया और जाने से पहले उसने दुल्हन के कपड़ों पर लिख दिया कि- तुम्हारी शादी मुझसे हुयी है, लेकिन जिसके साथ तुम्हें भेजेंगे वो एक आँख वाला आदमी है और मैं काशी शिक्षा ग्रहण करने जा रहा हूं।

जब वो बालक काशी के लिए रवाना हो गया तक उस दुल्हन ने अपने कपड़ों पर लिखे शब्द पढ़े और राजकुमार के साथ जाने से मना करते हुए कहा ये मेरा पति नहीं है, मेरी शादी इससे नहीं हुयी है, मेरा पति तो शिक्षा ग्रहण करने के लिए काशी गया है। मजबूरी में दुल्हे के पिता को सारी बात बतानी पड़ी और दुल्हन के पिता ने उसको भेजने से इंकार कर दिया।

दुल्हे का परिवार वापस घर लौट आया। अब वो बालक और मामा काशी पहुंच गये। वो बालक शिक्षा में लग गया और मामा ने यज्ञ करना शुरू कर दिया। जब वो बालक 12 वर्ष का हुआ तो एक दिन उसने अपने मामा से कहा जो यज्ञ कर रहे थे। मामा, आज मेरी तबियत ठीक नहीं है। मामा ने उसे घर के अंदर जाकर सोने को कहा। वो बालक अंदर जाकर सो गया और कुछ देर बाद उसकी मृत्यु हो गयी।

कुछ देर बाद जब मामा अंदर उसे देखने आया तो उसकी म्रत्यु हो चुकी थी। वो बहुत दुखी हुआ और सोचने लगा कि अगर मै रोऊंगा तो मेरा यज्ञ अधूरा रह जाएगा। इसलिए जब यज्ञ पूरा हुआ और ब्राहमण चले गये तो उसने रोना शुरू कर दिया। किस्मत से शिवजी और माता पार्वती उस रास्ते से गुजर रहे थे। उन्होंने रोने की आवाज सूनी तो पार्वती जी ने कहा नाथ, कोई आदमी रो रहा है, चलो उसके दुःख को दूर करते है। वो मामा के पास गये तो एक मृत बालक को जमीन पर पड़े हुए देखा। पार्वती जी ने कहा ये तो वहीं साहूकार का पुत्र है, जिसका आपके आशीर्वाद से जन्म हुआ। शिवजी ने कहा इसका जीवन इतना ही था और ये अपना जीवन बिता चुका था।

पार्वती ने उस पर दया दिखाते हुए शिवजी से कहा प्रभु, आप इस बालक को जीवनदान दे दीजिये अन्यथा इसके माता-पिता शोक में मर जायेंगे। माता पार्वती के कई बार आग्रह करने पर शिवजी ने उस बालक को जीवनदान दे दिया। अब मामा और भांजा दोनों अपने घर की ओर रवाना हुए। रास्ते में वो उसी शहर से गुजरे जहा उस बालक का विवाह हुआ था। उन्होंने वहा पर भी यज्ञ किया। उस बालक के ससुर ने उसे पहचान लिया और उसे अपने महल में लेकर गया।

उसने उसका भव्य स्वागत किया और एक समारोह आयोजित अपनी पुत्री को उसके साथ भेज दिया। वो सब वापस अपने शहर आ गये। उस बालक के माता-पिता छत पर बैठे हुए थे। वो सोच रहे थे कि अगर उनका पुत्र जीवित वापस आ जायेगा तो, वो नीचे आ जायेंगे वरना इस छत से कूदकर जान दे देंगे। उसी समय मामा वहा आ गया और उसने बताया की आपके पुत्र आ गया है। उनको विश्वास नहीं हुआ और मामा ने बताया कि उसके साथ उसकी पत्नी भी आई है। उस साहूकार ने उन दोनों का स्वागत किया और वो सभी खुशी खुशी जीवन बिताने लगे। इस तरह जो भी सोमवार का व्रत करता है उसकी सभी मनोकामनाये पूरी होती है।

❒❒❒

मंगलवार व्रत

(मंगलदोष शांति, मंगल ग्रह शांति, शत्रुओं का दमन और अनिष्ट निवारण हेतु)

माहात्म्य

इस व्रत का प्रारंभ सूर्य उत्तरायण में होने के समय किसी भी माह के शुक्ल पक्ष के प्रथम मंगलवार से किया जा सकता है। इस व्रत को कम से कम नियमित रूप से 45 मंगलवार करना चाहिए। इस व्रत को करने से कुंडली में स्थित मंगल दोष की शांति होती है। शत्रु एवं भय का नाश होता है, अनिष्ट दूर होते हैं। रक्त विकारों में कमी होती है। संतान, धन, धर्म, अर्थ, काम, सुख और छोटे भाई का सुख मिलता है। भगवान हनुमान प्रसन्न होते हैं, व्रती के दैविक, दैहिक और भौतिक तीनों पाप नष्ट होते हैं और सदगति की प्राप्ति होती हैं।

पूजन विधि-विधान

प्रातःकाल नदी या सरोवर में स्नान करें। लाल रंग के वस्त्र धारण कर व्रत का संकल्प करें। इसके पश्चात् मंगल भगवान, हनुमान जी को कुंकुम, सिंदूर, कस्तूरी, लाल वस्त्र, गुड़हल के फूल, लाल पुष्पों की माला, गेंहूं, गुड़ और मिश्रित पकवान से नैवेद्य लगाकर पूजन करें। पूजन में चार बत्तियों से युक्त आटे का दीपक सरसों के तेल में जलाएं, 21 लड्डुओं का भोग लगाएं। व्रत में नमक का सेवन नहीं करना चाहिए।

सांयकाल में फिर से पूजन करें गुड़ से निर्मित हलवे का भोग लगाकर, कथा सुनें, आरती गायें और स्वयं प्रसाद ग्रहण करें। व्रत का संकल्प पूरा होने पर अंतिम मंगलवार को छोटा सा हवन, खैर की लकड़ी से करके पूर्ण आहूति दें। व्रत के दिन एक, पांच या सात माला ऊँ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः मंत्र का जाप करना चाहिए। ब्राह्मणों को भोजन कराएं। ब्राह्मणों को भोजन कराकर भूमि दान में दें। तांबे के पात्र में मसूर की दाल भरकर किसी याचक को दें।

व्रत कथा

प्राचीन समय की बात है कि- किसी नगर में एक ब्राह्मण रहते थे। उनके कोई संतान न होने के कारण वह बेहद दुखी थे। हर मंगलवार ब्राह्मण वन में हनुमान जी की पूजा करने के लिए जाता था। वह पूजा करके बजरंगबली से एक पुत्र की कामना करता था। उसकी पत्नी भी पुत्र की प्राप्ति के लिए मंगलवार का व्रत करती थी। वह मंगलवार के दिन व्रत के अंत में हनुमान जी को भोग लगाकर ही भोजन करती थी।

एक बार व्रत के दिन ब्राह्मणी ने भोजन नहीं बना पाया और न ही हनुमान जी को भोग लगा सकी। तब उसने प्रण किया कि वह अगले मंगलवार को हनुमान जी को भोग लगाकर ही भोजन करेंगी। वह भूखी प्यासी छह दिन तक पड़ी रही। मंगलवार के दिन वह बेहोश हो गई। हनुमान जी उसकी श्रद्धा और भक्ति देखकर प्रसन्न हुए। उन्होंने आशीर्वाद स्वरुप ब्राह्मणी को एक पुत्र दिया और कहा कि यह तुम्हारी बहुत सेवा करेगा। बालक को पाकर ब्राह्मणी बहुत खुश हुई। उसने बालक का नाम मंगल रखा। कुछ समय उपरांत जब ब्राह्मण घर आया, तो बालक को देख पूछा कि वह कौन है ? पत्नी बोली कि मंगलवार व्रत से प्रसन्न होकर हनुमान जी ने उसे यह बालक दिया है। यह सुनकर ब्राह्मण को अपनी पत्नी की बात पर विश्वास नहीं हुआ। एक दिन मौका पाकर ब्राह्मण ने बालक को कुएं में गिरा दिया।

घर पर लौटने पर ब्राह्मणी ने पूछा कि मंगल कहां है ? तभी पीछे से मंगल मुस्कुरा कर आ गया। उसे वापस देखकर ब्राह्मण चौंक गया। उसी रात को बजरंगबली ने ब्राह्मण को सपने में दर्शन दिए और बताया कि यह पुत्र उन्होंने ही उसे दिया है। सच जानकर ब्राह्मण बहुत खुश हुआ। जिसके बाद से ब्राह्मण दंपत्ति नियमित रूप से मंगलवार व्रत रखने लगे। मंगलवार का व्रत रखने वाले मनुष्य पर हनुमान जी की अपार कृपा होती है।

❑❑❑

बुधवार व्रत

(विद्या, बुद्धि, शिक्षा, वाणी दोष से मुक्ति
और बुध ग्रह शांति हेतु)

माहात्म्य

इस व्रत का प्रारंभ किसी भी माह के शुक्ल पक्ष के प्रथम बुधवार से कर सकते हैं। व्रत करने से विद्या, वाक्पटुता और बुद्धि की वृद्धि होती है। इसके अतिरिक्त व्रती की बुध ग्रह की पीड़ा और अशुभ दशा भी शांत होती है। बुध देव की कृपा से व्रती अत्यधिक बुद्धिमान, प्रतापी और सभी कार्यों को करने में सफल होता है।

पूजन विधि-विधान

व्रत शुरु करने से पहले गणेश जी सहित नवग्रह पूजन करना भी जरूरी माना जाता है। व्रत के दौरान भागवत महापुराण का पाठ भी करवाया जा सकता है। यह व्रत लगातार 7, 17, 21, 45 या 128 बार करने का विधान है। प्रातःकाल उठें व नित्यक्रियाओं से निपटने के पश्चात स्नानादि से स्वच्छ होकर, व्रत का संकल्प लेकर भगवान बुध की पूजा करनी चाहिये। दिनभर व्रत रखना चाहिए। केवल एक समय भोजन करना चाहिये। व्रत में हरे रंग के वस्त्र, फूल या सब्जी आदि दान करने चाहिये। इस दिन एक समय दही, मूंग दाल का हलवा या फिर हरी वस्तु से बनी चीजों का सेवन करना चाहिये।

व्रत कथा

एक साहूकार अपनी पत्नी को लेने ससुराल गया। संयोग से उस दिन बुधवार था इसलिए ससुराल वालों ने बेटी की विदाई से मना कर दिया। साहूकार जिद कर-कर अपनी पत्नी की विदाई करा लाया। मार्ग में उसकी पत्नी को प्यास लगी। साहूकार जैसे पानी लेने के लिये जाता है तो वापस आते ही उसकी हैरानी का कोई ठिकाना नहीं रहता। अपने ही हमशक्ल को गाड़ी में पत्नी की बगल में बैठे देखता है। उसकी पत्नी भी एक शक्ल के दो-दो व्यक्तियों को देखकर परेशानी में पड़ गई कि उसका पति कौनसा है ?

परिचय मांगने पर उस व्यक्ति ने साहूकार का ही परिचय दिया। अब स्वयं साहूकार और उसकी पत्नी दोनों परेशान थे कि असली साहूकार कौन सा है। मामला सिपाही तक पहुंचा, सिपाही की यही स्थिति रही। तब साहूकार ने हाथ जोड़ लिये और भगवान से विनती करने लगा कि हे भगवन यह आपकी क्या माया है।

तभी आकाशवाणी हुई कि मूर्ख याद कर कुछ देर पहले ही तूने अपने सास-ससुर की आज्ञा न मानकर भगवान बुध का अपमान किया और बुधवार के दिन तू अपनी पत्नी को लेकर चल पड़ा जबकि तुझे इस दिन गमन नहीं करना चाहिये था। यह स्वयं बुध देव हैं जो तुम्हें सबक सिखाने के लिये तुम्हारे वेश में हैं। तब साहूकार ने कान पकड़ कर माफी मांगी और आगे से कभी भी ऐसा न करने का वचन किया और बुधवार को नियमपूर्वक व्रत पालन करने का संकल्प किया।

तब जाकर साहूकार के रूप में प्रकट हुए बुध देवता अंतर्ध्यान हुए और साहूकार अपनी पत्नी को लेकर घर जा सका। इस घटना के पश्चात साहूकार और उसकी पत्नी दोनों नियमित रूप से बुधवार का व्रत पालन करने लगे। मान्यता है कि जो भी व्यक्ति इस कथा को कहता है, सुनता है, फिर पढ़ता है उसे बुधवार के दिन यात्रा करने से किसी तरह का दोष नहीं लगता और समस्त सुखों की प्राप्ति होती है।

बुध ग्रह की शांति और सर्व-सुख के इच्छुक स्त्री-पुरुष बुधवार के इस व्रत कर सकते हैं। ज्ञान, बुद्धि, कार्य, व्यापार आदि में उन्नति के लिये भी बुधवार का व्रत बेहद शुभ और फलदायी माना जाता है। बुधवार के दिन बुद्ध देवता के साथ-साथ भगवान गणेश जी की पूजा का विधान भी है।

❑❑❑

बृहस्पतिवार व्रत

(मान-सम्मान, गुरु ग्रह शांति, धन, ज्ञान और संतान प्राप्ति हेतु)

माहात्म्य

किसी भी माह के शुक्ल पक्ष के प्रथम बृहस्पतिवार से इस व्रत का प्रारंभ किया जा सकता है। यह व्रत 16, 156 या 260 बार नियमित रूप से करने का विधान है। इस व्रत को करने से बृहस्पति देव प्रसन्न होते हैं। धन, वैभव, मान-सम्मान, यश, पद, विद्या, बुद्धि और संतान की प्राप्ति होती है और घर धन-धान्य से भरा रहता है।

पूजन विधि-विधान

गुरुवार व्रत के बारे में बहुत अच्छे से जान लिया, लेकिन अब आपको इसकी विधि भी जाननी चाहिए। तो अगर हम व्रत की विधि की बात करें तो इसके लिए आपको सबसे पहले चने की दाल, गुड़, हल्दी, थोड़े से केले, एक उपला हवन करने के लिए और भगवान विष्णु की फोटो चाहिए होते है और साथ ही केले का पेड़ उपलब्ध हो तो वो भी लाएं। जिस दिन आपका व्रत है उस दिन हमेशा की भांति नित्य प्रातः उठकर स्नान करें। पीले रंग के वस्त्र धारण करें।

व्रत का संकल्प लें, पंचामृत से भगवान बृहस्पति देव को स्नान कराएं। पीली वस्तुएं चने की दाल, गुड़, हल्दी, दो केले और पीली मिठाई से पूजन करें। इसके बाद भगवान की पूजा अर्चना करें और पीला चावल भी अवश्य चढ़ाएं, घी का दीपक जलाएं। केले के पेड़ का पूजन करें और नैवेद्य में केले व प्रसाद अर्पित करें। सायंकाल में फिर से पूजन कर, कथा आरती करें। व्रत के दिन जब पूजा अर्चना और हवन होता है तो उस दौरान 5 से 7 या 11 बार **ऊँ गुं गुरुवे नमः** मंत्र के साथ नाम लें। व्रती इस दिन केले का सेवन न करें।

व्रत कथा

प्राचीन समय की बात थी। एक व्यापारी की कंजूस पत्नी थी। व्यापारी बहुत दान-पुण्य करता तो उसकी पत्नी को यह सब अच्छा नहीं लगता। हर प्रकार से सुख संपन्न होने पर भी उसकी पत्नी की धन के प्रति लालसा कम नहीं हुई। वह व्यापारी को दान करने से रोकती रहती थी। एक दिन बृहस्पति देव उस स्त्री के सपने में आये और बोले - तुम एक उपाय करना। सात बृहस्पतिवार घर को गोबर से लीपना, अपने केशों को पीली मिट्टी से धोना, केशों को धोते समय स्नान करना, व्यापारी से हजामत बनाने को कहना, भोजन में मांस-मदिरा खाना, कपड़े अपने घर धोना। ऐसा करने से तुम्हारा सारा धन नष्ट हो जाएगा। इतना कहकर बृहस्पति देव अंतर्ध्यान हो गए।

व्यापारी की पत्नी ने बृहस्पति देव के कहे अनुसार सात बृहस्पतिवार वैसा ही करने का निश्चय किया। केवल तीन बृहस्पतिवार बीते थे कि उसी समस्त धन-संपत्ति नष्ट हो गई और वह परलोक सिधार गई। जब व्यापारी वापस आया तो उसने देखा कि उसका सब कुछ नष्ट हो चुका है। उस व्यापारी ने अपनी पुत्री को सांत्वना दी और दूसरे नगर में जाकर बस गया। लकड़ी काटकर जीवनयापन करने लगा।

एक दिन वह जंगल में लकड़ी काट रहा था तभी वहां बृहस्पति देव साधु के भेष में आये। व्यापारी ने उन्हें अपनी जीवन कथा सुनाई। इस पर साधु ने उन्हें बृहस्पतिवार का व्रत करने की सलाह दी। साधु की बात सुनकर व्यापारी बोला महाराज। मुझे तो इतना भी नहीं बचता कि मैं अपनी पुत्री को दही लाकर दे सकूं। इस पर साधु जी बोले तुम लकड़ियां शहर में बेचने जाना, तुम्हें लकड़ियों के दाम पहले से चौगुने मिलेंगे, जिससे तुम्हारे सारे कार्य सिद्ध हो जाएंगे। उसने लकड़ियां काटीं और शहर में बेचने के लिए चल पड़ा। उसकी लकड़ियां अच्छे दाम में बिक गईं। जिससे उसने अपनी पुत्री के लिए दही लिया और गुरुवार की कथा हेतु चना, गुड़ लेकर कथा की और प्रसाद बांटकर स्वयं भी खाया।

उसी दिन से उसकी सभी कठिनाइयां दूर होने लगीं, परंतु अगले बृहस्पतिवार को वह कथा करना भूल गया। अगले दिन वहां के राजा ने एक बड़े यज्ञ का आयोजन कर पूरे नगर के लोगों के लिए भोज का आयोजन किया। राजा की आज्ञा अनुसार पूरा नगर राजा के महल में भोज करने गया। लेकिन व्यापारी व उसकी पुत्री तनिक विलंब से पहुंचे, अतः उन दोनों को राजा ने महल में ले जाकर भोजन कराया। जब वे दोनों लौटकर आए तब रानी ने देखा कि उसका खूंटी पर टंगा हार गायब है। रानी को व्यापारी और उसकी पुत्री पर संदेह हुआ कि उसका हार उन दोनों ने ही चुराया है।

राजा की आज्ञा से उन दोनों को कारावास की कोठरी में कैद कर दिया गया। कैद में पड़कर दोनों अत्यंत दुखी हुए। वहां उन्होंने बृहस्पति देवता का स्मरण किया। बृहस्पति देव ने प्रकट होकर व्यापारी को उसकी भूल का आभास कराया और उन्हें सलाह दी कि गुरुवार के दिन कैदखाने के दरवाजे पर तुम्हें दो पैसे मिलेंगे उनसे तुम चने और मुनक्का मंगवाकर विधिपूर्वक बृहस्पति देवता का पूजन करना। तुम्हारे सब दुख दूर हो जाएंगे।

बृहस्पतिवार को कैदखाने के द्वार पर उन्हें दो पैसे मिले। बाहर सड़क पर एक स्त्री जा रही थी। व्यापारी ने उसे बुलाकार गुड़ और चने लाने को कहा। इस पर वह स्त्री बोली - मैं अपनी बहू के लिए गहने लेने जा रही हूं, मेरे पास समय नहीं है। इतना कहकर वह चली गई। थोड़ी देर बाद वहां से एक और स्त्री निकली, व्यापारी ने उसे बुलाकर कहा कि हे बहन मुझे बृहस्पतिवार की कथा करनी है। तुम मुझे दो पैसे का गुड़-चना ला दो।

बृहस्पतिदेव का नाम सुनकर वह स्त्री बोली भाई, मैं तुम्हें अभी गुड़-चना लाकर देती हूं। मेरा इकलौता पुत्र मर गया है, मैं उसके लिए कफन लेने जा रही थी लेकिन मैं पहले तुम्हारा काम करूंगी, उसके बाद अपने पुत्र के लिए कफन लाऊंगी। वह स्त्री बाजार से व्यापारी के लिए गुड़-चना ले आई और स्वयं भी बृहस्पतिदेव की कथा सुनी। कथा के समाप्त होने पर वह स्त्री कफन लेकर अपने घर गई।

घर पर लोग उसके पुत्र की लाश को ''राम नाम सत्य है'' कहते हुए श्मशान ले जाने की तैयारी कर रहे थे। स्त्री बोली मुझे अपने लड़के का मुख देख लेने दो। अपने पुत्र का मुख देखकर उस स्त्री ने उसके मुंह में प्रसाद और चरणामृत डाला। प्रसाद और चरणामृत के प्रभाव से वह पुनः जीवित हो गया।

पहली स्त्री जिसने बृहस्पतिदेव का निरादर किया था, वह जब अपने पुत्र के विवाह हेतु पुत्रवधू के लिए गहने लेकर लौटी और जैसे ही उसका पुत्र घोड़ी पर बैठकर निकला वैसे ही घोड़ी ने ऐसी उछाल मारी कि वह घोड़ी से गिरकर मर गया। यह देख स्त्री रो-रोकर बृहस्पति देव से क्षमा याचना करने लगी। उस स्त्री की याचना से बृहस्पतिदेव साधु वेश में वहां पहुंचकर कहने लगे देवी। तुम्हें अधिक विलाप करने की आवश्यकता नहीं है। यह बृहस्पतिदेव का अनादार करने के कारण हुआ है। तुम वापस जाकर मेरे भक्त से क्षमा मांगकर कथा सुनो, तब ही तुम्हारी मनोकामना पूर्ण होगी।

जेल में जाकर उस स्त्री ने व्यापारी से माफी मांगी और कथा सुनी। कथा के उपरांत वह प्रसाद और चरणामृत लेकर अपने घर वापस गई। घर आकर उसने चरणामृत अपने मृत पुत्र के मुख में डाला। चरणामृत के प्रभाव से उसका पुत्र भी जीवित हो उठा। उसी रात बृहस्पतिदेव राजा के सपने में आए और बोले हे राजन। तूने जिस व्यापारी और उसके पुत्री को जेल में कैद कर रखा है वह बिलकुल निर्दोष हैं।

तुम्हारी रानी का हार वहीं खूंटी पर टंगा है। दिन निकला तो राजा रानी ने हार खूंटी पर लटका हुआ देखा। राजा ने उस व्यापारी और उसकी पुत्री को रिहा कर दिया और उन्हें आधा राज्य देकर उसकी पुत्री का विवाह उच्च कुल में करवाकर दहेज में हीरे-जवाहरात दिए।

❑❑❑

शुक्रवार व्रत

(शुक्र ग्रह शांति और वैभव प्राप्ति)

माहात्म्य

शुक्र के अशुभ प्रभाव को कम और शुक्र ग्रह को बल प्रदान करने के लिए यह व्रत किया जाता है। यह व्रत अविवाहित स्त्री-पुरुष हेतु मनोकामना सिद्धि प्रदायक तथा दाम्पत्य सुखवर्धक है। यह व्रत स्त्री-पुरुष एवं कुमार-कुमारी सभी वर्ग हेतु फलप्रदायक है।

पूजन विधि-विधान

शुक्रवार का व्रत किसी भी माह के शुक्ल पक्ष के प्रथम शुक्रवार से प्रारंभ करें और 21 या 31 शुक्रवार तक करें। शुक्रवार के दिन प्रातः स्नान आदि करके सफेद वस्त्र धारण करें एवं यथासंभव सफेद वर्ण की गाय के दर्शन तथा सर्वप्रथम 1 या 2 कन्या के दर्शन करें और श्रीफल प्रदान करें। शुक्रदेव का पूजन धूप, दीप, फूल से करें, दिनभर व्रत करें और दिन के समय ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः इस मंत्र कम से कम एक माला जाप करें।

इस दिन भोजन में दुध, दही, चावल, खीर, घी, साबुदाना, सफेद मावा के पदार्थ, केला, जुवार, गेहु की रोटी आदि सफेद वस्तुमात्र का ही सेवन करें तथा अन्य कोई भी पदार्थ सेवन ना करें। इस दिन रात्रिशयन भी सफेद चादर पर ही करें। अंतिम शुक्रवार को हवन क्रिया के पश्चात 6 कन्याओं को उपरोक्त वस्तुओं का भोजन करायें तथा दक्षिणा स्वरूप सफेद वस्त्र रुमाल, श्रृंगारिक वस्तु, चांदी का यथाशक्ति अनुदान करें।

व्रत कथा

एक समय की बात हैं कि- एक नगर में कायस्थ, ब्राह्मण और वैश्य जाती के तीनों लडकों में परस्पर गहरी मित्रता थी। उन तीनों का विवाह हो गया था। ब्राह्मण और कायस्थ के लडके का गौना भी हो गया था, परन्तु वैश्य के लडके का गौना नहीं हुआ था। एक दिन कायस्थ के लडके ने कहा - हे मित्र! तुम मुकलावा करके अपनी स्त्री को घर क्यों नहीं लाते ? स्त्री के बिना घर कैसा बुरा लगता हैं।

यह बात वैश्य के लडके को जंच गई। उस समय शुक्र अस्त था। इस बात पर सबने उसे समझाया परंतु वह नहीं माना और वह ससुराल गया और पत्नी को विदा करा लाया। रास्तें में उसे अनेक कष्टों का सामना कर जब पति पत्नी अपने घर पहुचे तो आते ही वैश्य के लडके को सर्प ने काट लिया, वह मूर्छित होकर गिर पड़ा। तब उसकी स्त्री अत्यन्त विलाप कर रोने लगी।

वैश्य ने अपने पुत्र को बड़े-बड़े वैद्यों को दिखाया। वैद्यों ने कहा तीन दिन पश्चात इसकी मृत्यु निश्चित हैं। जब उसके ब्राह्मण मित्र को सारी बात पता लगी तो उसने कहा - सनातन धर्म की प्रथा हैं जिस समय शुक्र अस्त हो तब कोई अपनी स्त्री को नहीं लाता। परन्तु यह शुक्र के अस्त में अपनी स्त्री को विदा करा कर लाया हैं। इस कारण सारे विघ्न उत्पन्न हुए हैं। यदि यह दोनों ससुराल वापस चले जाये और शुक्र के उदय होने पर पुनः आएं तो निश्चय ही विघ्न टल सकता हैं।

सेठ ने अपने पुत्र और उसकी पत्नी शीघ्र ही अपने ससुराल वापिस पहुंचा दिया। वहाँ पहुचते ही वैश्य पुत्र की मूर्छा दूर हो गई और साधारण उपचार से ही सर्प विष से मुक्त हो गया। अपने दामाद को स्वस्थ देखकर ससुराल वाले अत्यंत प्रसन्न हुए। वैश्य पुत्र अपनी ससुराल में ही स्वास्थ्य लाभ करता रहा और शुक्र का उदय हुआ तब हर्ष पूर्वक उसके ससुराल वालों ने उसको अपनी पुत्री सहित विदा किया। इसके पश्चात पति-पत्नी दोनों घर आकर आनन्द से रहने लगे। इस व्रत को करने से जीवन में आने वाली बांधाए दूर हो जाती हैं।

❑❑❑

शनिवार व्रत

(शनि साढ़ेसाती, शनि ढैय्या, शनि दोष निवारण
और शनि ग्रह शांति हेतु)

माहात्म्य

ऐसा माना जाता है कि जिस पर वे कुपित हो जाते हैं, उसके दुर्दिन शुरू हो जाते हैं। संसार में हर समस्या का समाधान है, पर शनिदेव के क्रोध से पार पाने का कोई उपाय नहीं है। यही कारण है कि भक्ति से अधिक भय के कारण सारा संसार शनिदेव को पूजता है। यह व्रत करने से शनि जनित सभी दोषों का निवारण होता है। शनि ग्रह शांत होकर व्यक्ति के कष्ट दूर करते हैं।

पूजन विधि-विधान

शनि व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम शनिवार से किया जा सकता है। सूर्योदय से पहले, या अधिकतम प्रातः 9 बजे तक, तांबे के कलश में जल में थोड़ी सी शक्कर और दूध मिला कर, पश्चिम दिशा में मुंह कर के, पीपल के पेड़ को अर्घ्य देना चाहिए। इस दिन नीले, बैंगनी तथा काले रंग के वस्त्र धारण करने चाहिएं। भोजन सूर्यास्त से 2 घंटे बाद करना चाहिए। व्रतों की संख्या 7, 19, 25, 33, 51 होनी चाहिए।

खाने में नमक वर्जित रखें तथा मौन व्रत रखें, तो श्रेष्ठ रहेगा। मछलियों को इस दिन दाना देना अति श्रेष्ठ है। लोहे की नाल (काले घोड़े) की अंगूठी पहनना भी शुभ होता है। कम से कम एक ऐसा पौधा व्रत के दिन अपने हाथ से लगाएं, जिसपर काले, नीले, या बैंगनी पुष्प आते हों। शनि व्रत से कुछ सीमा तक राहु दोष भी दूर होता है। आकाश मंडल का अवलोकन शनि ग्रह को संतुलित करने में मदद करता है।

ऋणग्रस्त व्यक्ति के लिए इस दिन काली गाय, जिसके सींग न हों तथा जो बिनब्याई हो, को घास खिलाना अति शुभ माना गया है। श्रेष्ठ रत्न विशेषज्ञ की राय से शनि रत्न नीलम, मध्यमा उंगली, या लॉकेट में बनवा कर, गले में धारण करना चाहिए। इस दिन बजरंगबली की आराधना तथा उनके सामने सरसों, या तिल के तेल का दीपक, पश्चिम दिशा में जलाना शुभ माना गया है। दीपक मिट्टी या फिर पीतल का श्रेष्ठ है। अंतिम व्रत के दिन उद्यापन में संक्षिप्त हवन करना श्रेष्ठ है। हवन में शमी वृक्ष की लकड़ी प्रयुक्त की जानी चाहिए।

व्रत कथा

राजा ने विक्रमादित्य से हार के बारे में पूछा तो उसने बताया कि उसके देखते ही देखते खूँटी ने हार को निगल लिया था। इस पर राजा ने क्रोधित होकर चोरी करने के अपराध में विक्रमादित्य के हाथ-पाँव काटने का आदेश दे दिया। राजा विक्रमादित्य के हाथ-पाँव काटकर उसे नगर की सड़क पर छोड़ दिया गया। कुछ दिन बाद एक तेली उसे उठाकर अपने घर ले गया और उसे अपने कोल्हू पर बैठा दिया। राजा आवाज देकर बैलों को हाँकता रहता। इस तरह तेली का बैल चलता रहा और राजा को भोजन मिलता रहा। शनि के प्रकोप की साढ़े साती पूरी होने पर वर्षा ऋतु प्रारंभ हुई।

राजा विक्रमादित्य एक रात मेघ मल्हार गा रहा था कि तभी नगर के राजा की लड़की राजकुमारी मोहिनी रथ पर सवार उस तेली के घर के पास से गुजरी। उसने मेघ मल्हार सुना तो उसे बहुत अच्छा लगा और दासी को भेजकर गाने वाले को बुला लाने को कहा। दासी ने लौटकर राजकुमारी को अपंग राजा के बारे में सब कुछ बता दिया। राजकुमारी उसके मेघ मल्हार से बहुत मोहित हुई। अतः उसने सब कुछ जानकर भी अपंग राजा से विवाह करने का निश्चय कर लिया। राजकुमारी ने अपने माता-पिता से जब यह बात कही तो वे हैरान रह गए। रानी ने मोहिनी को समझाया- बेटी! तेरे भाग्य में तो किसी राजा की रानी होना लिखा है। फिर तू उस अपंग से विवाह करके अपने पाँव पर कुल्हाड़ी क्यों मार रही है ?

राजकुमारी ने अपनी जिद नहीं छोड़ी। अपनी जिद पूरी कराने के लिए उसने भोजन करना छोड़ दिया और प्राण त्याग देने का निश्चय कर लिया। आखिर राजा-रानी को विवश होकर अपंग विक्रमादित्य से राजकुमारी का विवाह करना पड़ा। विवाह के बाद राजा विक्रमादित्य और राजकुमारी तेली के घर में रहने लगे। उसी रात स्वप्न में शनिदेव ने राजा से कहा- राजा तुमने मेरा प्रकोप देख लिया। मैंने तुम्हें अपने अपमान का दंड दिया है। राजा ने शनिदेव से क्षमा करने को कहा और प्रार्थना की- हे शनिदेव! आपने जितना दुःख मुझे दिया है, अन्य किसी को न देना।

शनिदेव ने कुछ सोचकर कहा- श्राजा! मैं तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार करता हूँ। जो कोई स्त्री-पुरुष मेरी पूजा करेंगा, शनिवार को व्रत करके मेरी व्रतकथा सुनेगा, उस पर मेरी अनुकम्पा बनी रहेगी। प्रातःकाल राजा विक्रमादित्य की नींद खुली तो अपने हाथ-पाँव देखकर राजा को बहुत खुशी हुई। उसने मन ही मन शनिदेव को प्रणाम किया। राजकुमारी भी राजा के हाथ-पाँव सही-सलामत देखकर आश्चर्य में डूब गई। तब राजा विक्रमादित्य ने अपना परिचय देते हुए शनिदेव के प्रकोप की सारी कहानी सुनाई।

सेठ को जब इस बात का पता चला तो दौड़ता हुआ तेली के घर पहुँचा और राजा के चरणों में गिरकर क्षमा माँगने लगा। राजा ने उसे क्षमा कर दिया क्योंकि यह सब तो शनिदेव के प्रकोप के कारण हुआ था। सेठ राजा को अपने घर ले गया और उसे भोजन कराया। भोजन करते समय वहाँ एक आश्चर्यजनक घटना घटी। सबके देखते-देखते उस खूँटी ने हार उगल दिया। सेठजी ने अपनी बेटी का विवाह भी राजा के साथ कर दिया और बहुत से स्वर्ण-आभूषण, धन आदि देकर राजा को विदा किया।

राजा विक्रमादित्य राजकुमारी मोहिनी और सेठ की बेटी के साथ उज्जयिनी पहुँचे तो नगरवासियों ने हर्ष से उनका स्वागत किया। अगले दिन राजा विक्रमादित्य ने पूरे राज्य में घोषणा कराई कि शनिदेव सब देवों में सर्वश्रेष्ठ हैं। प्रत्येक स्त्री-पुरुष शनिवार को उनका व्रत करें और व्रतकथा अवश्य सुनें। राजा विक्रमादित्य की घोषणा से शनिदेव बहुत प्रसन्न हुए। शनिवार का व्रत करने और व्रत कथा सुनने के कारण सभी लोगों की मनोकामनाएँ शनिदेव की अनुकम्पा से पूरी होने लगीं। सभी लोग आनंदपूर्वक रहने लगे।

❒❒❒

पुत्रदा एकादशी व्रत

(पुत्र प्राप्ति के लिए)

माहात्म्य

इस व्रत को करने से मनोवांछित फल प्राप्त होता है। व्रती की सभी मनोकामनाएं पूर्ण हो जाती हैं। जीवन सुखों से भर जाता है। मन में शांति, आत्मिक सुख और धार्मिक विचार उदय होते हैं। निःसंतान व्रती स्त्री को पुत्र रत्न की प्राप्ति होती है। मनुष्य के सब पाप नष्ट होते जाते हैं।

इस व्रत की कथा पढ़ने व सुनने से वाजपेय यज्ञ का फल प्राप्त होता है। इसका माहात्म्य सुनने से इहलोक में सुख भोगता है और अंत में परमगति को प्राप्त करता है।

पूजन विधि-विधान

यह व्रत श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी को रखा जाता है। इस दिन भगवान् विष्णु के नाम पर व्रत रखकर पूजा-अर्चना की जाती है। व्रती प्रातःकाल उठकर स्नानादि दैनिक कार्यों से निवृत्त होकर श्रीहरि विष्णु भगवान् की प्रतिमा को दूध, दही और शुद्ध जल से स्नान कराकर रोली, चंदन, पुष्प, धूप, दीप आदि से पूजन करके कपूर, दीपक से भक्ति-भावना पूर्वक आरती करें।

फिर मिष्ठान का भोग लगाकर प्रसाद भक्तों में बांटे। पांच ब्राह्मणों को भोजन कराकर यथाशक्ति दान-दक्षिणा देकर विदा करें। उनका आशीर्वाद प्राप्त करें। व्रत का दिन भजन-कीर्तन में गुजारकर रात्रि में भगवान् की प्रतिमा के पास सोएं।

व्रत कथा

इस व्रत की कथा का उल्लेख श्रीपद्म पुराण में इस प्रकार आया है -

द्वापर युग में महिष्मतीपुरी का राजा महीजित् एक शांतिप्रिय व धर्मात्मा व्यक्ति था। धर्मपूर्वक उचित रास्ते पर चलने वाला यह राजा पुत्र-विहीन था, इसलिए वह दुखी रहता था। क्योंकि पुत्र-विहीन व्यक्ति को इस लोक में और परलोक में सुख नहीं मिलते।

प्रजा के पुरोहित और ब्राह्मणों ने तीनों कालों के जानने वाले महामुनि लोमेश के पास जाकर राजा की दशा का वर्णन किया, तो उन्होंने कहा - हे राजा पूर्व जन्म में एक अत्याचारी, धनहीन वैश्य था, जो गांव-गांव वाणिज्यवृत्ति किया करता था। इसी एकादशी के दिन दोपहर के समय वह प्यास से व्याकुल होकर एक जलाशय पर पहुंचा, तो वहां गर्मी से पीड़ित एक प्यासी गाय को जलाशय में पानी पीते देखकर इसने पानी पीने से रोक दिया और स्वयं पानी पीने लगा। उसी दुष्कर्म के कारण यह राजा पुत्र-विहीन है और उन पुण्यों से, जो इसने अपने पुनर्जन्म में किए थे, इसे राजा का पद मिला है।

हे महामुनि! हमारे राजा का पाप दूर हो जाए और पुत्र भी उत्पन्न हो, कृपया ऐसा कोई उपाय बताने का करें। उपस्थित प्रजा के लोगों ने मुनि से कहा। तब लोमेश ने उन्हें बताया - श्रावण शुक्ल पक्ष पुत्रदा नाम की एकादशी तिथि इसके लिए सर्वथा उचित है।

तुम सब लोग विधिपूर्वक शास्त्रोक्त रीति से जागरण के साथ इस व्रत को करो और उसका पुण्य राजा को दे दो, तो निश्चय ही राजा का पुत्र होगा। प्रजा के साथ-साथ जब राजा ने भी इस व्रत को रखा, तो उसके प्रताप से रानी गर्भवती हुई और उसने समय आने पर एक तेजस्वी पुत्र को जन्म दिया। तभी से इस एकादशी को पुत्रदा एकादशी के नाम से जाना जाता है।

❑❑❑

षट्तिला एकादशी व्रत

(दरिद्र विनाश, धन-वैभव एवं सौभाग्य प्राप्ति हेतु)

माहात्म्य

यह व्रत माघ मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी को रखा जाता है। इस एकादशी व्रत के दिन छह प्रकार के तिलों का प्रयोग किया जाता है, जिसके कारण इसका नामकरण षट्तिला एकादशी व्रत पड़ा। जो मनुष्य इस व्रत का पूर्ण विधि-विधानानुसार पालन करके पूरा करता है, उसे बुरे कर्मों और पापों से मुक्ति मिलती है तथा उसका जीवन सुखमय बनता है। व्रत के प्रभाव से धन, धान्य, वस्त्र एवं स्वर्ण आदि से घर संपन्न हो जाता है। हर जन्म में आरोग्य मिलता है। कभी धन का अभाव कष्ट और दुख की पीड़ा नहीं होती।

व्रती को बैकुंठ की प्राप्ति होती है। ऐसा कहा जाता है कि षट्तिला के उपवास के बराबर कोई अन्य श्रेष्ठ नहीं है। चूंकि माघ मास (जनवरी-फरवरी) की ऋतु ठंडी और स्निग्ध प्रकृति के पदार्थों के सेवन के लिए उपयुक्त होती है, अतः जो व्यक्ति इस दिन तिल से बने विविध व्यंजनों का सेवन करता है उसको स्वास्थ्य लाभ मिलता है। इस एकादशी व्रत के दिन काली गाय तथा काले तिलों का दान करने का विशेष माहात्म्य है।

पूजन विधि-विधान

इस एकादशी व्रत के दिन शरीर पर तिल के तेल की मालिश करना, तिल के जल का पान एवं तिल के पकवानों का सेवन करने का विधान है। सफेद तिल से बनी चीजें खाने का महत्त्व अधिक बताया गया है। इस दिन विशेष रूप से भगवान् श्रीहरि विष्णु की पूजा की जाती है। व्रती उनका पूजन तिलों से करें। तिल के बने लड्डुओं का भोग लगाएं और तिलों से निर्मित प्रसाद ही भक्तों में बांटें।

व्रती को जितेंद्रिय रहकर काम, क्रोध, ईर्ष्या आदि विकारों का त्याग कर उपवास में तिल पट्टी, फलाहार सेवन करना चाहिए। अन्न का सेवन न करें। तिलों का हवन करके रात्रि जागरण करें। ब्राह्मण को भरा हुआ घड़ा, छतरी, जूतों का जोड़ा, काली गाय काले तिल और उससे बने व्यंजन, वस्त्रादि का दान करें।

व्रत कथा

इस व्रत की कथा का उल्लेख श्रीभविष्योत्तर पुराण में इस प्रकार उल्लिखित है- पुराने समय में मृत्यु लोक में एक ब्राह्मणी रहती थी जो सदा ही व्रत, पूजा-पाठ में लगी रहती थी। अधिक उपवासों के करने से वह शरीर से क्षीण हो गई थी। फिर भी उसने ब्राह्मणों को तो अन्नदान से प्रसन्न रखा, लेकिन देवताओं को प्रसन्न नहीं रखा। एक दिन श्रीहरि स्वयं एक कृपाली का रूप धारण कर उस ब्राह्मणी के घर भिक्षा मांगने पहुंचे। ब्राह्मणी ने आक्रोश में आकर भिक्षा पात्र में एक मिट्टी का ढेला डाल दिया।

इस व्रत के प्रभाव से जब वह ब्राह्मणी अपनी मृत्यु के उपरातं स्वर्गलोक में पहुंची तो उसे रहने के लिए मीट्टी से बना एक सुंदर, स्वच्छ मकान मिला। लेकिन उसके खाने-पीने के लिए अन्न आदि की व्यवस्था उसमें नहीं थी। इस कारण दुखित होकर उसने भगवान से प्रार्थना की कि मैंने जीवन भर इतने व्रतादि, कठोर तप किए हैं फिर यहां मेरे लिए खाने-पीने की कोई व्यवस्था नहीं है।

इस पर भगवान् ने प्रकट होकर कहा- इसका कारण तुम्हें देवांगनाएं बताएंगी, उनसे पूछो। जब ब्राह्मणी ने देवांगनाओं से जानना चाहा तो उन्होंने बताया कि तुमने षट्तिला एकादशी का व्रत नहीं किया। जब ब्राह्मणी ने पूरे विधि-विधानानुसार इस व्रत को किया और तिल व वस्त्र का दान किया तो उसे स्वर्ग में सारे सुखों की उपलब्धि हो गई।

❑❑❑

जया एकादशी व्रत

(दुख-दरिद्रता दूर करने एवं कष्ट मुक्तिके लिए)

माहात्म्य

इस एकादशी व्रत को बड़ा पवित्र माना गया है। जो इस दिन श्रद्धा भाव से भगवान विष्णु का पूजन करते हैं, उनको सद्गति प्राप्त होती है। व्रत के प्रभाव से व्रती को कभी भी पिशाच (भूत, प्रेत) योनि प्राप्त नहीं होती। इसके अलावा उसके समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं।

भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है कि इससे अधिक उत्तम पापनाशिनी और मोक्षदायिनी कोई भी एकादशी व्रत नहीं है। जो मनुष्य पूर्ण श्रद्धा, भक्ति भाव से जया एकादशी का व्रत करता है, उसकी सब इच्छाएं पूर्ण होती हैं और वह कल्प कोटि पर्यंत बैकुंठ में आनंद भोग करता है।

जिसने इस व्रत को कर लिया, समझो उसने सब यज्ञों को और दानों का पुण्य प्राप्त कर लिया, सब तीर्थों में स्नान कर लिया। यानी उन सबके बराबर फल की प्राप्ति होती है। इस व्रत की कथा को सुनने से अग्निष्टोम यज्ञ का फल प्राप्त होता है।

पूजन विधि-विधान

यह व्रत माघ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी को रखा जाता है। इस दिन का व्रत शुद्ध मन से करने का विधान शास्त्रों में वर्णित है। मन में किसी भी प्रकार के दुर्गुण का विचार नहीं आने देना चाहिए। एकादशी व्रत के दिन प्रातःकाल स्नानादि नित्य कर्मों से निवृत्त होकर, स्वच्छ वस्त्र धारण करें।

फिर भगवान् श्रीकृष्ण का विशेष पूजन रोली, चंदन, अक्षत, जल, पुष्प, सुगंध, नैवेध आदि से षोडशोपचार विधि द्वारा विधिवत पूजन कर श्रीकृष्ण की स्तुति करें। भगवान को भोग लगाकर प्रसाद को भक्तों में बांट दें। उपवास में केवल एक वक्त फलाहार करें। अन्न के सेवन से परहेज करें। दूसरे दिन व्रत का पारण करें।

व्रत कथा

इस व्रत की कथा का उल्लेख श्रीपद्म पुराण में इस प्रकार मिलता है -

एक समय देवराज इंद्र ने अप्सराओं के नृत्य और गंधर्वो के गायन का आयोजन किया। इसमें माल्यवान नामक एक गंधर्व पर पुष्पवती नाम की एक गंधर्वी मोहित हो गई। उसके भावपूर्ण कटाक्षों और मनोहारी चितवन से माल्यवान भी कामुक हो उठा।

इससे दोनों के नृत्य और गायन में अशुद्धियां होने लगी। देवराज इंद्र ने उनकी मनःस्थिति ताड़ ली। वे बहुत कुपित हुए और उन्होंने कुपित होकर दोनों को शाप दिया कि तुम दोनों मृत्यु लोक में जाकर पिशाच योनि भोगी।

उस शाप के प्रभाव से पिशाच योनि प्राप्त कर दोनों ने अनेक प्रकार के कष्ट और दुख भोगे। उन्हें सदुपदेश देकर समझाया-बुझाया तथा माघ शुक्ल एकादशी का व्रत रखने का परामर्श दिया। इसी व्रत के प्रभाव से दोनों पिशाच योनि से मुक्त होकर पुनः गंधर्व-स्वरूप पा गए।

इस एकादशी व्रत के दिन जो व्रती श्रद्धा पूर्वक भगवान् विष्णु का पूजन करते हैं, उन्हें सद्गति प्राप्त होती है तथा मनोवांछित फल प्राप्त हाते हैं। इहलाकिक तथा पारलौकिक सुखों को भोगता हुआ प्राणी भव बंधन से मुक्त हो जाता है।

❑❑❑

विजया एकादशी व्रत

(मानसिक ताप दूर करने एव सात्विकता बनाए रखने के लिए)

माहात्म्य

इस एकादशी व्रत के दिन ही भगवान् श्रीराम लंका पर आक्रमण करने के लिए समुद्र तट पर पहुंचे और इस व्रत को षोडशोपचार विधि से शिवपूजन करके ही समुद्र पर पुल बांधने में सफल हुए थे। इस व्रत के प्रभाव से ही उन्होंने रावण पर विजय प्राप्त की थी। जो मनुष्य इस व्रत का पूर्ण श्रद्धापूर्वक नियम से पालन करता है, उसकी सर्वत्र सदा ही विजय होती है। उसके समस्त कष्ट दूर होते हैं। कार्य में सफलता प्रदान करने के कारण ही इसका नाम विजया एकादशी व्रत पड़ा है।

इस व्रत का माहात्म्य सब पापों को दूर करता है। व्रती के सारे दुख, दारिद्रय दूर होते हैं। इस व्रत की महिमा से इस लोक में जय और परलोक में सद्गति होती है। इस व्रत की कथा पढ़ने और सुनने के वाजपेय यज्ञ का फल मिलता है।

पूजन विधि-विधान

यह व्रत फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी को रखा जाता है। इस दिन व्रती प्रातःकाल उठकर दैनिक क्रियाओं से निवृत्त होकर स्नानादि से शुद्ध हो स्वच्छ वस्त्र धारण करें। भूमि पर सात प्रकार के अन्न (सप्तधान्य) रखकर उसके ऊपर मिट्टी का बना हुआ सुंदर कलश स्थापित करें। एक पात्र में जौ भरें और उसे कलश पर स्थापित कर दें। जौ के बर्तन में श्रीलक्ष्मीनारायण की स्थापना करके उनका विधिपूर्वक पूजन करें।

रात भर भजन-कीर्तन में गुजारें। द्वादशी के दिन प्रातःकाल सूर्योदय के समय उस घड़े को किसी जलाशय के निकट नदी या झरने के पास ले जाकर यथाविधि पूजन करें। फिर उस घड़े को मूर्ति सहित किसी ब्राह्मण को दान कर दें। व्रत के दिन एक समय सिंघाड़े का फलाहार करें। अन्न सेवन से परहेज करें। दूसरे दिन पारण करें।

व्रत कथा

इस व्रत की कथा का उल्लेख श्रीपद्म पुराण में निम्न प्रकार से हुआ है-

बात उस समय की है जब भगवान श्रीराम 14 वर्ष तक सीता और लक्ष्मण के साथ तपोवन में जाकर पंचवटी में निवास कर रहे थे। जब सीता माता को रावण हरण करके ले गया तो श्रीराम ने लंका पर चढ़ाई करने की योजना बनाई। इस बीच सुग्रीव व हनुमान से हो गई। हनुमान सीता की खोज-खबर करने लंका में गए। वहां अशोक वाटिका में सीताजी के पास पहुंचकर उन्होंने दोनों ओर के समाचारों का आदान-प्रदान किया। सुग्रीव की सलाह से वानरों की एक सेना तैयार की गई।

श्रीराम ने लक्ष्मण से विचार-विमर्श करके पास के आश्रम में मुनिराज से संपर्क किया और पूछा-मुनिवर! कृपा करके कोई ऐसा उपाय बताइए, जिससे मैं समुद्र पार करके दुष्ट रावण को मारकर लंका पर विजय प्राप्त कर सकूं। मुनिराज ने कहा-हे राम! मैं आपको ऐसे उत्तम व्रत को करने का उपदेश दूंगा, जिसके करने से विजय निश्चित रूप से आपकी ही होगी। उस व्रत का नाम विजया व्रत है -

यह एकादशी के दिन किया जाता है। फिर उन्होंने श्रीराम को उस व्रत को करने की विधि समझा दी। श्रीराम ने मुनि द्वारा बताई विधि के अनुसार व्रत का अनुष्ठान पूरा किया और लंका पर विजय प्राप्त की। सीता माता को रावण के चंगुल से मुक्त कराया। तभी से इस व्रत को करने की परंपरा आरंभ हुई।

❑❑❑

आंवल / आंवलकी एकादशी व्रत

(शत्रुओं पर विजय एवं दुखों से मुक्तिके लिए)

माहात्म्य

ऐसा विश्वास है कि आंवले के वृक्ष में भगवान विष्णु का निवास होता है। इसलिए इस दिन भगवान विष्णु की पूजा की जाती है, जिससे उसका नाम आंवल एकादशी व्रत पड़ा। यह एकादशी व्रत समस्त व्रतों के फलों को देने वाली, महापापों का नाश करने वाली, सहस्र गोदान के समान पुण्यों को देने वाली और मोक्ष प्रदान करने वाली मानी गई है। इसका उपवास करने से शत्रुओं पर विजय प्राप्त होती है तथा दुखों से मुक्ति मिलती है। जो मनुष्य आंवल एकादशी का व्रत करते हैं, वे निश्चय ही विष्णु लोक के अधिकारी होते हैं। इस दिन ब्राह्मणों को भोजन और दान देने से वाजपेय यज्ञ का फल मिलता है। इसी तिथि से होली का त्यौहार आरंभ हो जाता है।

पूजन विधि-विधान

यह व्रत फाल्गुन मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी को रखा जाता है। व्रती को प्रातःकाल शौचादि कर्मों से निवृत्त होकर आंवले का उबटन लगाना चाहिए, फिर कुछ समय बाद स्नान करके व्रती स्वच्छ वस्त्र धारण करें। पात्र में जल लेकर आंवले के वृक्ष पर जल चढ़ाकर अर्घ्य दें। इसके बाद वृक्ष के पास बैठकर षोडशोपचार विधि से पूरब दिशा की ओर मुख कर विधिवत् आंवले के वृक्ष का पूजन करें। इसी दिन भगवान् विष्णु का पूजन धूप, दीप, नैवेद्य से करने का भी विधान है। पूजन के पश्चात् संभव हो तो आंवले के वृक्ष के नीचे ही ब्राह्मणों को भोजन कराकर आंवलों का दान करें।

व्रत कथा

इस व्रत की कथा का उल्लेख श्रीब्रह्मांड पुराण में निम्न प्रकार से हुआ है - प्राचीन काल में वैदिश नामक नगर में चंद्रवंशी राजा चैत्ररथ राज्य करता था। उसके राज्य में चारों वर्णों के मनुष्य सुखपूर्वक रहते थे। कोई भी गरीब व दुखी न था, क्योंकि राजा के साथ सभी प्रजा एकादशी व्रत के सभी व्रत विधिपूर्वक करती थी। राजा भी बड़ा विद्वान् व धार्मिक प्रवृत्ति वाला था। उस नगर के सभी लोग भगवान् विष्णु के भक्त थे। एकादशी व्रत के दिन कोइ भी व्यक्ति भोजन नहीं करता था।

एक बार आंवल एकादशी व्रत के दिन सबने मिलकर व्रत धारण किया और विधि-विधान से पूजन समारोह आयोजित कर रात्रि जागरण भी किया। इस बीच वहां एक व्याघ्र (बहेलिया) भूख, प्यास से व्याकुल होकर आया और अन्य लोगों के बीच के बीच बैठकर एकादशी व्रत का माहात्म्य का सुनने लगा। सुबह सब अपने-अपने घर चले गए। इस व्याघ्र ने भी घर जाकर भोजन किया और शराब पीने और मांस खाने से तौबा कर ली। कुछ काल बाद जब उस व्याघ्र की मृत्यु हुई तो अपने शुभ कर्मों और एकादशी के व्रत प्रभाव से राजा विदूरथ के यहां जन्म लिया, जिसका नाम रखा गया- वसुरथ युवा हुआ तो उसकी रुचि धार्मिक कृत्यों में बढ़ती गई।

एक बार शिकार खेलते हुए वह वन में भटक गया। भूखा, प्यासा एक वृक्ष के नीचे बैठ गया। कुछ समय बाद ही वहां पहाड़ी लोग आ गए और उन्होंने वसुरथ को घेर लिया। चूंकि वसुरथ देवी का भक्त था, इसलिए सभी म्लेच्छों द्वारा चलाए तीरों के वार पलट कर म्लेच्छों को ही लगे और वे मरने लगे। वसुरथ यह सब देखकर आश्चर्यचकित रह गया। इतने में आकाशवाणी हुई- हे वसुरथ! पूर्व जन्म में तुम व्याघ्र थे। आंवल एकादशी के व्रत से प्राप्त पुण्य से तुम्हारी रक्षा देवी द्वारा हुई है। यह सुनकर वसुरथ मन ही मन भगवान् की स्तुति करने लगा। सुबह वह अपने राज्य में लौटा और फिर से धर्म पूर्वक शासन करने लगा। उसने शिकार कर जीवों की हत्या करने का विचार सदैव के लिए त्याग दिया।

❑❑❑

पापमोचनी एकादशी व्रत

(ब्रह्महत्या जैसे दोषों के शमन के लिए)

माहात्म्य

पापमोचनी एकादशी व्रत चैत्र मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी व्रत को मनाई जाती है। जो मनुष्य इस व्रत को करते हैं, उसके सब पाप क्षीण होकर नष्ट हो जाते हैं। यहां तक कि ब्रह्महत्या, सुवर्ण चोरी, मद्यपान, गुरुपत्नी या पर स्त्री के साथ किए व्यभिचार तक के पाप भी दूर हो जाते हैं। यानी समस्त पापों से मुक्ति मिलती है। मन स्वच्छ भावनाओं से भर जाने के कारण आत्मशांति मिलती है। ऐसा कहा जाता है कि व्रत की कथा पढ़ने या सुनने मात्र से एक हजार गोदान का पुण्यफल प्राप्त होता है। इसका अनुष्ठान करने से असीम पुण्य का फल प्राप्त होता है।

पूजन विधि-विधान

पापमोचनी एकादशी व्रत में भगवान विष्णु के चर्तुभुज रूप की पूजा की जाती है। इस दिन स्नानादि से निवृत्त होकर व्रत का संकल्प लें। श्रीहरि विष्णुजी का पूजन विधि-विधानानुसार धूप-दीप, नैवेद्य से करके भोग चढ़ाएं। प्रसाद सब में बांटकर अपनी श्रद्धानुसार ब्राह्मणों को भोजन कराएं। भगवान विष्णु की प्रतिमा के सामने बैठकर श्रीमद्‌भागवत कथा का पाठ करें। सामर्थ्यानुसार दान-दक्षिणा दें। उपवास में अन्न और नमक का सेवन न करें। रात्रि में श्री विष्णु का पाठ करते हुए जागरण करें, द्वादशी तिथि के दिन प्रातःकाल में स्नान कर भगवान विष्णु का पूजन करें। ब्राह्मणों को भोजन व दक्षिणा देकर व्रत का समापन करें एवं अंत में स्वयं भोजन करें।

व्रत कथा

इस कथा का उल्लेख श्रीपद्‌म पुराण में इस प्रकार मिलता है- प्राचीन काल में चैत्ररथ नामक एक वन में देवराज इंद्र देवताओं और अप्सराओं के साथ बसंत ऋतु का आनंद ले रहे थे। इस सुंदर अद्वितीय वन में मुनिगण तप करते थे। एक मेधावी नाम के मुनिराज की तपस्या को भंग करने का बीड़ा विख्यात अप्सरा मंजुघोषा ने उठाया, तो उसके अलौकिक सौंदर्य पर वह मोहित हो गया। जब मंजुघोषा कामविभोर होकर मेधावी के शरीर से लिपट गई, तो उन्होंने उसके साथ रमण किया।

फिर वे मंजुघोषा के सुंदर शरीर के मोह में ऐसे फंसे कि शिवतत्त्व को भूलकर कामतत्त्व के चक्कर में पड़ गए। भोग-विलास में न दिन का ज्ञान रहता और न रात का। इस प्रकार मेधावी मुनि का बहुत-सा समय यूं ही बीत गया। एक दिन मंजुघोषा ने मेधावी से देवलोक जाने की आज्ञा मांगी, तो उसने कहा कि अभी संध्याकाल में तो तुम आई हो, सुबह चली जाना।

इस तरह मुनि ने 57 वर्ष से अधिक समय तक रमण करते हुए बिताए, फिर भी उनकी पिपासा शांत नहीं हुई। मंजुघोषा के बार-बार देवलोक जाने की बात से मुनि ने क्रोधित होकर कहा, तूने रूपजाल में फंसाकर मेरा सारा तप नष्ट कर दिया, इसलिए मैं तुझे शाप देता हूं कि तू पिशाचिनी हो जा। इस पर मंजुघोषा ने मुनि से नम्रतापूर्वक कहा-आप क्रोध त्यागकर शाप से निवृत्त करने के उपाय बताएं।

मुनि ने तब उसे चैत्र मास की कृष्ण पक्ष वाली पापमोचनी एकादशी व्रत को व्रत करने को कहा। मुनि ने बताया कि पापमोचनी एकादशी व्रत का पालन करने से तुम्हारे सारे पापों का नाश होगा और तुम्हारी पिशाचयोनि का क्षय होगा। ऐसा कहकर मुनि अपने पिता च्यवन ऋषि के आश्रम में चले गए। वहां उन्होंने अपने पाप कर्म बताए, तो च्यवन ऋषि ने उन्हें यही व्रत करने को कहा। पिता के वचन सुनकर मुनि ने व्रत किया, जिससे उनके सारे पाप नष्ट हो गए। उस अप्सरा मंजुघोषा ने भी इस व्रत को किया, जिसके प्रभाव से वह भी पिशाचयोनि से मुक्त होकर दिव्य रूप धारण कर स्वर्ग चली गई।

❑❑❑

कामदा एकादशी व्रत

(पापक्षय के लिए)

माहात्म्य

यह व्रत चैत्र मास की शुक्ल पक्ष की एकादशी व्रत को किया जाता है। पुराणों में कहा गया है कि चर और अचर सहित इस संसार में कामदा एकादशी व्रत से अधिक उत्तम और कोई दूसरी एकादशी व्रत नहीं है। वैसे तो एकादशी व्रत का प्रादुर्भाव उत्पन्ना एकादशी व्रत से ही माना है। इसका व्रत रखने से वैकुण्ठ धाम की प्राप्ति होती है। सब तरह के पापों का जैसे पापों से भी छुटकारा मिलता है। पिशाचत्व दूर होता है। इस व्रत को करने से समस्त मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।

पूजन विधि-विधान

कहा जाता है कि **एकादश्यां न भुञ्जीत पक्षयोरुभयोरपि** अर्थात दोनों पक्षों की एकादशी व्रत में भोजन नहीं करना चाहिए। दशमी को यानी व्रत के पहले दिन जौ, गेहूं, मूंग में बने पदार्थ दोपहर के भोजन में एक विधान है। एकादशी व्रत के दिन प्रातः जल्दी उठकर स्नानादि से निवृत्त होकर स्वच्छ वस्त्र धारण करें। व्रत का संकल्प **ममाखिल पापक्षयपूर्वक प्रीतिकामतया कामदैकादशी व्रतं करिष्ये** कहकर रात्रि में भगवान को झूले में बैठाएं, फिर धूप-दीप, पुष्प माला चढ़ाकर पूजन करें। कथा वाचन के पश्चात मिष्ठान का भोग लगाकर सबको प्रसाद दें। रात्रि में भजन, कीर्तन कर जागरण करें और दूसरे दिन पारण करें। केवल फलाहार लें। अन्न का सेवन पूर्णतया त्याग दें।

व्रत कथा

इस कथा का उल्लेख श्रीपद्म पुराण में राजा दिलीप ने मुनि वसिष्ठजी से इस प्रकार सुनी थी कि प्राचीन काल में नाग लोक के भोगिपुर नाम के नगर में पुंडरीक नाम का नाग राज करता था। उनकी सेवा में गंधर्व, किन्नर और अप्सराएं लगी रहती थी। उसी नगर में ललिता नाम की अप्सरा और ललित नामक गंधर्व पति-पत्नी के रूप में निवास करते थे। वे दोनों सदा एक-दसरे के प्रेम में खोए रहते थे। एक दिन किसी सभा में ललित अपनी पत्नी ललिता के बिना गायन कर रहा था। गायन में गलतियां होने पर वे श्रापित हुए और राक्षस बन गये।

ललिता ने जब अपने पति को इस रूप में देखा तो वह दुखी हो गई। अपने पति को श्राप मुक्त करने के लिए वह जगह-जगह भटकने लगी। एक बार जब वह भटकती हुई विंध्याचल के शिखर पर पहुंची, तो वहां ऋष्यश्रृंग मुनि का आश्रम मिला।

मुनिराज को ने अपना पूर्ण परिचय देते हुए अपना दुखड़ा सुनाया। अपने पति की राक्षसगति से मुक्ति का उपाय जब ललिता ने ऋषि से पूछा तो ऋषि बोले- इस समय चैत्र मास की शुक्ल एकादशी व्रत का दिन है। सब इच्छाओं को पूर्ण करने के कारण इसका नाम कामदा है। तुम इस व्रत को मेरी बताई विधि से पूर्ण कर व्रत का पुण्य अपने पति को अर्पण कर दो। इससे उसका शाप दोष दूर हो जाएगा।

ललिता ने प्रसन्नता पूर्वक इस एकादशी व्रत का पालन किया और द्वादशी के दिन भगवान वासुदेव और ब्राह्मण के निकट बैठकर भगवान से प्रार्थना की- मैंने जो यह व्रत, उपवास किया है वह पति के उद्धार के लिए किया है। उसके दुष्यप्रभाव से मेरे पति का शाप दोष दूर करें।

ऐसा बोलते ही उसका पति राक्षस का रूप त्याग कर फिर से दिव्य रूप धारण करके गंधर्व बन गया। फिर उन दोनों पति-पत्नी ने पूर्व की भांति वैवाहिक आनन्द उठाया। इस प्रकार वे कामदा एकादशी व्रत के प्रभाव से बड़े सुखी हो गए। तभी से समस्त मनोकामनाएं पूर्ण करने के लिए यह व्रत किया जाता है।

❑❑❑

वरुथिनी एकादशी व्रत

(इहलोक तथा परलोक सुधारने के लिए)

माहात्म्य

वरुथिनी एकादशी का व्रत वैशाख मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी के दिन रखा जाता है। वरुथिनी एकादशी व्रत सौभाग्य देने वाला, सब पापों को नष्ट करने वाला तथा अंत में मोक्ष देने वाला माना गया है। इस व्रत का फल कुरुक्षेत्र में सूर्य ग्रहण के समय सुवर्ण दान देने, कन्या दान करने, विद्या दान और हजारों वर्षों तक ध्यान मग्न तपस्या करने से मिलने वाले फल के बराबर होता है।

यह व्रत इस लोक और परलोक में सुख सौभाग्य प्रदान कर इच्छाओं को पूर्ण करने वाला होता है। इस व्रत को करने से सभी कष्ट दूर होते हैं। रात्रि जागरण कर जो इस दिन भगवान् की पूजा करता है, वह अपने सभी पाप धोकर परम गति को प्राप्त करते हैं। इस व्रत की कथा का माहात्म्य पढ़ने और सुनने से सहस्र गोदान करने के समान पुण्य मिलता है।

इस व्रत से अभागिनी स्त्री को सौभाग्य मिलता है। एक पौराणिक कथा के अनुसार वरुथिनी एकादशी के व्रत के प्रभाव से राजा मांधाता स्वर्ग को गया था। इस व्रत को करने से हाथी का दान और मोती का दान करने से प्राप्त होने वाले पुण्य से अधिक फल मिलता है।

पूजन विधि-विधान

इस दिन व्रती को सारे दिन का उपवास करना चाहिए। उपवास में केवल फलाहार यानी दशमी के दिन से व्रती को मास, मसूर, शहद, चना, शाक, कद्दू, तामसिक भोजन और सहवास) का त्याग कर देना चाहिए। एकादशी व्रत के दिन क्रोध, निंदा, चुगली, चोरी, हिंसा, देर तक सोना, झूठ बोलना, पान खाना, दंत-मजन आदि जैसे वर्जित कर्म न करें।

ब्रह्ममुहूर्त में उठकर घर की सफाई करने के बाद स्नानादि से निवृत्त होकर पूजन की तैयारी करें। फिर धूप-दीप जलाकर रोली, चावल से भगवान् विष्णु की मूर्ति को तिलक लगाएं और पूजन करें। पूजन के पश्चात् कथा पाठ करें। मिष्ठान का भोग लगाकर उस प्रसाद का वितरण भक्तों में करें ।

व्रत कथा

इस व्रत की कथा का उल्लेख श्रीपद्म पुराण में मिलता है। कथा इस प्रकार है कि- प्राचीन समय में मान्धाता नामक एक परम तेजस्वी राजा नर्मदा नदी के तट पर रहता था। वह दानी और तपस्वी था। एक दिन वह तपस्या में लीन था, तो उस दौरान एक जंगली भालू आकर उसका पैर चबाने लगा, लेकिन मान्धाता को न तो कोई घबराहट हुई और न ही उस पर क्रोध आया।

बस मन-ही-मन वह भगवान् विष्णु से प्रार्थना करने लगा। भक्त की विनती सुनकर श्रीहरि प्रकट हुए और अपने सुदर्शन चक्र से उस भालू का सिर काट डाला। चूंकि भालू ने राजा का एक पैर चबाकर नष्ट कर दिया था, जल वह अपना अपंग अवस्था को देखकर बहुत दुखी हुआ।

उसका दुख समझकर भगवान विष्णु ने कहा - राजन तुम मथुरा जाकर मेरे वाराह अवतार वाले रूप की उपासना वरुथिनी एकादशी व्रत सहित पूर्ण कर लोगे, तो तुम्हारा पैर फिर से मिल जाएगा। मथुरा पहुंचकर राजा मान्धाता ने भगवान विष्णु के बताए अनुसार भगवान् वाराह का पूजन एवं उपवास करने से पैर वापस मिल गया और वह संपूर्ण अंगों वाला बन गया।

❑❑❑

मोहिनी एकादशी व्रत

(शुभ-सौभाग्य प्राप्ति, पापों के विनाश और दुखों के निवारण हेतु)

माहात्म्य

मोहिनी एकादशी का व्रत वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी को किया जाता है। इस व्रत के प्रभाव से मनुष्य मोहजाल और पापों से अवश्य मुक्त हो जाता है। इस व्रत की कथा को एकाग्रचित्त होकर सुनने से मनुष्य के पाप धुल जाते हैं। कथा वाचन और श्रवण करने से सहस्र गोदान का फल मिलता है। मोहिनी एकादशी सब पापों का नाश करती है।

यह सब जानकर भगवान् श्रीराम ने सीताजी की खोज करते समय इस व्रत को किया था। श्रीकृष्ण भगवान् के कहने पर युधिष्ठिर ने और मुनि कौण्डिन्य के कहने पर धृष्टबुद्धि ने भी इसे किया था। इस प्रकार इस व्रत को करने से व्रती की समस्त मनोकामनाएं तो पूरी होती ही हैं, मन को शांति पहुंचाने और निंदित कर्मों को छोड़कर सत्कर्म करने की शक्ति भी प्राप्त होती है। तीर्थ दान तथा यज्ञ आदि से भी बढ़कर इसका माहात्म्य शास्त्रों में वर्णित है। एक मान्यता के अनुसार इस दिन भगवान विष्णु मोहिनी रूप में प्रकट हुए थे इसलिए मोहिनी एकादशी व्रत के दिन भगवान विष्णु के मोहिनी स्वरूप की पूजा भी की जाती है।

पूजन विधि-विधान

इस दिन मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्रीराम की पूजा-अर्चना करने का विधान है। व्रती को स्नानादि से निवृत्त होकर भगवान् श्रीराम की प्रतिमा को दूध, जल से स्नान कराकर, श्वेत वस्त्र पहनाना चाहिए। फिर उच्चासन पर बैठाकर रोली व चंदन से तिलक लगाकर श्वेत पुष्पों की माला पहनाएं। धूप-दीप जलाकर आरती उतारें। तपश्चात पंचमेवा एवं मीठे फलों का भोग लगाकर उसको भक्तों में बांटें। ब्राह्मणों को भोजन कराकर उन्हें श्वेत वस्त्रों का दान करें। रात्रि में भजन-कीर्तन कर प्रसाद वितरित करें। व्रत के दिन अन्न का सेवन वर्जित है। निराहार रहें और शाम की पूजा के बाद चाहें तो फल ग्रहण कर सकते हैं। जो लोग एकादशी व्रत व्रत का पालन नहीं करते हैं उन्हें भी इस दिन चावल का सेवन नहीं करना चाहिए।

व्रत कथा

इस व्रत की कथा का उल्लेख श्रीपद्म पराण में प्राचीन काल में सरस्वती नदी के तट पर भद्रावती नाम की एक सुंदर नगरी बसी हुई थी। जहां द्युतिमान नाम का एक राजा राज करता था। इसी जगह संपन्न पुण्यात्मा सेठ भी रहता था। धनपाल नामक एक वह सदा शुभ कर्मों को करने और धार्मिक स्थलों का निर्माण कराने में में लगा रहता था। उसका धृष्टबुद्धि नामक पुत्र महापापी था। वह सदा ही दुष्कर्मों यानी व्यकि खेलना, बदमाशों की संगति करना आदि में लिप्त रहता था। उसकी गलत आदतों को देखते हुए उसे देश से निकाल दिया गया। तो वह वन में जाकर रहने लगा। वहां वह तामसिक भोजन खाकर दिन गुजारने लगा।

इस प्रकार वह पाप के दल-दल में फंसता चला गया। एक दिन संयोग व किसी पुण्य प्रताप से वह कौण्डिन्य ऋषि के आश्रम में जा पंहुचा। वहां ऋषि के गंगा-स्नान से भीगे हुए वस्त्रों की, एक बूंद धृष्टबुद्धि पर पड़ी, तो वह पापी शुद्ध हो गया। उसने ऋषि से अपने सारे पापों को बिना धन के प्रायश्चित करने का उपाय पूछा, तो उन्होंने मोहिनी एकादशी का व्रत करने की सलाह दी और बताया कि इसके करने से समेरु पर्वत जैसे बड़े-से-बड़े पाप नष्ट हो जाते हैं। कौण्डिन्य ऋषि के कहे अनुसार विधि पूर्वक इस व्रत को करने से उसके सभी पाप नष्ट हो गए और वह शुद्ध होकर दिव्य देह धारण करके भगवान् विष्णु के धाम पहुंच गया। यही कारण है कि प्राचीन काल से ही आस्थावान लोग इस व्रत को करते चले आ रहे हैं।

❏❏❏

अपरा एकादशी व्रत

(पाप कर्म से मुक्तिऔर कायरता त्यागने के लिए)

माहात्म्य

ज्येष्ठ मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी को अपरा एकादशी का व्रत किया जाता है जो व्यक्ति यह व्रत करता है वह भ्रूणहत्या, ब्रह्महत्या, व्यभिचार, विभिन्न पाप जैसे झूठ बोलना, परनिंदा, धोखा देना, झूठी गवाही देना, वेदों की निंदा करना, ज्योतिष विद्या से लोगों को छलना, कम सामान तोलना, गुरु निंदा करना, क्षत्रिय होकर भी क्षत्रीय धर्म को छोड़कर युद्ध से भागना, पीपल के वृक्ष को काटना आदि दोषों से मुक्त हो जाता है। व्रती को बुरे कर्मों से मुक्ति मिलती है, क्योंकि यह व्रत पापरूपी वृक्ष को काटने वाली कुल्हाड़ी है।

इस व्रत का फल पापरूपी अंधकार के लिए सूर्य के समान है। पापरूपी लकड़ी के लिए आग के समान है। अतः व्रती मोक्ष को प्राप्त कर स्वर्गलोक को जाता है। इस प्रकार वह सद्गति को पाता है। इसके अलावा पुत्र, धन, संपदा के साथ उसकी समस्त मनोकामनाएं भी व्रत करने से ही पूरी होती हैं। यही वजह है कि इसे बहुत पुण्य देने वाला व्रत माना गया है। जिस प्रकार मकर संक्रांति पर माघ मास में प्रयाग में, कार्तिक की पूर्णिमा पर तीनों पुष्कर स्नान करने से, काशी में शिवरात्रि के उपवास से, कुंभ में श्रीकेदारनाथ के दर्शन से, यज्ञ में स्वर्ण दान से एवं गया में पितरों के पिंडदान देने से जो पुण्य फल प्राप्त होता है, वही सब अपरा एकादशी का व्रत करने से मिलता है। इसीलिए इसे अपार फल देने वाली एकादशी व्रत भी कहा जाता है।

पूजन विधि-विधान

पुराणों में कहा गया है कि अपरा एकादशी का व्रत करने वाले व्यक्ति को दसवीं तिथि के सायंकाल में सूर्यास्त के बाद भोजन नहीं करना चाहिए और रात्रि में भगवान का स्मरण करना चाहिए। इसके अतिरिक्त इस स्थिति में प्रत्येक प्रकार के तामसिक भोजन का सेवन करने से भी बचना चाहिए। संभव हो तो भूमि पर शयन करना चाहिए। एकादशी व्रत के दिन प्रातःकाल दैनिक कार्यों से निवृत्त होकर, स्वच्छ जल से स्नान करें और उपवास रखकर, भगवान् विष्णु की प्रतिमा को शुद्ध जल से स्नान कराकर स्वच्छ वस्त्र अर्पण करें, फिर चंदन का तिलक लगाएं। प्रतिमा के पास धूप-दीप जलाकर तुलसीदल, पुष्पादि चढ़ाकर विधि-विधान से पूजन, आरती करके आराधना करें। उपवास में फलाहार लें। ब्राह्मणों को भोजन कराकर यथाशक्ति दान-दक्षिणा दें और आशीर्वाद प्राप्त करें। रात्रि में भजन-कीर्तन का आयोजन करें।

व्रत कथा

इस व्रत की कथा का उल्लेख श्रीब्रह्मांड पुराण में इस प्रकार किया गया है - प्राचीन काल में महीध्वज नाम का एक राजा था। जिसका व्रतध्वज नामक छोटा भाई बड़ा ही अधर्मी, अन्यायी और क्रूर था। वह अपने बड़े भाई से ईर्ष्या-द्वेष रखकर उसे हानि पहुंचाने का अवसर ढूंढ़ता रहता था। एक दिन बड़े भाई महीध्वज को अकेला पाकर उसने उनकी हत्या करके उसे एक पीपल के वृक्ष के नीचे गाड़ दिया। वह राजा उस वृक्ष पर प्रेत योनि में रहकर अनेक प्रकार के उत्पात मचाने लगा।

एक दिन उस वृक्ष के पास से धौम्य ऋषि गुजरे, तो उन्होंने अपने तपोबल से प्रेत के कारनामे और उसकी कथा जानी। धौम्य ऋषि ने राजा महीध्वज (प्रेत) को नीचे बुलाकर कहा कि तुम्हारे पूर्वजन्मों के पाप कर्मों के कारण तुम्हारी हत्या हुई और प्रेत योनि मिली है। यदि तुम इससे मुक्ति चाहते हो तो ज्येष्ठ मास के कृष्ण पक्ष की अपरा एकादशी का व्रत रखो। महीध्वज (प्रेत) ने वैसा ही किया। व्रत और उपवास करने से उसे प्रेत योनि से छुटकारा मिला और वह फिर से दिव्य शरीर पाकर अंत में मोक्ष को प्राप्त हुआ।

❑❑❑

भीमसेनी निर्जला एकादशी व्रत

(पापों से मुक्तिके लिए)

माहात्म्य

इस एकादशी के व्रत को करने से समस्त तीर्थों का पुण्य, सभी 14 एकादशियों का फल एवं सब दानों का फल मिलता है। इसका उपवास धन-धान्य देने वाला, पुत्र प्रदायक, आरोग्यता को बढ़ाने वाला तथा दीर्घायु प्रदान करने वाला है। श्रद्धा और भक्ति से किया गया यह व्रत सब पापों को क्षण भर में नष्ट कर देता है।

जो मनुष्य इस दिन स्नान, दान, जप और होम करता है, वह सब प्रकार से अक्षय हो जाता है, ऐसा भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा है। जो फल सूर्यग्रहण के समय कुरुक्षेत्र में दान देने से प्राप्त होता है, वही फल इस व्रत के करने और इसकी कथा पढ़ने से भी प्राप्त होता है। व्रती की समस्त मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं और वह इस जगत का संपूर्ण सुख भोगते हुए परमधाम जाकर मोक्ष प्राप्त करता है।

पूजन विधि-विधान

यह व्रत ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी को रखा जाता है। इस दिन ब्रह्ममुहूर्त में उठकर दैनिक कर्मों से निवृत्त होकर स्नान करके पवित्र हों। फिर स्वच्छ वस्त्र धारण कर भगवान् विष्णु की पूजा-आराधना व आरती, भक्ति भाव से विधि-विधानानुसार संपन्न करें। महिलाएं पूर्ण शृंगार कर मेंहदी आदि रचाकर पूर्ण श्रद्धा, भक्तिभाव से पूजन करने के पश्चात् कलश के जल से पीपल के वृक्ष को अर्घ्य दें।

फिर व्रती प्रातःकाल सूर्योदय से आरंभ कर दूसरे दिन सूर्योदय तक जल और अन्न का सेवन न करें। चूंकि ज्येष्ठ मास के दिन लंबे और भीषण गर्मी वाले होते हैं, अतः प्यास लगना स्वाभाविक है। ऐसे में जल ग्रहण न करना सचमुच एक बड़ी साधना का काम है। बड़े कष्टों से गुजर कर ही यह व्रत पूरा होता है। इस एकादशी व्रत के दिन अन्न अथवा जल का सेवन करने से व्रत खंडित हो जाता है।

व्रत के दूसरे दिन यानी द्वादशी के दिन प्रातःकाल निर्मल जल से स्नान कर भगवान विष्णु की प्रतिमा या पीपल के वृक्ष के नीचे दीपक जलाकर प्रार्थना करें। इसके पश्चात् यथाशक्ति ब्राह्मणों को दान-दक्षिणा में शीतल जल से भरा मिट्टी का घड़ा, अन्न, वस्त्र, छतरी, पंखा, गो, पान, शय्या, आसन, स्वर्ण आदि दें।

ऐसा माना जाता है कि जो भी व्यक्ति घटदान देते समय जल का नियम करता है, उसे एक प्रहर के अंदर कोटि-कोटि सुवर्ण दान का फल मिलता है। इस दिन घर आये याचक को खाली हाथ वापस करना बुरा समझा जाता है।

व्रत कथा

एक दिन महर्षि वेदव्यास से भीमसेन ने पूछा- पितामह! मेरे चारों भाई, माता कुंती और द्रौपदी सभी एकादशियों को भोजन न कर उपवास रखते हैं। निर्जला एकादशी व्रत के दिन तो जल तक ग्रहण नहीं करते। वे चाहते हैं कि मैं भी उनकी तरह विधि-विधान के अनुसार उपवास रखकर अन्न, जल ग्रहण नहीं करूं परंतु मैं ऐसा नहीं कर पाता हूं। आप बताएं मुझे क्या करना चाहिए।

तब महर्षि वेदव्यास बोले - हे भीम! तुम ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष की एकादशी का व्रत करो। इस व्रत में स्नान और आचमन को छोड़कर जल का व्यवहार मत करना। इसके उपवास से तुम्हें सभी चौदह एकादशियों के करने का पुण्य लाभ प्राप्त होगा। महर्षि वेदव्यास के सामने भीम ने प्रतिज्ञा कर इस एकमात्र एकादशी का व्रत पूरा किया, तभी से इसे भीमसेनी एकादशी व्रत के नाम से भी जाना जाता है।

❑❑❑

योगिनी एकादशी व्रत

(गोहत्या / कुष्ठ रोग से मुक्तिके लिए)

माहात्म्य

इस सनातनी एकादशी का व्रत संसार रूपी समुद्र में डूबने वालों के लिए एक जहाज के समान और सब प्रकार के पापों का नाश कर मुक्ति दिलाने वाला है। इसके प्रभाव से गोहत्या तथा पीपल के पवित्र वृक्ष को काटने जैसे महापाप भी नष्ट हो जाते हैं। व्रती भक्त का भयंकर कुष्ठ रोग व्रत पुण्य के प्रताप से दूर होता है। हजारों ब्राह्मणों को भोजन कराने से जो फल प्राप्त होता है, वही फल इस व्रत के करने से मिलता है। व्रती के सारे मनोरथ पूर्ण करने और मोक्ष प्राप्ति में भी यह व्रत फलदायी है।

पूजन विधि-विधान

यह व्रत आषाढ़ मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी को रखा जाता है। इस दिन प्रातः काल उठकर दैनिक कर्मों से निवृत्त होकर स्नान करके स्वच्छ वस्त्र धारण करें। फिर भगवान् विष्णु की प्रतिमा को गंगाजल से स्नान कराकर, चंदन, रोली, धूप, दीप, पुष्प से पूजन, आरती करें। इस व्रत में लाल चंदन और लाल गुलाब के फूलों की माला का उपयोग करने का अधिक महत्त्व माना गया है। मिष्ठान, फल, नैवेद्य में पांच मेवों का भोग लगाकर प्रसाद भक्तों में वितरित करें। पूजन के बाद याचकों एवं ब्राह्मणों को यथाशक्ति दान-दक्षिणा दें। अगले दिन सूर्योदय के समय इष्टदेव को भोग लगाकर, दीप जलाकर और प्रसाद का वितरण कर व्रत का पारण करना चाहिए।

व्रत कथा

इस व्रत की कथा का उल्लेख श्रीपद्म पुराण में इस प्रकार किया गया है - प्राचीन काल में यक्षों के स्वामी कुबेर की नगरी अलकापुरी में हेम नाम का एक माली रहता था। माली अपने स्वामी कुबेर की आज्ञानुसार प्रतिदिन मानसरोवर से पुष्प लाता था, जिन्हें कुबेर भगवान शंकर को प्रसन्न करने के लिए पूजा में प्रयोग करते थे। माली हेम की विशालाक्षी नामक एक अत्यंत सुंदर स्त्री थी।

एक दिन वह मानसरोवर से पुष्प तो ले आया किंतु कामासक्त होने के कारण पत्नी के साथ रमण करने लगा और कुबेर के पास नहीं पहुंचा। इस पर कुबेर नाराज हो गये और हेम को शापित किया कि तू स्त्री वियोग भोगेगा और मृत्यु लोक में जाकर कुष्ठ रोग से पीड़ित रहेगा। शाप के कारण उसी समय से हेम का शरीर श्वेत कुष्ठ से गलने लगा। वह कोढ़ी हो गया। भटकने लगा और वह जगह-जगह भटकता-भटकता एक दिन वह महर्षि मार्कण्डेय के आश्रम में जा पहुंचा। उसकी ऐसी हालत देखकर महर्षि मार्कण्डेय उस पर द्रवित हो गए।

हेम ने अपना दोष और कुबेर द्वारा उसे शाप दिए जाने की बात बताई, तो मार्कण्डेय को उस पर दया आ गई। उन्होंने कहा - क्योंकि तूने मेरे सम्मुख सत्य बोला है, इसलिए मैं तेरे उद्धार के लिए एक व्रत बताता हूं। यदि तू आषाढ़ मास के कृष्ण पक्ष में योगिनी नामक एकादशी व्रत का विधिपूर्वक व्रत करेगा, तो तेरे समस्त पाप नष्ट हो जाएंगे और तू पहले की भांति ही स्वरूपवान हो जाएगा।

महर्षि मार्कण्डेय के ऐसे सुभाषित वचन सुनकर हेम माली ने योगिनी एकादशी का व्रत किया। व्रत का प्रभाव इतना प्रबल था कि वह अगले ही दिन दिव्य शरीर वाला बन गया। तभी से योगिनी एकादशी का व्रत रखने की परिपाटी चली आ रही है।

पौराणिक शास्त्रों में श्रीकृष्ण भगवान ने कहा है कि योगिनी एकादशी व्रत की कथा का फल 88 हजार ब्राह्मण ों को भोजन कराने के बराबर है इसके व्रत से सभी पाप नष्ट हो जाते हैं और अंत में मोक्ष प्राप्त कर प्राणी स्वर्ग का अधिकारी बनता है।

❑❑❑

देवशयनी एकादशी व्रत

(मन चाहा फल एवं सुख-समृद्धि पाने के लिए)

माहात्म्य

भगवान् विष्णु को प्रसन्न करने के लिए आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी व्रत को यह व्रत रखा जाता है। इस व्रत के करने से सारे पाप नष्ट होते हैं, भगवान प्रसन्न होकर, इच्छित वस्तुएं प्रदान करते हैं, यहां तक कि समस्त मनोकामनाएं भी पूर्ण होती हैं। आषाढ़ शुक्ल एकादशी व्रत हरिशयनी एकादशी व्रत के नाम से विख्यात है। इस व्रत से कार्तिक शुक्ल एकादशी व्रत तक भगवान विष्णु क्षीरसागर में शेष-शय्या पर शयन करते हैं। संन्यासी लोग इन चार महीनों में चातुर्मास व्रत करते हैं। इस दिन भगवान का पूजन करने से पुण्य फल की प्राप्ति होती है।

पूजन विधि-विधान

इस दिन दैनिक कार्यों से निवृत्त होकर स्नान करके भगवान सूर्य देव को अर्घ्य दें। सायं काल में श्रीहरि विष्णु की सोने, चांदी, पीतल, तांबे की मूर्ति लेकर पंचामृत से स्नान कराएं। फिर उन्हें श्वेत वस्त्र पहनाकर श्वेत वर्ण की शय्या पर शयन कराएं। षोडशोपचार विधि के अनुसार धूप, दीप, पुष्प आदि से भगवान् का पूजन, आरती करें और प्रार्थना करें कि मेरे समस्त मनोरथ पूर्ण हों। व्रत के दिन उपवास करें। पलंग पर सोना, पत्नी का संग करना, झूठ बोलना, अन्न, नमक ग्रहण करना त्याग दें। भगवान् को फलों का भोग लगाकर भक्तों में बांट दें। सायंकाल पूजन के बाद एक समय भोजन ग्रहण करें।

व्रत कथा

सत्युग में सूर्यवंश में उत्पन्न मान्धाता नाम के एक परम प्रतापी, सत्यप्रतिज्ञ, चक्रवर्ती सम्राट् हुए हैं, जिनकी कीर्ति उस समय चहुं दिशाओं में फैली हुई थी। उनके राज्य में प्रजा बहुत सुखी थी, इसलिए वहां के लोग आधि, व्याधि या दुर्भिक्ष से पूरी तरह अनभिज्ञ थे। राज्य में धन-धान्य की कोई कमी नहीं थी। संयोगवश एक बार उनके राज्य में लगातार तीन वर्ष तक वर्षा नहीं हुई, तो प्रजा भूख-प्यास से व्याकुल हो गई। अकाल के कारण चारों ओर हाहाकार मच गया। ऐसी स्थिति में राजा परेशान होकर इस कष्ट स मुक्ति पाने का उपाय खोजने के लिए सेना को लेकर जंगल की ओर निकल पड़े। रास्ते में उन्हें ब्रह्माजी के पुत्र अंगिरा ऋषि का आश्रम मिला, तो हाथ जोड़कर राजा ने उनको प्रणाम किया।

ऋषि ने राजा से जंगल में भटकने का कारण पूछा, तो मान्धाता ने विनम्रता से कहा ऋषिवर! धर्म विधि से प्रजा का पालन करते हुए भी मेरे राज्य में अकाल पड़ गया है। प्रजा असमय ही भूख-प्यास मर रही है। इसका कारण मेरी समझ में नहीं आ रहा है। इस दुख को दूर करने का उपाय जानने के लिए मैं आपके पास आया हूं।

ऋषि ने कहा- हे राजन! अभी चारों युगों में श्रेष्ठ सत्युग चल रहा है जो ब्राह्मण प्रधान युग है और धर्म अपने चारों चरणों पर खड़ा है। इस युग में केवल ब्राह्मण ही तप कर सकता है, परंतु आपके राज्य में एक शूद्र तप कर रहा है, जिसकी वजह से पूरा राज्य कष्ट उठाने को मजबूर है। तुम्हें उसका वधकर इस दोष को शांत करना होगा। अन्यथा जब तक वह जीवित रहेगा, प्रजा पर अनेक आपदाएं आती ही रहेंगी।

राजा मान्धाता ने कहा- मुनिवर! मैं उस तपस्वी शूद्र को बिना किसी अपराध के कैसे मारूं? कृपया मुझे धर्म का कोई दूसरा उचित रास्ता बताएं। इस पर ऋषि बोले- हे राजन! इसके लिए आप आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी व्रत पद्मा (देवशयनी / हरिशयनी) का व्रत करें। उसके प्रभाव से आपके राज्य में अवश्य ही वर्षा होगी और सारी विपदाएं दूर होकर राज्य में अमन चैन लौट आएगा। इस प्रकार राजा मान्धाता ने देवशयनी का व्रत रखा और जिसके फलस्वरूप उसका राज्य धन-धान्य से परिपूर्ण और खुशहाल हो गया।

कामिका एकादशी व्रत

(ब्रह्महत्या, भ्रूणहत्या, पापों के निवारण एवं नरक की यातनाओं से बचने के लिए)

माहात्म्य

यह व्रत श्रावण मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी को रखा जाता है। इस व्रत के करने से प्राणी को ब्रह्म हत्या, भ्रूण हत्या जैसे पापों से छुटकारा मिलता है। साथ ही समस्त दुखों का नाश होता है। संतान की प्राप्ति होती है, इसकी अन्य मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। व्रती को बैकुंठ में स्थान मिलता है एवं इस व्रत को करने से महापुण्य फल प्राप्त होता है और उसे यमलोक की यातनाएं नहीं सहनी पड़तीं हैं। केदारनाथ और कुरुक्षेत्र में सूर्य ग्रहण के समय दान करने का जो फल मिलता है। वह सभी इस व्रत को करने से प्राप्त होता है। पौराणिक शास्त्रों में ऐसा कहा गया है। इस व्रत की कथा सुनने से वाजपेय यज्ञ का फल मिलता है।

पूजन विधि-विधान

इस दिन प्रातः स्नानादि करके नित्य कर्मों से निवृत्त होकर पूर्व की ओर मुख करके श्रद्धा-भक्ति से बैठकर शंख चक्र गदाधारी भगवान विष्णु को पंचामृत या घृत, दूध, दही, गंगाजल से स्नान कराएं। प्रतिमा को आसन पर रखकर चंदन तिलक लगाएं। फिर विधि-विधानानुसार गंध, पुष्प, दीप, नैवेद्य से षोडशोपचार विधि से भगवान विष्ण का पूजन रोली, कपूर, दीपक से आरती उतारें।

भोग में पंचमेवा या मिष्ठान रखें। भक्तों में प्रसाद बांटें। पांच ब्राह्मणों को भोजन कराकर दान-दक्षिणा दें। पूरा दिन सात्विक ढंग से भगवान् के चिंतन में बिताएं। दिन भर में एक बार फलाहार करें। रात भजन-कीर्तन करते हुए गुजारें। दूसरे दिन व्रत का पारण करें। इस दिन क्रोध, झगड़ा, चोरी, हिंसा से परहेज करें।

व्रत कथा

इस व्रत की कथा का उल्लेख श्रीब्रह्मवैवर्त पुराण में आया है। कथा के अनुसार -

एक बार सुदीप मुनि से धर्मराज युधिष्ठिर ने पूछा- हे मुनिवर! सभी प्रकार के पापों, कष्टों, दुखों को दूर करने वाली और संसार के समस्त सुख, ऐश्वर्य, पुत्रादि की मनोकामनाएं पूर्ण करने वाली कामिका एकादशी व्रत की कथा बताएं :-

तब मुनि सुदीप ने कहा - हे धर्मराज! सभी प्रकार के पुण्य कार्य करने, दान करने का जो फल मिलता है, वही पुण्य, सुख-संपत्ति तथा मोक्ष की प्राप्ति कामिका एकादशी का व्रत धारण करने और विधि-विधान व श्रद्धा से भगवान विष्णु की पूजा तथा आरती करने से प्राप्त होता है।

मुनि ने आगे बताया- हे धर्मराज! सोना और चांदी के दान करने से तथा रत्न, मुक्ता, मणियों से पूजा करने से भगवान् विष्णु इतने प्रसन्न नहीं होते जितने तुलसी पत्र से प्रसन्न हुआ करते हैं। इस व्रत को करने से मन की समस्त इच्छाएं पूरी हो जाती हैं। जो भी स्त्री-पुरुष विधि-विधान से इस व्रत को करते हैं अथवा चित्त लगाकर इसकी कथा सुनते हैं, वे समस्त प्रकार के पाप और दुखों से रहित होकर इस लोक में समस्त सुखों का उपयोग करते हए अंत में सदगति प्राप्त कर लिया करते हैं।

इसका नाम कामिका अथवा पवित्रा इसलिए है कि यह पुत्रों सहित सब सुखों को प्रदान करने वाली, सब पापों का दूर कर सद्गति देने वाली है। अतः इस एकादशी का व्रत अवश्य ही करना चाहिए। कामिका एकादशी व्रत का पालन करने से व्रती को अपने सभी कार्यों में सिद्धि प्राप्त होती है और वह पवित्र चित्त से जीवन यापन करता है।

पवित्रा / पुत्रदा एकादशी व्रत

(पुत्र प्राप्ति के लिए)

माहात्म्य

यह व्रत श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी को रखा जाता है। इस दिन भगवान् विष्णु के नाम पर व्रत रखकर पूजा-अर्चना की जाती है। इस व्रत के करने से मनोवांछित फल प्राप्त होता है। व्रती की सभी मनोकामनाएं पूर्ण हो जाती है। जीवन सुखों से भर जाता है। मन में शाति, आत्मिक सुख और धार्मिक विचार उदय होते हैं।

निःसंतान स्त्री व्रती को संतान रत्न की प्राप्ति होती है। मनुष्य के सब पाप नष्ट होते हैं। इस व्रत की कथा सुनने या पढ़ने से वाजपेय यज्ञ का फल प्राप्त होता है। इसका माहात्म्य सुनने से व्यक्ति इहलोक में सुख भोगता है और अंत में परमगति को प्राप्त करता है।

पूजन विधि-विधान

व्रती प्रातःकाल उठकर स्नानादि दैनिक कार्यों से निवृत्त होकर श्रीहरि विष्णु भगवान् की प्रतिमा को दूध, दही और शुद्ध जल से स्नान कराकर रोली, चंदन, पुष्प, धूप, दीप आदि से पूजन करके, कपूर, दीपक से भक्ति-भावना पूर्वक आरती करें। फिर मिष्ठान का भोग लगाकर प्रसाद भक्तों में बांटे। पांच ब्राह्मणों को भोजन कराकर यथाशक्ति दान-दक्षिणा देकर विदा करें। उनका आशीर्वाद प्राप्त करें। व्रत का दिन भजन-कीर्तन में गुजारकर रात्रि में भगवान् की प्रतिमा के पास सोएं।

व्रत कथा

इस व्रत की कथा का उल्लेख श्रीपद्म पुराण में इस प्रकार आया है - द्वापर युग में महिष्मतीपुरी का राजा महीजित् एक शांतिप्रिय व धर्मात्मा व्यक्ति था। धर्मपूर्वक उचित रास्से चलने वाला यह राजा पुत्र-विहीन था, इसलिए वह दुखी रहता था। क्योंकि पुत्र-विहीन व्यक्ति को इस लोक में और परलोक में सुख नहीं मिलता। प्रजा के परोहित और ब्राह्मणों ने तीनों कालों के जानने वाले महामुनि लोमश के पास जाकर राजा की दशा का वर्णन किया, तो उन्होंने कहा -

यह राजा पूर्व जन्म में एक अत्याचारी, धनहींन वैश्य था, जो गांव-गांव वाणिज्यवृत्ति किया करता था। इसी एकादशी के व्रत के दिन दोपहर के समय वह प्यास से व्याकुल होकर एक जलाशय पर पहुंचा, तो वहां गर्मी से पीड़ित एक प्यासी गाय को जलाशय में पानी पीते देखकर इसने पानी पीने से रोक दिया और स्वयं पानी पीने लगा। उसी दुष्कर्म के कारण यह राजा पुत्र-विहीन है और उन पुण्यों से, जो इसने अपने पुनर्जन्म में किए थे, इसे राजा का पद मिला है।'

हे महामनि! हमारे राजा का पाप दूर हो जाए और पुत्र भी उत्पन्न हो, कृपया ऐसा कोई उपाय बताने की कृपा करें। उपस्थित प्रजा के लोगों ने मुनि से कहा। तब लोमेश ने उन्हें बताया- श्रावण शुक्ल की पुत्रदा नाम की एकादशी व्रत तिथि इसके लिए सर्वथा उचित है।

तुम सब लोग विधिपूर्वक शास्त्रोक्त रीति से जागरण के साथ इस व्रत को करो और उसका पुण्य राजा को दे दो, तो निश्चय ही राजा का पुत्र होगा।' प्रजा के साथ-साथ जब राजा ने भी इस व्रत को रखा, तो उसके प्रताप से रानी गर्भवती हुई और उसने समय आने पर एक तेजस्वी पुत्र को जन्म दिया। तभी से इस एकादशी व्रत को पुत्रदा एकादशी व्रत के नाम से जाना जाता है। पुत्रदा एकादशी का व्रत रखने से निःसंतान दम्पत्तियों को संतान प्राप्त होती है।

❑❑❑

अजा एकादशी व्रत

(दैहिक कष्टों से मुक्ति एवं पुनर्जन्म से छुटकारा पाने के लिए)

माहात्म्य

यह व्रत भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी को रखा जाता है। इस व्रत को विधिपूर्वक करने से समस्त कष्ट समाप्त हो जाते हैं और इच्छित फल की प्राप्ति होती है। व्यक्ति को पुनर्जन्म के आवागमन से मुक्ति मिलती है, पूर्वजन्म की बाधाएं दूर होती हैं और अंत में परमधाम जाने का अवसर मिलता है। भगवान श्री कृष्ण ने कहा है कि इस व्रत को सात्विक मानकर एवं विधिपूर्वक करने से प्राणी आवागमन के चक्र से मुक्त हो जाता है। इस एकादशी के व्रत का फल अद्भुत है। श्रीहरि विष्णु की पूजा करके इस व्रत का माहात्म्य करने और सुनने से अश्वमेघ यज्ञ का फल प्राप्त होता है।

पूजन विधि-विधान

इस दिन भगवान विष्णु की पूजा करने का विधान है। व्रती प्रातः ब्रह्ममुहूर्त में उठकर दैनिक कार्यों से निवृत्त होकर स्नानादि करके लक्ष्मी माँ व विष्णु भगवान् का विधि-विधानानुसार पूजन व आरती करें। भोग लगाएं और प्रसाद भक्तों में बांटें। पूरे दिन के व्रत में अन्न का सेवन न करके केवल एक बार फलाहार ही करें तथा पूरी रात जागकर, भजन-कीर्तन कर बिताएं।

व्रत कथा

पुराने समय में राजा हरिश्चंद्र ने स्वप्न में अपना सारा राज्य महर्षि विश्वामित्र को दान में दे दिया। दिन में जब महर्षि विश्वामित्र दरबार में आए, तो सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र ने स्वप्नानुसार अपना पूरा राज्य उन्हें सौंप दिया। उनके द्वारा दक्षिणा में पांच सौ स्वर्ण मुद्राएं मांगने पर उन्हें अपने पुत्र, पत्नी और स्वयं को बेचना पड़ा, तब कहीं जाकर दक्षिणा दे पाए। जिस चांडाल ने राजा हरिश्चद्र को खरीदा, उसने उन्हें श्मशान में नियुक्त कर दिया जहां उनका काम था कि वे शव जलाने के लिए आए हुए परिजनों से श्मशान कर वसूल करें।

एक रात्रि की बात है। एक स्त्री अपने पुत्र का दाह-संस्कार कराने के लिए श्मशान में आई। निर्धनता के कारण उसके पास कफन के लिए भी पैसे नहीं थे। शव को ढकने के लिए उसने अपनी धोती तक फाड़ ली थी। उससे भी राजा हरिश्चंद्र ने श्मशान का कर मांगा। एक तो पुत्र की मृत्यु का शोक, ऊपर से उसका अंतिम संस्कार न कर पाने की विवशता के कारण शव की दुर्दशा की चिंता से वह बेचारी बिलख-बिलखकर रोने लगी।

इस परीक्षा की घड़ी में अपने को संभालते हुए राजा हरिश्चंद्र ने कहा, जिस सत्य की रक्षा के लिए मैंने अपना राज्य त्यागा, स्वयं को बेच डाला, उसी सत्य की रक्षा के लिए इस घड़ी में यदि मैं सत्य पर डटा न रहा, तो कर्तव्यच्युत हो जाऊंगा। अतः कर लिए बिना मैं अंतिम संस्कार की अनुमति नहीं दे पाऊंगा। तारामती ने संयम से काम लेकर अपनी आधी धोती को फाड़कर कर के रूप में देने के लिए उसे जैसे ही राजा की ओर बढ़ाया, तत्काल ही वहां श्रीहरि प्रकट हो गए और बोले- राजा हरिश्चंद्र तुम्हारी कर्त्तव्य निष्ठा धन्य है। तुमने सत्य को जीवन में धारण करके उच्चतम आदर्श स्थापित किया है। अतः तुम सदा याद किए जाते रहोगे।

श्रीहरि ने आशीर्वाद देते हुए उसके पुत्र रोहिताश को पुनः जीवित कर दिया और राजा को उसका पूरा राजपाट लौटा दिया। इस कथा के विषय में ऐसा वृत्तांत भी मिलता है कि राजा हरिश्चंद्र को दुखों से चिंति देखकर गौतम ऋषि ने उन्हें भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी का व्रत विधि-विधानानुसार करने को कहा था। जब राजा ने इस एकादशी का व्रत पूर्ण किया, तो उसके प्रभाव से राजा अपने दुखों से छूट गया। पत्नी और पुत्र के साथ उसका पुनर्मिलन हुआ। राज्य की प्राप्ति हुई और वह सब पापों से मुक्त होकर अंत में स्वर्ग को गया।

❑❑❑

परिवर्तिनी / पद्मा एकादशी व्रत

(भगवान् में आस्था, विश्वास जगाने एवं मनोरथ सिद्धि के लिए)

माहात्म्य

भगवान् विष्णु आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी व्रत (देवशयनी / हरिशयनी) से शेष शय्या पर विराजमान होकर निद्रा मग्न रहते हैं तो वे भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी व्रत को करवट बदलते हैं। इसलिए इसे परिवर्तिनी एकादशी व्रत कहते हैं। चूंकि करवट बदलने के दौरान भक्त का जाग्रत रहना उसके लिए फलदायी माना गया है, अतः इस एकादशी व्रत की रात्रि को जागरण करने का विशेष माहात्म्य बताया गया है। इस व्रत को करने से व्रती अंत में देवलोक जाकर चंद्रमा के समान सुशोभित होता है।

यह श्रीलक्ष्मी जी व भगवान् विष्णु का परम कल्याणकारी, आनंदकारी व्रत है। इसके करने से सभी प्रकार के अभीष्ट मनोरथ सिद्ध होते है। इस दिन लक्ष्मी पूजन करना श्रेष्ठ माना गया है, क्योंकि देवताओं ने अपने राज्य को पुनः पाने के लिए महालक्ष्मी का ही पूजन किया था। पापियों का नाश करने में इससे उत्तम कोई दूसरा व्रत नहीं है। इस कथा के श्रवण से सहस्र अश्वमेघ यज्ञ का फल भी मिलता है।

पूजन विधि-विधान

यह व्रत भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी को रखा जाता है। इस दिन उपवास करने का विधान है। व्रती प्रातःकाल स्नानादि नित्य कर्मों से निवृत्त होकर महालक्ष्मी व विष्णु भगवान् की प्रतिमाओं को स्नान कराएं और फिर आसन पर विराजकर पुष्प-मालाएं अर्पित करें।

इसके पश्चात् रोली, चदन, धूप-दीप, पुष्प, नारियल आदि से विधिवत पूजन करें। आरती उतारकर मिष्ठान का भोग लगाए। सब भक्तों को प्रसाद वितरित करें। ब्राह्मणों को भोज कराकर दान-दक्षिणा दें। इसके पश्चात् फलाहार करें पूरे दिन अन्न का स्मरण, भजन, कीर्तन में रात्रि जागरण करें।

व्रत कथा

इस व्रत की कथा का उल्लेख वामन पुराण में इस प्रकार हुआ है। त्रेता युग में बलि नाम का एक दानव प्रभु भक्त। दानी था। यज्ञ, तप, दान, पुण्य व प्रभु भक्ति के प्रभाव से जब उस दानव न स्वर्ग पर भी अपना अधिकार कर लिया तो इंद्र व अन्य देवताओ को बड़ा कष्ट हुआ। वे दुखी होकर भगवान् विष्णु के पास पहुंचे और अपने दुख का वर्णन किया। भगवान् विष्णु ने देवताओं को आश्वस्त किया और उन्होंने देवताओं के कल्याण के लिए वामन के रूप में अवतार लिया।

बालक रूप धारण कर वे उस दानव के पास पहुंचे और उसकी प्रशंसा कर, उसे बड़ा दानी बताकर उससे तीन पग भूमि दान में देने के लिए कहा। बलि ने जब दान देना स्वीकार कर लिया तो अपना आकार बढ़ाकर वामन भगवान् ने पहले पग में पृथ्वी को नाप लिया, दूसरे पग में ऊपर के लोक यानी ब्रह्मांड एवं स्वर्ग लोक आदि नाप लिए, अब तीसरा पग रखने के लिए बलि के पास जगह ही नहीं बची, अतः बलि ने तीसरा पग रखवाने के लिए अपना मस्तक आगे रख दिया।

तब भगवान ने तीसरा पग उसके मस्तक पर रख दिया। फिर भक्त दानव को पाताल लोक भेज दिया, इस भर दानव ने प्रसन्नता प्रकट की। उसके इस व्यवहार से भगवान ने प्रसन्न होकर उसके आशीर्वाद दिया - मैं सदैव तुम्हारे निकट निवास करूंगा। तभी से भाद्रपद शुक्ल एकादशी व्रत के करवट बदलने के लिए भगवान विष्णु की एक मूर्ति बलि का आश्रय लेकर विराजमान होती है। दूसरी मूर्ति क्षीरसागर में शेष नाग की पृष्ठ यानी पीठ पर होती है।

❑❑❑

इंदिरा एकादशी व्रत

(पितरों की शांति एवं उनके उद्धार के लिए)

माहात्म्य

यह व्रत आश्विन मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी को रखा जाता है। इस एकादशी का व्रत करने से अधोगति को प्राप्त पितृगण शुभ गति को प्राप्त करते हैं, यानी पितरों का उद्धार होता है। पुरुषों के लिए विशेष रूप से फलदायी यह एकादशी व्रत महापुण्य देने वाली एवं समस्त मनोकामनाएं पूर्ण करने वाली है। व्रती इस लोक के सब भोगों को भोगकर अंत में विष्णु लोक जाकर चिरकाल तक निवास करता है।

पौराणिक कथन के अनुसार इस एकादशी व्रत की पूजा करने से साधक के लिए मोक्ष के द्वार खुल जाते हैं। चूंकि ये एकादशी व्रत पितृ पक्ष में आती है, इसलिए इसका महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है।

पूजन विधि-विधान

हर एकादशी व्रत की तरह इस एकादशी व्रत में भी फलाहार का सेवन करके व्रत किया जाता है। व्रती चाहे तो निर्जला उपवास भी किया जा सकता है। एकादशी व्रत की सुबह जल्दी उठकर स्नान करें, साफ वस्त्र पहनें और सूर्य भगवान को अर्घ्य दें।

इसके बाद भगवान विष्णु की मूर्ति या तस्वीर के सामने दीप प्रज्जवलित करें। चालीसा, पाठ या मंत्र का जाप करें। जाप सम्पूर्ण होने के बाद पूरा दिन और रात तक केवल फलाहार का सेवन करें। अगले दिन यानी द्वादशी तिथि को ही व्रत का पारण करें।

व्रत कथा

द्वारकानाथ जी बोले - हे धर्मपुत्र ! आश्विन मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी व्रत का नाम इन्द्रा है। इसके महात्म्य की एक कथा कहता हूँ - एक समय देवर्षि नारद ब्रह्म लोक से यम लोक में आये। एक धर्मात्मा राजा को उसने यम लोक में दुःखी देखा, दिल में दया आई।

उसका भविष्य कर्म विचार कर महिष्मती नगरी में आये जहाँ उस राजा का पुत्र राज्य करता था। राजपुत्र को कहने लगे तेरे पिता को मैं यमराज की सभा में बैठा देख आया हूँ और उसके पूर्व कर्मों को भी मैं देख चुका हूँ। समस्त शुभ कर्म उसके स्वर्ग को देने वाले हैं।

एक एकादशी व्रत के बिगड़ जाने से उन्हें यम लोक मिला है। यदि तुम इन्द्रा एकादशी का व्रत कर पिता के नाम संकल्प कर दो तो उसे अवश्य इन्द्रलोक मिलेगा। उस व्रत की शुभ विधि यह है, दशमी के दिन पितृ का श्राद्ध करके ब्राह्मणों को प्रसन्न करें। गौ ग्रास, कुत्ते, कौवे की सदृश छोटा सा न बनायें अर्थात माता समझकर उसका यथा शक्ति पेट पूजन कुछ अधिक करना चाहिए।

मिथ्या भाषण न करें, रात्रि को भूमि पर शयन करें प्रातः श्रद्धा सहित भक्ति से एकादशी का व्रत करें, ब्राह्मणें को यथा शक्ति दक्षिणा देकर फलाहार का भोग लगावे, गौमाता को भी मधुर फलों से प्रसन्न करें, रात्रि को जागरण कर विष्णु भगवान का पूजन करें। ऐसी शिक्षा देकर नारद जी अन्तर्ध्यान हो गये।

राजा ने इन्द्रा एकादशी का व्रत परिवार सहित किया। फल उसका ब्राह्मणों के सामने पिता को प्रदान किया। उस समय आकाश से पुष्पों की वर्षा हुई, ऊपर दृष्टि की तो राजकुमार का पिता पुष्पक विमान पर चढ़कर देवलोक को जा रहा था। फलाहार - इस दिन शालिग्राम भगवान का पूजन करें।

पापांकुशा एकादशी व्रत

(पापों पर अंकुश लगाने के लिए)

माहात्म्य

पापाकुंशा एकादशी का व्रत आश्विन माह के शुक्ल पक्ष की एकादशी के दिन किया जाता है। पापाकुंशा एकादशी व्रत के दिन मनोवांछित फल कि प्राप्ति के लिये श्री विष्णु भगवान कि पूजा की जाती है। एकादशी व्रत के पूजने से व्यक्ति को स्वर्ग लोक की प्राप्ति होती है। भगवान विष्णु का भक्ति भाव से पूजन आदि करके भोग लगाया जाता है।

पापाकुंशा एकादशी व्रत हजार अश्वमेघ और सौ सूर्ययज्ञ करने के समान फल प्रदान करने वाली होती है। इस एकादशी व्रत के समान अन्य कोई व्रत नहीं है। इसके अतिरिक्त जो व्यक्ति इस एकादशी व्रत की रात्रि में जागरण करता है। वह स्वर्ग का भागी बनता है। इस एकादशी व्रत के दिन दान करने से शुभ फलों की प्राप्ति होती है। श्रद्धालु भक्तों के लिए एकादशी व्रत के दिन व्रत करना, प्रभु भक्ति के मार्ग में प्रगति करने का माध्यम बनता है।

इस दिन भगवान विष्णु की पूजा की जाती है। पापांकुशा एकादशी व्रत में यथासंभव दान व दक्षिणा देनी चाहिए। पूर्ण श्रद्धा के साथ यह व्रत करने से समस्त पापों से छुटकारा प्राप्त होता है। शास्त्रों में एकादशी व्रत के दिन की महत्ता को पूर्ण रुप से प्रतिपादित किया गया है। इस दिन उपवास रखने से पुण्य फलों की प्राप्ति होती है। जो लोग पूर्ण रूप से उपवास नहीं कर सकते। उनके लिए मध्याह्न या संध्या काल में एक समय भोजन करके एकादशी का व्रत करने की बात कही गई है। एकादशी व्रत जीवों के परम लक्ष्य, भगवद भक्ति, को प्राप्त करने में सहायक होती है। यह दिन प्रभु की पूर्ण श्रद्धा से सेवा करने के लिए अति शुभकारी एवं फलदायक माना गया है। इस दिन व्यक्ति इच्छाओं से मुक्त हो कर यदि शुद्ध मन से भगवान की भक्तिमयी सेवा करता है तो वह अवश्य ही प्रभु का कृपापात्र बनता है।

पूजन विधि-विधान

एकादशी व्रत में श्री विष्णु जी का पूजन करने के लिए धूप, दीप, नारियल और पुष्प का प्रयोग किया जाता है। एकादशी तिथि के दिन सुबह उठकर नित्य कर्मों, स्नानादि से निवृत्त होकर भगवान विष्णु की मूर्ति को स्थापित कर व्रत का संकल्प लेना चाहिए। संकल्प लेने के बाद घट स्थापना की जाती है और विधिवत् पूर्ण श्रद्धा, भक्ति भाव से पूजन किया जाता है और भोग लगाएं जाते हैं और भक्तों में सामर्थ्य अनुसार ब्राह्मण को तिल, भूमि, अन्न, जूता, वस्त्र, छाता आदि का दान भोजन कराकर दक्षिणा सहित देना चाहिए। भगवान के निकट भजन कीर्तन कर रात्रि जागरण करना चाहिए। इस व्रत को करने वाले को विष्णु के सहस्त्रनाम का पाठ करना चाहिए। उपवास के दौरान अन्न का सेवन नहीं करना चाहिए।

व्रत कथा

पापांकुशा एकादशी व्रत की कथा अनुसार विन्ध्यपर्वत पर महा क्रूर और अत्यधिक क्रोधन नामक एक बहेलिया रहता था। जीवन के अंतिम समय पर यमराज ने उसे अपने दरबार में लाने की आज्ञा दी। दूतों ने यह बात उसे समय से पूर्व ही बता दी। मृत्युभय से डरकर वह अंगिरा ऋषि के आश्रम में गया और यमलोक में जाना न पडे इसकी विनती करने लगा। अंगिरा ऋषि उसे आश्विन मास कि शुक्ल पक्ष कि एकादशी व्रत के दिन श्री विष्णु जी का पूजन करने की सलाह देते हैं। इस एकादशी व्रत का पूजन और व्रत करने से वह अपने सभी पापों से मुक्त होकर विष्णु लोक को गया।

❏❏❏

रमा एकादशी व्रत

(स्त्रियों का व्रत : पाप निवारण और सौभाग्य प्राप्ति के लिए)

माहात्म्य

इस एकादशी व्रत के प्रभाव से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं, यहां तक कि ब्रह्महत्या जैसे महापाप भी दूर होते हैं। सौभाग्यवती स्त्रियों के लिए यह व्रत सुख और सौभाग्यप्रद माना गया है। व्रती को ईश्वर के चरणों में स्थान मिलता है। एकादशी व्रत के सुनने मात्र से वाजपेय यज्ञ का फल मिलता है। जो फल सूर्य व चंद्र ग्रहण पर कुरुक्षेत्र और काशी में स्नान करने से, दान करने से वह भगवान विष्णु के पूजन से मिलता है।

संसाररुपी भंवर में फंसे मनुष्यों के लिए इस एकादशी का व्रत और भगवान विष्णु का पूजन अत्यंत आवश्यक है। स्वयं भगवान ने यही कहा है कि रमा व्रत से जीव कुयोनि को प्राप्त नहीं होता। एकादशी व्रत के दिन भक्तिपूर्वक तुलसी दल भगवान विष्णु को अर्पण करने से इस संसार के समस्त पापों से निजात मिलती है। रमा एकादशी का व्रत करने से ब्रह्माहत्या आदि के पाप नष्ट होते हैं।

पूजन विधि-विधान

यह व्रत कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी को रखा जाता है। इस दिन उपवास रखकर प्रातःकाल के नित्य कर्म स्नानादि से निवृत्त होकर भगवान् श्रीकृष्ण की विधि-विधानानुसार पूजा व आरती करें। नैवेद्य चढ़ाकर प्रसाद का वितरण भक्तों में करें। प्रसाद में माखन और मिश्री का उपयोग करें। दिन में एक बार फलाहार करें। अन्न का सेवन न करें।

व्रत कथा

इस व्रत की कथा का उल्लेख श्रीपद्म पुराण में इस प्रकार हुआ है - प्राचीन समय में मुचुकुन्द नाम का एक राजा था। जिसकी मित्रता देवराज इन्द्र, यम, वरुण, कुबेर एवं विभीषण के साथ थी। वह बड़ा धार्मिक प्रवृत्ति वाला एव सत्यप्रतिज्ञ था। उसके राज्य में सभी सुखी थे। उसकी चंद्रभागा नाम की एक पुत्री थी, जिसका विवाह राजा मुचुकुन्द ने राजा चन्द्रसेन के पुत्र शोभन के साथ कर दिया था।

एक दिन शोभन अपने श्वसुर के घर आया तो संयोगवश उस दिन एकादशी व्रत थी। शोभन ने एकादशी व्रत को इस व्रत को करने का निश्चय किया। चंद्रभागा को यह चिंता हुई कि उसका अति दुर्बल पति भूख को कैसे सहन करेगा ? इस विषय में उसके पिता के आदेश बहुत सख्त थे। राज्य में सभी एकादशी का व्रत रखते थे और कोई अन्न का सेवन नहीं करता था।

शोभन ने अपनी पत्नी से कोई ऐसा उपाय जानना चाहा जिससे उसका व्रत भी पूर्ण हो जाए और उसे कोई कष्ट भी न हो। लेकिन चंद्रभागा उसे ऐसा कोई उपाय न सुझा सकी। निरुपाय होकर शोभन ने स्वयं को भाग्य के भरोसे छोड़कर व्रत रख लिया। लेकिन वह भूख, प्यास सहन न कर सका और उसकी मृत्यु हो गई। इससे चन्द्रभागा बहुत दुखी हुई। पिता के विरोध के कारण वह सती नहीं हुई। उधर शोभन ने रमा एकादशी व्रत के प्रभाव से मंदराचल पर्वत के शिखर पर एक उत्तम देवनगर प्राप्त किया।

वहां ऐश्वर्य के समस्त साधन उपलब्ध थे। गंधर्वगण उसकी स्तुति करते थे और अप्सराएं उसकी सेवा में लगी रहती थीं। एक दिन जब राजा मुचुकुन्द मंदराचल पर्वत पर आया तो उसने अपन दामाद का वैभव देखा। वापस अपनी नगरी आकर उसने चन्द्रभागा को पूरा हाल सुनाया तो वह अत्यंत प्रसन्न हुई। वह अपने पति के पास चली गई और अपनी भक्ति और रमा एकादशी व्रत के प्रभाव से शोभन के साथ सुखपूर्वक रहने लगी।

❏❏❏

देवोत्थानी एकादशी व्रत

(मांगलिक कार्यों की पूर्णता एवं वीर पुत्रों की प्राप्ति के लिए)

माहात्म्य

इस एक व्रत के करने से व्रती को सहस्रों अश्वमेध और सैकड़ों राजसूर्य यज्ञों का फल प्राप्त हो जाता है। व्रत के प्रभाव से उसे वीर, पराक्रमी और यशस्वी पुत्र की प्राप्ति होती है। यह व्रत पापनाशक, पुण्यवर्धक तथा ज्ञानियों को मुक्तिदायक सिद्ध होता है। इस दिन अनुष्ठान से भगवान् को संतुष्ट करने वाला मनुष्य समस्त दिशाओं को अपने पुण्य तेज से प्रकाशमान करता हुआ अंत में विष्णुधाम को प्राप्त करता है। यह भी विश्वास किया जाता है कि इस व्रत को करने वाले व्रती के घर में समस्त तीर्थ आकर निवास करते हैं।

पूजन विधि-विधान

यह व्रत कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी को रखा जाता है। इस व्रत को प्रबोधिनी एकादशी व्रत एवं हरिशयनी एकादशी भी कहते हैं। इस दिन स्नानादि नित्य कर्मों से निवृत्त होकर आंगन में चौक पूर कर भगवान् विष्णु के चरणों को कलात्मक रूप से अंकित किया जाता है। धूप की तेज किरणों से बचाने के लिए उनके चरणों को ढक दें। फिर भगवान् विष्णु का पूजन षोडशोपचार विधि से फूलों, चंदन, केसर, अगरबत्ती, कपूर, फल आदि से करें तथा पुरुष सूक्त का पाठ विधि पूर्वक बहुत से फलों का भोग लगाकर भक्तों में बांट दें।

शंख में जल भरकर भगवान् विष्णु को अर्घ्य दान करें। त्तपश्चात् व्रत की कथा सुनें। इस दिन अन्न का सेवन न कर केवल फलाहार करके उपवास करें। इस दिन कहीं-कहीं ऐसा भी देखने में आता है कि व्रती गन्ने के खेत में जाकर सिंदूर, अक्षत आदि से उसकी पूजा करता है और फिर इसी दिन से प्रथम बार गन्ना काटकर चूसना आरंभ किया जाता है।

व्रत कथा

एक राजा के राज्य में सभी प्रजाजन एकादशी का व्रत रखते थे। सभी व्रत के दिन फलाहार करते थे। राज्य में इस व्रत के दिन कोई भी व्यापारी अन्न नहीं बेचता था। राजा की परीक्षा लेने की नीयत से एक बार भगवान् ने एक सुंदर स्त्री का रूप धारण किया और स्त्री-वेश में राज-मार्ग के किनारे जाकर बैठ गए।

जब राजा उधर से गुजरा तो उसने उस अति सुंदरी को उदास भाव में राज मार्ग के किनारे बैठे देखा। राजा को पहली ही नजर में उस स्त्री का रूप भा गया। उसने उस स्त्री के साथ विवाह करने की इच्छा प्रकट की। इस पर सुंदरी ने अपनी शर्त रखी- मुझे तुम्हारा प्रस्ताव इस शर्त पर मंजूर है कि राज्य का संपूर्ण अधिकार मुझे प्राप्त हो और जो भोजन मैं तुम्हारे लिए बनाऊं, उसे तुम्हें खाना होगा।

एक बार एकादशी व्रत के दिन राजा सिर्फ फलाकार खाने लगा, इस पर रानी ने अपनी शर्त याद दिलाई। यह सुनकर राजा ने अपनी बात का मान रखते हुए रानी की बात को मानना स्वीकार किया और रानी के कहे अनुसार अपने पुत्र का सिर काटने के लिए तैयार हो गया।

इस बीच रानी का रूप त्याग कर भगवान् विष्णु ने प्रकट होकर कहा-राजन! तुम मेरी परीक्षा में सफल रहे, इसलिए कोई वर मांग लो। राजा ने कहा-भगवन्! आपका दिया हुआ सब कुछ तो मेरे पास है। मुझे कुछ नहीं चाहिए। बस, मेरा उद्धार कर दीजिए।

इतना कहना था कि वहां राजा को ले जाने के लिए देवलोक से रथ आ पहुंचा। तब राजा ने राज्य का पूरा भार अपने पुत्र को सौंपा और स्वयं उस विमान में बैठकर देवलोक चला गया।

❑❑❑

उत्पन्ना एकादशी व्रत

(सात्विक भाव जगाने एवं प्राणिमात्र के कल्याण के लिए)

माहात्म्य

इस एकादशी व्रत का माहात्म्य अनेक पुराणों में वर्णित किया गया है। इस दिन के उपवास से सभी एकादशी व्रत का फल प्राप्त होता है। इस दिन दिया गया दान सहस्र गुणित होकर प्राप्त होता है। इस एकादशी व्रत के माहात्म्य को सुनने से सहस्र गोदान का फल प्राप्त होता है। इस दिन परोपकारिणी देवी का जन्म होने के कारण व्रत करके भगवद् भजन कीर्तनादि करने का विशेष माहात्म्य माना गया है। इस व्रत को करने से सभी इच्छाएं पूर्ण होती है।

पूजन विधि-विधान

यह व्रत मार्गशीर्ष (अगहन) मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी को रखा जाता है। व्रती को दशमी के दिन रात्रि में भोजन नहीं करना चाहिए। मतलब यह कि उस दिन केवल एक समय दोपहर में ही भोजन करें। एकादशी व्रत के दिन ब्रह्मबेला में उठकर दैनिक कर्म स्नानादि से निवृत्त होकर भगवान् श्रीकृष्ण का जल, चंदन, धूप, रोली, पुष्प, अक्षत आदि से विधिवत पूजन करना चाहिए। व्रती को दिन भर का उपवास रखकर केवल फलाहार करना चाहिए। इस दिन अन्न का सेवन वर्जित किया गया है। भगवान् को केवल फलों का ही भोग लगाने का विधान है। भोग का प्रसाद भक्तों में बांट दें।

व्रत कथा

सत्युग में मुर नामक एक बलशाली दैत्य हुआ था। उसने युद्ध में समस्त देवताओं को पराजित कर स्वर्ग पर अपना अधिकार कर लिया। सभी देवता घबराकर भगवान विष्णु की शरण में पहुंचे। सब देवताओं के साथ देवेंद्र भगवान् विष्णु के पास पहुंचे और मुर को परास्त करे, इन कष्टों से मुक्ति दिलाने के लिए श्रीहरि से प्रार्थना की। तब उन्होंने अनेक शस्त्रों के साथ स्वर्ग की ओर प्रस्थान किया और वहां महाबली मुर को युद्ध के लिए ललकारा। तब वह दैत्य भी अपनी सेना लेकर मुकाबले के लिए आ पहुंचा। घमासान युद्ध हुआ।

दैत्य युद्ध भूमि में हारने लगे। इस पर विष्णु जी ने एक रूपवती कन्या का रूपधारण किया, जिसे देखकर मुर उस पर मोहित हो गया। युद्ध विद्या में कुशल उस कन्या ने मुर को युद्ध के लिए ललकारा और उसके साथ युद्ध करके उसे मार डाला।

जब भगवान् विष्णु की निद्रा भंग हुई तो उन्हें दैत्य की मृत्यु से बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने सोचा कि इस भूतल पर मेरे समान न कोई देव है और न कोई गंधर्व, जिसने मेरे इस भंयकर शत्रु को मार डाला। इस पर दिव्य शरीर धारिणी उस कन्या ने कहा- भगवन्! यदि वर ही देने हैं तो मुझे ये वर दीजिए -

पहला यह कि मैं तीनों लोकों में, मन्वंतरों में, युगों में सदा ही आपकी प्रिया बनी रहूं। दूसरा यह कि मैं सभी विघ्नों और पापों को नाश करने वाली, सब तिथियों में प्रधान तिथि एवं आयु और बल को बढ़ाने वाली रहूं। तीसरा वर यह कि जो लोग मेरे व्रत को भक्तिपूर्वक करें और उपवास करें तो उन्हें सब प्रकार की सिद्धियां प्राप्त हों।

यह सुनकर विष्णु बोले-हे कल्याणी! जो वर तुमने मांगे हैं, वे सभी सत्य होंगे। जो भक्त तुम्हारे और मेरे निमित्त सच्चे मन और भक्ति भाव से उपवास रखेंगे, वे चारों युगों में प्रसिद्ध होकर विष्णुलोक पहुंचेंगे। इसके अतिरिक्त तुम समस्त तिथियों में उत्तम मानी जाओगी। यह सुनकर वह एकादशी व्रत कन्या बहुत प्रसन्न हुई और मुदित मन से वहां से चली गई। तभी से इस व्रत को मनाने की परिपाटी चली आ रही है। जो मनुष्य इस व्रत की कथा को भक्ति भाव से दिन या रात में सुनता है, वह कोटि-कुलपर्यन्त विष्णु लोक में निवास करता है।

❐❐❐

मोक्षदा एकादशी व्रत

(पाप शमन एवं भगवत्भक्ति हेतु)

माहात्म्य

यह व्रत मार्गशीर्ष (अगहन) मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी को रखा जाता है। मोक्षदा एकादशी व्रत के दिन गीता जयंती भी मनाई जाती है। उल्लेखनीय है कि कुरुक्षेत्र के युद्ध स्थल पर कर्म से विमुख हुए अर्जुन को भगवान श्रीकृष्ण ने गीता का उपदेश दिया था। ऐसा कहते हैं कि जिस प्रकार अर्जुन का मोहक्षय हुआ था, उसी प्रकार इस एकादशी का व्रत करने से सभी श्रद्धालुओं के लोभ, मोह, मत्सर व समस्त पापों का क्षय हो जाता है तथा व्रती को इच्छा अनुकूल फल प्राप्त होते हैं। इसलिए यह मोक्षदा एकादशी व्रत कहलाती है।

पूजन विधि-विधान

इस दिन स्नानादि नित्य कर्मों से निवृत्त होकर भगवान् दामोदर का गंध, धूप, दीप आदि षोडशोपचार, तुलसी की मंजरियों से मांगलिक गायन, वाद्यों से पूजन व आरती करनी चाहिए। इसी दिन भगवान् श्रीकृष्ण तथा श्रीमदभगवद्गीता का भी पूजन व आरती करके पाठ करने का विधान है। व्रत के दिन फलाहार करें और अन्न का सेवन त्याग दें। मिथ्या भाषण, चुगली, दुष्कर्मों का परित्याग करें। ब्राह्मणों को भोजन व दान-दक्षिणा अवश्य दें।

व्रत कथा

प्राचीन काल में चंपक नामक एक सुंदर नगर में वैखानस नाम का राजा राज करता था। वह अपनी प्रजा का पालन अपने पुत्रों की तरह करता था। उसकी प्रजा भी उससे बहुत स्नेह रखती थी। उसके राज्य में वेद-वेदांगों को जानने वाले बहुत से ब्राह्मण रहते थे। एक दिन राजा ने स्वप्न में एक विचित्र दृश्य देखा। उसने देखा कि उसके पिता को नरक में घोर यातनाएं दी जा रही हैं और वे बुरी दशा में विलाप कर रहे हैं।

पिता को अधोयोनि में पड़े देखकर उसने यह वृतांत बाह्मणों को सुनाया और जानना चाहा कि दान, तप या व्रत, जिस किसी भी रीति से मेरे पिता को नरक से मुक्ति मिले, मेरे पूर्वजों का कल्याण हो, वैसी विधि बताएं। राजा के दुखित वृत्तांत को सुनकर वेदों के ज्ञाता एक ब्राह्मण ने कहा- राजन! अपने पिता के उद्धार के लिए आप पर्वत मुनि के आश्रम में चले जाइए, जो यहां से थोड़ी ही दूर स्थित है। राजा ने मुनिशार्दूल पर्वत मुनि के आश्रम में जाकर सादर प्रणाम किया। वे मुनि ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद के ज्ञाता दूसरे ब्रह्म की तरह शोभायमान हो रहे थे।

जब राजा ने स्वप्न का सारा वृतांत उन्हें बताया तो भूत, भविष्य और वर्तमान का चिंतन कर देखने वाले मुनि ने राजा को बताया- हे राजन! मैं तुम्हारे पिता के बुरे कर्मों के पापों को जानता हूँ। पहले जन्म में तुम्हारे पिता ने दो पत्नियों में से कामवशीभूत होकर एक का ऋतुभंग किया था। उस कर्म से वह निरंतर नरक में दुख भोग रहे हैं।

राजा ने पुनः पूछा- मुनिवर किस दान या व्रत को करने से मेरे पिता पापयुक्त नरक से छूट कर मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं, कृपया यह उपाय बताएं। इस पर मुनिराज बोले-तुम यदि उनके लिए मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी का मोक्षदा व्रत करके उसका पुण्य उन्हें दान कर दो, तो उसके प्रभाव से उनको मोक्ष मिल जाएगा। मुनि की सलाह से राजा ने इस एकादशी व्रत के दिन विधिपूर्वक व्रत किया और उससे अर्जित सारे पुण्य अपने पिता को दिए तो स्वर्ग से फूलों की वर्षा हुई और वैखानस का पिता अपने पत्र को ढेरों आशीर्वाद देते हुए देवलोक चला गया। तभी से यह मान्यता है कि जो भी मोक्षदा एकादशी का व्रत करता है, वह अपने कुटुंब सहित समस्त सांसारिक सुखों का उपभोग करता हुआ अंत में मोक्ष को प्राप्त करता है और प्रभु की सेवा का अधिकारी बनता है।

सफला एकादशी व्रत

(कार्यों की पूर्णता एवं मनोरथ सिद्धि के लिए)

माहात्म्य

सफला एकादशी का व्रत करने से व्रती के सारे मनोरथ सफल होते हैं, इसलिए इसे सफला एकादशी व्रत कहते हैं। इसकी गणना समस्त एकादशी व्रतों में शीर्षस्थान पर की गई है। जिस प्रकार नागों में शेषनाग, पक्षियों में गरुड़, यज्ञों में अश्वमेध, नदियों में जाह्नवी (गंगा), देवों में विष्णु और मनुष्यों में श्रेष्ठ ब्राह्मण है, ठीक उसी प्रकार व्रतों में सफला एकादशी का व्रत श्रेष्ठ है।

जो व्यक्ति इस एकादशी का व्रत या जागरण करता है, वह इस लोक में यश पाकर अंत में मोक्ष प्राप्त करता है। पांच हजार वर्ष तक तप करने से जो फल प्राप्त होता है, वह इस एक सफला व्रत के जागरण से ही प्राप्त हो जाता है।

पूजन विधि-विधान

यह व्रत पौष मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी को रखा जाता है। यह व्रत स्मार्त (गृहस्थ) तथा वैष्णव दोनों के लिए है। सामान्यतया इस एकादशी व्रत के अधिष्ठाता देव भगवान नारायणजी की पूजा का विधान है। एकादशी व्रत के दिन समस्त नित्य कर्मों स्नानादि से निवृत्त होकर पूजा की सामग्री अगरबत्ती, नारियल, लौंग, अनार, आंवला, सुपारी, नींबू, आम तथा ऋतु फलों से श्रीनारायण का धूप-दीपादि षोडशोपचार से विधिवत पूजन करें। आरती उतारें और भोग में आम आदि ऋतु के फल विशेष तौर पर चढ़ाएं। भोग का प्रसाद भक्तों में बांट दें। ब्राह्मणों, गरीबों को भोजन कराके यथाशक्ति दान करें। दीप दान अवश्य करें और रात्रि जागरण कर प्रभु के भजन, कीर्तन में ध्यान लगाएं। व्रत में तिल और गुड़ फलाहार का सेवन करें। अन्न के सेवन से परहेज करें।

व्रत कथा

प्राचीन समय में महिष्मत नामक एक राजा चंपावती नाम की प्रसिद्ध नगरी में राज करता था। यद्यपि वह बड़ा ही दयालु तथा धार्मिक प्रवृत्ति का था, लेकिन उसके पांच पुत्रों में सबसे बड़ा लुंपक नामक पुत्र बहुत पापी और दुराचारी था। वह हमेशा मदिरापान, चोरी करना, परस्त्री गमन, झूठ बोलना जैसे बुरे कामों में लिप्त रहता था।

इन दुर्गुणों के कारण वह शीघ्र ही पिता की बहुत-सी संपत्ति नष्ट कर बैठा। ब्राह्मणों, देवताओं की निंदा करना, कुसंग में लिप्त रहना उसका मुख्य काम था। समझाने का जब उस पर कोई असर न हुआ तो राजा ने परेशान होकर उसे अपने राज्य से बाहर निकाल दिया। लुंपक ने निर्जन वन में जाकर एक पीपल के वृक्ष के नीचे झोपड़ी बनाकर रहना शुरू कर दिया।

ईश्वर की कृपा से उसने अपने दुष्कर्मों को छोड़ने का मन बना लिया। इसके लिए वह भगवान से प्रार्थना करने लगा - हे ईश्वर! मैं आपसे प्रतिज्ञा कि सारे दुष्कर्म छोडकर, सत्कर्म करूंगा और धर्म का अनुसरण करूगा। उसकी प्रार्थना सुन भगवान प्रसन्न हुए और उसे एकादशी व्रत करने के लिए कहा।

व्रत के प्रभाव से उसके सारे पाप नष्ट हो गए। उसी पुण्य से सूर्योदय के समय एक दिव्य घोड़ा आ पहुंचा और आकाशवाणी हुई कि- हे राजकुमार! सफला एकादशी व्रत के प्रभाव से भगवान् वासुदेव प्रसन्न हुए हैं, इसलिए तुम्हें राजयोग की पुनः प्राप्ति होगी। ऐसा सुनकर वह घोड़े पर सवार होकर अपने पिता के राज्य में पहुंचा। पिता ने प्रसन्न होकर राज्य की बागडोर उसे सौंप दी। भगवान् कृष्ण की कृपा से उसके सुंदर स्त्री, पुत्र भी थे। वृद्धावस्था के अंत में वह मृत्यु को प्राप्त हो विष्णुलोक में पहुंचा और वहां के सुख भोगने लगा।

❑❑❑

परमा एकादशी व्रत

(पितरों की शांति एवं जन्म-मरण से मुक्तिके लिए)

माहात्म्य

चौरासी लाख योनियों में भटकते-भटकते पूर्व के पुण्यों से बड़ी कठिनाई के साथ मनुष्य शरीर मिलता है। अतः प्रयत्न पूर्वक परमा एकादशी व्रत का पवित्र व्रत करना चाहिए। जिसने यह व्रत कर लिया तो समझो कि उसने सब पुण्यादि तीर्थ, गंगादि दिव्य नदियों में स्नान कर लिए। गो आदि का दान भी उसने कर दिए, गया में श्राद्ध करके अपने पितृगण की तृप्ति भी अच्छी तरह से कर ली।

इस एकादशी का व्रत रखकर उपवास करने से मनुष्य धन-धान्य से संपन्न होता है और व्रती के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। इस दिन विष्णु पुराण का पाठ करने से समस्त मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।

पूजन विधि-विधान

इस व्रत को अधिक मास में करने का विधान है। अधिक मास को अधिमास, मलमास एवं पुरुषोत्तम मास भी कहा जाता है। इस मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी को यह व्रत रखा जाता है। व्रती को प्रातःकाल उठकर स्नानादि से निवृत्त होकर स्वच्छ वस्त्र धारण करने चाहिए। इस दिन के व्रत में भगवान विष्णु की पूजा का विधान है। अतः उनकी प्रतिमा को स्नान कराकर, जल, धूप, दीप, नैवेद्य आदि से भगवान शंकर के साथ विधि-विधानानुसार पूजन करके आरती करें। विष्णु सहस्रनाम, विष्णु पुराण का पाठ करें और व्रत की कथा सुनें। व्रत के दिन फलाहार करें। अन्न का सेवन न करें।

व्रत कथा

प्राचीन काल में कांपिल्य नामक नगर में सुमेधा नाम का एक धर्मात्मा ब्राह्मण रहता था। उसकी पत्नी पवित्रा बडी धर्म परायणा व पतिव्रता थी। सुमेधा के किसी दुष्कर्म के कारण वे धन-धान्य से हीन होकर निर्धन हो गए। भीख मांगने पर भी उदर पूर्ति हेतु पर्याप्त धन नहीं मिल पाता था। फिर भी पवित्रा अपने पति की प्रेम पूर्वक सेवा करती रहती थी। वह स्वयं भूखी रहकर भी अतिथि को प्रसन्नता पूर्वक भोजन कराती थी।

एक दिन सुमेधा ने अपनी पत्नी से कहा कि मुझे धन कमाने के लिए विदेश जाने की इच्छा हो रही है। यह सुन उसकी पत्नी की आंखों में आंसू भर आए। उसने कहा-पतिदेव! आदमी को सुख तो उसके सौभाग्य से ही मिलता है। यदि पूर्व जन्म में हमने कुछ दान-पुण्य किए होते तो इस जन्म में हमें सुख मिलता। भाग्य में दुख लिखा है तो हम दोनों मिलकर खुशी-खुशी उसे सहन कर लेंगे।

स्त्री पति बिना नहीं रह सकती, इसलिए आप परदेस न जाकर यहीं पर रहें। पत्नी की बात मानकर सुमेधा ने अपना विचार त्याग दिया। इस बीच मुनि कौण्डिन्य घूमते-फिरते वहां आ पहुंचे। ऋषि के कुशल क्षेम पूछने पर सुमेधा ने अपनी गरीबी और दुखों से छुटकारा पाने का उपाय पूछा।

ऋषि ने कहा-तुम्हें पुरुषोत्तम मास के कृष्ण पक्ष की परमा एकादशी का व्रत विधि पूर्वक करना चाहिए। फिर उन्होंने ऋषि से व्रत की विधि पूछकर इस व्रत को पूर्ण श्रद्धा भाव से विधि-विधानानुसार किया। व्रत के प्रभाव से उन्हें राजमहल से अपने समीप आता एक राजा दिखाई दिया।

उस राजा ने विधाता की प्रेरणा से बिना मांगे ही सुमेधा को नानाविध सुंदर भोग्य पदार्थों से पूर्ण एक नया मकान दिया और जीवन निर्वाह के लिए एक गांव भी दान में दे दिया। सुमेधा अपनी पत्नी पवित्रा के साथ इस लोक में सुख पूर्वक अनेक प्रकार के भोगों को भोगते हुए अंत में मोक्ष को प्राप्त हो गया।

❑❑❑

पदमिनी एकादशी व्रत

(समस्त पापों के नाश के लिए)

माहात्म्य

शास्त्रों में लिखा है कि इस एकादशी का व्रत करने का माहात्म्य स्वयं चतुरानन ब्रह्माजी भी नहीं कह सकते, क्योंकि इस व्रत से बढ़कर पवित्र न कोई पुण्यानुष्ठान है, न यज्ञ है और न ही तप है। यह महान् पुण्य को बढ़ाने तथा पापों को नष्ट करने वाली एकादशी व्रत है।

इसके करने से जन्म-जन्मांतर के पाप नष्ट हो जाते हैं। इसका उपवास करने से मनुष्य की शत्रुओं पर विजय प्राप्त होती है तथा भय से मुक्ति मिलती है। इसके प्रभाव से व्रती मनुष्य इस लोक में सुख-सौभाग्य प्राप्त करता है, उसके सारे मनोरथ पूर्ण होते हैं और वह धन-धान्य से परिपूर्ण हो जाता है। इस दिन विधि पूर्वक उपवास धारण करने से पद्मनाभ भगवान् के धाम की प्राप्ति होती है।

पूजन विधि-विधान

यह व्रत मलमास के शुक्ल पक्ष की एकादशी को रखा जाता है। व्रती को दशमी के दिन केवल चावल और जौ का हल्का आहार ही सेवन करके भूमि पर शयन करना चाहिए। ब्रह्मचर्य का पालन करें। फिर एकादशी व्रत के दिन प्रातःकाल उठकर प्रसन्नतापूर्वक नित्य कर्मो को निपटाएं, त्तपश्चात आंवले के चूर्ण को जल में मिलाकर स्नान करें।

देव, पितृजनों का तर्पण कर भगवान् लक्ष्मीपति का पूजन करें। धूप, दीप, नैवेद्य, पंचामृत आदि से षोडशोपचार विधि-विधानानुसार शिव-पार्वती और राधा-कृष्ण की प्रतिमाओं का भी पूजन करें। फिर आरती करके भोग लगाएं और प्रसाद को भक्तों में बांट दें। रात्रि जागरण के लिए भगवान् के सम्मुख नाच व गान का आयोजन करें। व्रत के उपवास में फलाहार करें और अन्न का सेवन न करें। व्रत के दिन झूठ न बोलें, गुरु की निंदा न करें, क्रोध, छल, कपट त्याग दें और रजस्वला स्त्री का स्पर्श न करें।

व्रत कथा

बहुत समय पहले त्रेतायुग में कीर्तिवीर्य नामक राजा, महिस्मतीपूरी में राज्य किया करता था। उसकी 1000 पत्नियां थीं लेकिन किसी भी स्त्री से उसे पुत्र नहीं था जो कि उसके राज्य को संभाल सके। उसने देवताओं से प्रार्थना की, पितरों से आशीर्वाद मांगा और अनेक वैद्यों को दिखाया लेकिन कुछ भी न हो सका। इसके बाद राजा ने कठोर तपस्या करने का निर्णय लिया। उसके साथ उसकी सबसे प्रिय पत्नी, इक्वाक्षु वंश के राजा हरिश्चंद्र की पुत्री रानी पद्मिनी, भी उसके साथ हो ली और दोनों पति-पत्नी राज पाट अपने मंत्रियों को सौंपकर गंधमादन पर्वत पर तपस्या के लिए चले गएँ।

जब राजा को 10 हजार वर्षों तक तपस्या करने के बाद भी पुत्र की प्राप्ति नहीं हुई, तब रानी पद्मिनी से अनुसूया जी ने कहा कि सभी माहों में श्रेष्ठ अधिमास यानी कि मलमास होता है जो 32 मास के बाद आता है। अगर आप इस दिन व्रत करेंगी तो आपकी सभी मनोकामनाएं पूरी होंगी और भगवान आपसे प्रसन्न होंगे।

रानी ने बिल्कुल वैसा ही किया। वे निराहार रहकर व्रत करने लगीं और रात्रि जागरण किया। भगवान विष्णु ने प्रसन्न होकर उन्हें पुत्र रत्न की प्राप्ति का आशीर्वाद दिया। फलस्वरुप कार्तवीर्य नामक पुत्र की प्राप्ति रानी पद्मिनी को हुई जो कि तीनों लोकों में सबसे बलवान था और जिसका कोई भी सानी न था। जो भी रानी पद्मिनी की इस कथा का पाठ करता है और पद्मिनी एकादशी का व्रत करता है उसकी सभी मनोकामनाएं पूरी होती हैं और वह यश और कीर्ति को प्राप्त करता है।

❑❑❑